गुर सिख मीत चलो गुर चाली ॥
(आद् ग्रन्थ साहिब)

पुस्तक-

दसों गुरू और ग्रंथ साहिब का सच्चा उपदेश

अर्थात-

"नवीन सिंह शिक्षा उत्तरार्ध"

जिसमें

श्रीगुरू ग्रन्थ साहिबादि के ५२५ परमाणों द्वारा श्रीगुरू नानक जी से लेकर दसों गुरू और उनकी संप्रदाय को हिन्दू धर्मी सिद्ध किया है, और दसम गुरूजी का सच्चा जीवन चरित्र कि वोह पक्के हिन्दू और हिन्दूधर्मके रक्षक थे, ॥ अन्तमें प्रबल प्रमाणों और नकारे की चोट से गुरु नानक मत में गुरु उदासीन साधू हैं इत्यादि प्रमाणीक लेखों से लिखा है ॥ जिसका उत्तर नवीन सिंह (अकाली) नहीं दे सकेंगे

—०—

लेखक-
गुरू विद्यारत्न पदवी प्राप्त-प० सुखलाल उपदेशक
श्री भारतधर्म महामण्डल वर्तमान उपदेशक
श्रीसनातनधर्म प्रतिनिधी सभा पंजाब
बायलपुर, रोपड़ जिला अंबाला
(पंजाब) निवासी

प्रकाशक-संतराम शर्मा, पुत्र सुखलाल उपदेशक
संख्या १०००] सन १९२६ ई० [मूल्य ॥) आना

पुस्तक

दसो गुरू और ग्रन्थ साहिब का सच्चा उपदेशकी

विषय सुची

दसोंगुरू और ग्रथसाहिबका सच्चा उपदेश

पुस्तकका अशुद्धा शुद्ध पत्रम्

पृष्ठ	पंक्ती	अशुद्ध	शुद्ध
२	१४	धम्मं	धर्म्म
४	१७	भौण आई	भैणभाई
५	१३	वंतौड़	वतौर
६	११	लावे	लांवे
६	२२	पापने	पापनके
७	१२	आजके	आजकलके
७	२६	माण	माप
८	९	लार्या	लामां
८	१२	जराय	जरीये
८	२५	प्रयोग	अयोग
११	१९	महाल्ल	महाल्ला ९
१२	१९	प्रवत्ती	प्रवृत्ती
१३	५	भारो	भाए
१३	१५	ब्रह्मा	ब्रह्मा
१३	१५	वह्ने	ब्रह्मे
१३	२०	दुष्ट	डुब्बा
१३	२१	२३	२६
१४	९	विगड़पा	बिगड़या
१४	९	सम	सभ
१४	११	गड्ग	खड़ग
१५	९	नात	नाम
१५	२३	१३	१२
१६	२	बुध	वध
१६	८	भारू	मारू
१६	१६	माइ	भाइ
१६	१७	तूमी	तूभी
१७	८	तक	तुक
१७	४	प्रकासु	प्रगासु
१७	१५	बवन्न	बावन
१७	२२	साहिबके	गुरूसाहिबने

पृष्ठ	पंक्ती	अशुद्धि	शुद्धि
१८	५	श्रीझंग	श्रीरंग
१८	१०	माल	माला
१८	१३	सारंग ध	सारंगधर
१९	८	पद्राते	पराते
१९	१३	दासा	दास
१९	२३	इच्छ	इच्छा
२०	२४	मकर	मगर
२१	५	इटकिओ	छुटकिओ
२१	२२	१ दुख	१गज(हस्ती)
२१	२२	२ कैद	२ दुख
२१	२२	४ पाप	कष्ट
२१	२२	५	६
२१	२३	६	७
२२	३	पातसाही	पातसाही१०
२२	७	कबिता१	कबिता
२२	८	मगवाना	भगवाना
२२	१०	पत	पता
२२	१३	जयं	जमं
२२	१६	पत	पता
२२	२१	गुरूगोविंद	गुरूहरिगो०
२३	१०	बिदरिया	बिदारिया
२३	१५	शब्द	शब्द २
२४	५	सडै	संडै
२४	१८	वड़ी	बडी
२४	१९	मरण	मरणा
२७	२६	कशिषु	कशिपु
२९	२५	द्वपुर	द्वापुर
२९	२६	नासिकासे	नाससे
३२	४	जोरा	जोप
३२	२२	बिंद्रवन	बिंदावन

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३३	१	खडिया	खड़ियां
३३	२५	वगलो	बावलां
३४	१	महन	सहन
३४	१२	जनकन	जनकसन
३४	२५	वसरी	बंसरी
३५	१	राग राग	राग
३७	३	गरान	गए न
३७	५	होरा	होय
३८	११	करने	करनेकी
४०	४	सीध	सीधे
४०	१३	फरत	फरते
४१	५	मेरा	मेरी
४१	२६	चाकर	चोकर
४२	५	रहाउ	॥१॥ रहाउ
४३	२२	सेल	सेव
४३	२७	२	५
४५	१८	डेपा	ड़ेरा
४५	२५	हरी	हटी
४७	१९	कालेपा	कालेया
४८	७	किरपा	किरपाकरी
४८	१९	बंध्य	बध्या
४८	२२	सोई	ओई
४८	२५	वृत	घृत
४९	५	शब्द तुक	१शब्द४८तु१
४९	७	सुवपनी	सुखमनी
४९	९	लपटना	लपटानों
४९	१४	माई	जाई
५०	१६	नावन	नो नावन
५०	१९	जुग	जुगत
५२	१७	वाम	नाम
५२	२५	गरू१०	गुरू दस
५३	७	वँबलिआं	बावलिआं
५३	१५	हडम्वत	हडम्वै
५३	१५	मगली	सगली
५४	७	होताहै	होता है '
५४	७	वोर	चोर
५४	१९	राग मांझी	राग माझ
५५	११	औना	ओना

पृष्ट	पंक्ती	अशुद्धि	शुद्धि
५५	३	उपदेश संख्या ४ मृतक श्राद्ध औरगुरमतधर्मग्रंथ हेडिंग छूट गया	
५५	१४	पर	घर
५५	१७	ब्राह्मण	ब्राह्मणा
५५	१८	नर्क	नर्क
५६	४	भक्ता	भक्त
५६	१२	दवा	दीवा
५६	१२	उपाह	उपाही
५६	१६	३ से	उ से
५६	१९	अतेसन	अन्तेसत
५६	२१	पंडि	पिंड
५७	११	भ्राती	भ्रांती
५७	९	याय	प्रयाय
५७	११	निवार्णी	निवाणी
५७	२३	समाव	समावन
५७	२४	अक्षर ३ से	अक्षर उसे
५८	१	चौथेपाम	चौथेयांम
५८	९	वेसोगोपाल	केसोगोपाल
५८	१३	धाकी	बाकी
५८	२०	डुलोराम	दुलोराम
५९	१६	पिंड	पिंडन
५९	१७	माझ	माझकी वार
५९	२३	मुय कमे है	मुख्यकर्महै
६१	२४	चल	चाल
६३	२	दशंन	दर्शन
६३	९	श्रेष्ठ	पृष्ट
६३	२६	९१	९
६४	१९	प्रश्न	(प्रश्न)
६४	२१	हप	हर
६४	२१	कार्ये	कार्य
६४	२५	हरगोविंदने	हरगोविंदनू
६४	११	नौ	नौवर्ष
६४	६	गौडी	गौड़ी
६५	१६	सीमै	सोमैं
६५	२१	गिराथे	गिरार्थ
६५	२५	अक्षर ३	अक्षर उ
६६	२६	[illegible]	[illegible]

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६७	८	मेसे अधार	मेराअधार
६७	२३	आदि आद	आदि
६८	५	डसे	उसे
६८	९	कहन	कहने
६८	१६	जसे	उसे
६८	२२	ममापती	समापत्ती
६९	१८	सिखखड़ेदे०	सिखलड़े०
६९	२३	(मिठा	(मिठा)
६९	२४	सतलज	सतलुज
७०	७	अर्त	अतै
७०	१४	सौसाखी	(सौसाखी
७१	७	(४६)	४६)
७१	१४	गिरार्थकोश पृष्ठ२५८से कायम पंक्ति८से२१)	(विखै
७१	२२	भेर	भोर
७१	२३	मुदि	मुहि
७२	१४	सौसाखी	सोसाख
७२	२१	असनू	असानू
७३	३	प्रबख	प्रतख
७३	२४	गुरू १०	गुरूदस
७३	१	गुरमतमें मृतक श्राद्ध सिखोंको दान लेना पाप	
७३	२५	भुखो	रुखे
७४	८	इही	इन्ही
७६	५	सोली	सोस
७७	१८	अकाली	(अकाली)
७७	२६	२	१
७८	१७	लगरे	लंगर
७८	२०	कथागुरू५॥)	कथागुरू५)
७८	२३	फतसाहीद॥)	पातसाहीद)
७९	५	इखपर	इसपर
७९	७	सगसखा	संगसखा
७९	११	राम	रामने
७९	१४	दसम	(दसम
७९	१५	(कबिता	कविता
८१	७	उक्ता	उक्त
८१	१८	(क	(क)
८५	८	(हरि	(२) हरि
८६	२	काह	काज
८६	६	तसे३ तक	तसेड तक
८७	१	गौडी	गौड़ी
८७	३	मारे	मोर
८८	१	खोपो	खोवो
८८	८	चाही	चाहीये
८८	१३	अैसेही	अैसेहो और
८९	१२	सभ	सम
८९	२६	शुम	शुभ
९०	६	देखो	(देखो
९०	१४	वरध	वरुध
९१	२५	कुमार	कुम्हार
९२	९	अपने अपने	अपने
९४	१५	काई	कोई
९५	१३	पता श्री	पता श्रीराग
९६	५	पौड़ी ३९	पौडी ३८
९६	११	कर्मा	कर्मी
९६	२४	चारेखाड़ी	चारेखाणी
९९	७	घम	घर्म
९९	२०	केब्राह्मणनू केब्राह्मणनू	केब्राह्मणनू
९९	२६	कोमत	कीमती
१०१	९	माना	मान
१०३	२	कक्कि	कवि
१०४	२६	यज्ञापवीत	यज्ञोपवीत
१०५	६	अ याये	अध्याये
१०८	२६	धर्मकण	धर्मक्रण
११०	५	डण	दंडण
११०	१५	मवाने	प्रवाने
११०	१९	ठुकडुकी	डुकडुकी
१११	१९	दाई	दई
१११	२०	३	१३
११२	१	आंक	अंके
११२	१	पुण झुण	झुण झुण
११३	५	पुस्मक	पुस्तक
११४	१४	सिखोंका	सिखोंको
११६	६	रहया	हरया
११८	१७	थनी	धनी
१२०	१८	हनसो	हमसो
११३	५	पुस्मक	पुस्तक
११३	१६	नमस करकरे	नमसकार करे

१३७ ८-९ भै भए
१३७ २४ १,अलमस्त १श्रीचंद
१३७ २६ औं औं की
१३७ २६ सीसा साधु
१३८ २ प्रगटै प्रगट
१३८ २ बूझैं बूझै
१३८ ३ रत्न ॥ रत्न ॥ सोधकै संग एक उपरि जतन
१३८ ९ के कै
१३८ २० केवले केवल
१३८ २३ पानै पावै
१३८ २३ से ते
१३८ २४ बरसात्रै बरसावै
१३९ ५ गिस गिद्ध
१३९ ७ हरि हरिका
१३९ ११ संजोग संजोग
१३९ १२ बखानह बख्यानह
१३९ १५ वे,प्रत वे,अंत
१३९ १५ उचतेउची ऊचतेऊची
१३९ १७ प्रमु प्रभु
१३९ १९ प्रौग्जा आग्जा
१३९ २४ भवै भवै
१३९ २६ ८२ ८ (२)
१४० २ पाइ ॥ पाइ ॥ जो
१४० ११ व्योग बिजोग
१४० १३ नमित नहीं मित
१४० १८ भावैत भावैं तो
१४० २४ अपान अपने
१४० २५ निकालनवाल नि-कालने वाला
१४० २६ पिताका पिताको
१४१ ३ इधन ईंधन
१४१ ५ खेतमहि खेतमाहि
१४१ १० जाईऔ जीवाइऔ
४११ ११ आस आसा
१४१ ११ निरास निरासा
१४१ १२ त्रिष्टैं त्रिष्टै
१४१ १८ तिसनू आपन तिसनू अपना
१४१ १९ सोइ सेइ
१४२ ८ था थी

१४३ ५ गुरू दिता गुरूदिता
१४३ ८ तेग वहादर तेगबहादर
१४३ १७ कोपियो कोपियं
१४३ २१ कृपाल कृपलं
१४३ २५ करूर करूरं
१४४ १ पापरोप्यं पावरोप्यं
१४४ ८ १० ११
१४४ १० अध्याये १० अध्याये ११
१४४ १२ अ० १० अ० ११
१४४ १३ अ० १० अ० ११
१४४ १८ लिखीक)लिखी का
१४४ २१ लेला चेला
१४४ २५ १भारीशब्द १बड़ी आवाजकाबाजा
१४५ ६ शिस शिष्य
१४५ ८ बखलीसा बखलीसां
१४५ ११ प्रीथी पिरथी
१४६ १२ गैहर भं गैहर गंभीरीगे गीरिये
१४६ २१ आखीमें आखीरमें
१४७ २० सथान स्थान
१४७ २१ बनत वनते
१४८ १ रचियता रचयिता
१४८ २ पंजाबी पंजाब
१४८ ३ वष वर्ष
१४८ २० प० अन्दविहारी प० आनन्द विहारी
१४८ २१ रिपोट रिपोर्ट
१४९ २४ कना कहना
१५० १ व्यावहार व्यवहार
१५० ११ पर्सपर परस्पर
२ ३ लहौर, लहौर
२ ४ पंजाब पंजाब,
३२ १५ रोकसानू राकसानू
५१ १३ आराकुलखेत आप-कुल खेत
८४ ४ वैसो वैसे
१०१ २५ मीन मोत
१०२ १२ दकम दसम
१०८ २४ नथंते मथंते
११० १७ (च) (व)
[illegible] बाहो बाह

समर्पण

श्री १०८ स्वामी प्रकाशानन्द सरस्वतीजी महाराज देश प्रसिद्ध, उपप्रधान श्री सनातनधर्म्म प्रतिनिधी सभा लाहौर, पंजाब विद्या वाचस्पति, व्याख्यान मार्तण्ड, प्रधान मन्त्री साधू-महामण्डल हरिद्वारजीकी सेवामें तुच्छ भेंट सादर समर्पित है ॥

"दास"

"गुरू विद्यारत्न पदवीप्राप्त"

पं० सुखलाल उपदेशक,

रोपड़ जिला अम्बाला निवासी।

भूमिका

प्यारे मित्रो ! सनातन धर्म्मी हिन्दू वेद, शास्त्र, पुराण, देवी देवता, गंगादि तीर्थ राम, कृष्णादि, ईश्वर अवतारको मानते हैं, इसीप्रकार हिन्दूधर्म्मके रक्षक और हिन्दू धर्म्मकी भक्ति (रामनामादि) के प्रचार करने और कराने वाले श्री गुरू नानक देवजीसे लेकर श्रीगुरू दसम तक और दसों गुरूओंका स्वरूप गुरू ग्रन्थ साहिबको प्रेम सहित मानते हैं और यही सच्चे सिख (सैहजधारी और केसाधारी) जानते हैं कि गुरूसाहिबोंनें अपने शीश देकर हिन्दूधर्म्म स्थित रक्खा ॥ यथा—

तिलक जंञूराखा प्रभुताका ।
किना बड़ो कलू महिसाका ॥
साधन हेत इति जिनकरी ।
सीस दिया पर सी न उच्चरी ॥
धर्म्महेत साका जिन किया ।
सीस दीया पर सिरडन दिया ॥

(श्री गुरू दसम ग्रन्थसाहिब श्रीमुख वाक पातसाही१० बचित्र नाटिक ग्रन्थ अध्याय५ कविता अंक १३ और १४)

अर्थात सनातन हिन्दूधर्म्मके सर्ब नियम (ईश्वर, अवतार, मूर्तिपूजा सच्ची भक्ति, तीर्थमहात्म, मृतक श्राद्ध, जन्मसे वर्ण-व्यवस्था और हिन्दू रीतीसे विवाह ब्राह्मणोंको दान महात्म, सिख (सिंहों) को दान लेना पाप, गौ रक्षा, दसों गुरू वेद शास्त्र पुराण के मानने वाले पक्के हिन्दू हैं, यह गुरूमतके धर्म्म ग्रन्थोंके ५२५ परमाणों सार सिद्ध किया है और

गुरु दसमजी का सच्चा जीवन चरित्र और गुरू नानक मतमें गुरु उदासीन साधू हैं ॥

आजकल नवीनसिंह (अकाली) गुरु साहिबों के श्रद्धालू हिन्दूओंको धोखा देनेके लिये "गुरमर्यादा" के नामसे हिन्दू धर्म्मकी कर्म, उपासना, ज्ञानादि साधनोंका खंडन करते हैं हालां कि कर्म उपासना ज्ञानकी आज्ञा गुरू ग्रन्थसाहिबजीमें सपष्ट है ॥ यथा-

फलकारण फूली बनराय । फललागा तो फूल बलाय ॥
ज्ञानह कारण कर्म अभ्यास । ज्ञान भियातो कर्मह नास ॥
(आदि ग्रन्थ साहिब राग भैरों बाणी नाम देव शब्द १ तुक ३)

सच्चे हिन्दू (सिख) सैहजधारी और केसाधारीयों को नवीन सिंह (अकाली) कर्म धर्म्म से भ्रष्ट कर नारकीय बना रहे हैं। उनके बचाव लिये नवीन सिंहों अकालीयों की गुर मर्यादाका फोटू दिखलाता हूँ।

सो प्यारे मित्रो ! श्री गुरू नानक देवजीसे लेकर दसम गुरू तक किसी गुरू साहिबने आज कलके नवीन सिंह (अकालीओं की गुरमर्यादा नहीं की और नाहीं आदि और दसम गुरू ग्रन्थसाहिबजी में नवीनसिंह (अकालीओं) की रीती गुरमर्यादा की बिधी और आज्ञा दरज है ॥

विचार करनेसे आजकलके नवीनसिंह (अकालीओं) की गुरमर्यादा के कर्म चार हैं। नामकर्ण, अंमृतसंस्कार, अनन्द बिवाह, मृतकमर्यादा, सो विचार करनेसे पापदायक नरकका साधन सिद्ध होती है। जिसपर, अन्य मतावलम्बी और आम लोगोंकी सम्मती संग्रह कर प्रगट करता हूँ ॥ यथा-

(१) नाम कर्ण, श्रीगुरू नानक और दसम गुरूजीका नाम ज्योतिषके अनुसार रक्खा जो जन्मसाखी भाईबालेवाली

और गुरविलास पातसाही दससे प्रगट है ॥ आजकल अज्ञानी लोग ग्रन्थसाहिबके पन्ने फोलकर नाम रक्ख देते हैं। बालक के नाम साथ भुजंगी और कंन्याके नाम साथ भुजंगण (सर्प सर्पणी) जो अष्ट पापमय हिंसक नाग है। श्री गुरू दसमजी इस नागको बहुत बुरा वतलाते हैं ॥ यथा—

"जारनके सुत होइ भुजंगी"

(देखो सौसाखी की साखी ८२)

(२) अंमृत संस्कार जिसका असली नाम पौहुल है और नवीन सिंह (अकाली) इस संस्कारसे पिता गुरू गोविंदसिंह जी माता साहिबदेई जात सोढी (खत्री) जन्म पटनेका वासी अनन्दपुर धर्मसे ग्रहण की हुई मानते हैं। जो इस पर आम लोग यह विचार प्रश्नरूप प्रगट करते हैं ॥

(प्रश्न १) अंमृत छक कर जब पिता गुरू गोविंदसिंह जी और माता साहिब देई होगई तब अपने असली माता पिता से कृतघ्न होकर पापी नहीं होते ?

(प्रश्न २) अंमृत छकके गुरू दसम और साहिब देई के पुत्र पुत्री (भौण भाई) हो जाते हैं सो संसारमें सैंकड़ों परिवार अमृतधारी मौजूद हैं जिनमें माता पिता, ताया चाचा, पिता पुत्रादि अंमृत संस्कार से विरुद्ध सम्बंध मौजूद हैं फिर अमृत छकना व्यर्थ नहीं तो और क्या है ॥

(प्रश्न ३) जब छोटा मोटा सरकारी मुकदमा होजाए तब अमृत संस्कार में धर्म्म धारण कीया हुआ पिता गुरू गोविंद सिंह जाती सोढ वंस (खत्री) जन्मस्थान पटना वासी अनंदपुर मिथ्या होकर असली पिता, जाती, जन्मस्थान, रह जाता है येह अमृत संस्कारका धर्म्म त्यागना पाप नहीं ॥

(प्रश्न ४) जो स्त्री पुरुष अमृत छक कर गुरू दसम और

साहिब देईके पुत्र पुत्री (सके बहिन भाई) होकर पापी होते है। जिस पापके बचाव लिये गुरू दशमजी दसम ग्रंथ साहिब में आज्ञा लिखते हैं॥ यथा-

भगनी भरत आन कह संगा॥
भ्रात बैहन तन करत बिहारा।
स्त्री तजी सकल संसारा॥
संकर बर्ण प्रजा सभ होई।

इत्यादि (दसम गुरु ग्रन्थसाहिब श्री मुख वाक पातसाही १० नेह कलंकी अवतारमें)

और इसी आज्ञाके अनुसार श्री अबचल नगरका गुरद्वारा आज्ञा प्रकाशित करता है स्त्रीओंको अंमृत छकाने वाले गुरूके सिख (सिंह) नहीं देखो भाई सरदूलसिंह ज्ञानी अमृतसरनिवासीने बतौड़ चिठ्ठी गुरमतप्रेस लाहौर ३ चैत्र सं० १९६२ वि० को छपवा कर आमलोगोंमें बाँटा" हुकमना अबचला नगर॥

(प्रश्न ५) जो अंमृत पाँच प्यारे छककर गुरू गोबिंदसिंह जीके पुत्र होगए; तो गुरू गोबिन्दसिंहजीने पाँच प्यारोंसे अंमृत छका॥ यथा-

"वाहि वाहि गोविंदसिंह आपे गुर चेला"

वचनके अनुसार गुरूदसजी किन के पुत्र हुए थे और उन को ऐसा कहना और समझना पाप नहीं

(प्रश्न ६) क्या परलोक पधारे (मृत्यु हुए) गुरूदसजी के पुत्र पुत्री अंमृतसे होसक्ते हैं इस नियमको देखकर दूरदेशीय और अन्य मतावलंबी उपहास्य नहीं करेंगे॥

(प्रश्न ७) नवीन सिंहोंने अंमृतसे पाँच ककार (केस १ कंघा २ कर्द ३ कड़ा ४ कछ ५) धार कर एक भेष हिन्दुओं

से पृथक कर लिया। जो श्री गुरु दशमजी पापका साधन बतलाते हैं॥ यथा—

भेखदिखायो जगतको लोगनको वस कीन।
अंतकाल काती कट्यो बास नरक में लीन॥
श्रीगुरु दसम ग्रन्थसाहिब श्री मुखवाक पातसाही १०
बचित्र नाटिक अध्यायसे ६ कविता अंक ५६)

नोट—प्यारे मित्रो उक्त अंमृत संस्कारमें केस कुदरती ककार है बाकी चार बनावटी है (तरखाणसे कंघा, लुहारसे कर्द कड़ा, दरजीसे कछ) सो गुरु ग्रंथ साहिबादिमें कुदरती केसोंकी बाबत यह अज्ञा है

(क) भावे लावे केस कर भावे घररि मुडाइ।
(आदि ग्रंथ साहिब कबीर श्लोक २५ महाला ५)

(ख) केस धरे न मिले हरि प्यारे (दसमग्रन्थ साहिब श्री मुखवाक पातसाही १० अकाल उस्तुति कबता अंक १५२)

(ग) मूत्र डार तिन सीस मुडाए (दसम ग्रन्थ साहिब श्रीमुख वाक पात साही १० बचित्रनाटिक अध्याये १३ कविता अंक १८)

(घ) केस बड़े सिर वेश बुरे अरदेह में रोम बड़े जिनके, मुखसों नर हाड़न चापत हैं॥ पुनह दांतसो दांत बजे तिनके। सर श्रौणत की अखीआं जिनकी संग कौन भिरै बलकै इनकै॥ सरचाप चढ़इकै रैन फिरै सभ काम करे नित पापने।

दशम ग्रन्थ साहिब श्रीमुखवाक पातसाही १० बचित्र नाटिक कृष्णवतार कविता अंक १४ ६३)

(ङ) सूर्य प्रकाशरास १ में श्री गुरु अंगद जी महाराजने अपने सिख सिंहे उपलखत्रीके पुत्रका मुंडन अपनी आज्ञासे कराया॥ यथा—

सिहेकी बेनती, मोहे पुत्रको मुंडन अहै बड़ उत-
साह करयो मम चहि हैं ॥
श्री गुरू अंगद जीकी आज्ञा हमरे आगे मुंडन करो,
उरको भरम सर्व पर हरो ॥
(सूर्य प्रकाश रास १)

(नवीन सिंहोंका प्रश्न) क्या गुरु दशमजीने केस धारण नहीं कीये थे ॥

(उत्तर) गुरू १० जीने केस धारण किये थे जो सौ साखी में लिखे हैं॥ यथा-वरस दिन गुरुजी क्रोधवंत रहे थे केश धारके । (देखो सौसाखीकी ५९) ।

नोट-जब महान आत्मा गुरू १० जी केस धारके वर्ष दिन क्रोधी रहेथे तो आजके कलजुगी सिख (सिंह) केस धारकर जन्मभर क्रोधी रहेंगे । सो क्रोधको ग्रन्थसाहिबमें चंडाल आदि लिखा है ॥

(१) क्रोध मुठी चंडाल । (आदि ग्रन्थ साहिब)

(२) हे कलिमूल क्रोधं । (आदि ग्रन्थसाहिब श्लोक सहस कीरती महान्ला ५ श्लोक ४७)

(३) गुरमर्यादा से अनंद बिवाह संस्कार जो बालक कन्याको अंमृत छकाए बगैर नहीं होसक्ता देखो सरदार कानसिंह नाभा निवासी कृत गुरमत, प्रभाकर और सुधाकर और दित्त सिंह ज्ञानी कृत नकली सिख प्रबोध उक्त पुस्तकोंमें ही लिखा है जो अंमृत छके गुरु दसम जीके पुत्र पुत्री (सके बहिन भाई) होजाते हैं ।

नोट-नवीनसिंह अनंद पर विचारकरें तो महान पापसे बच जाए ॥ यथा ॥ अनंद बाणीमें लिखा है 'अनन्द भिया मेरी माए सतगुर मैं पाइया' यहां मां (माता) शब्द है जिसकी

मासी है स्त्री की मासीमें येइ मां (माता) शब्द का प्रयोग करना महान पाप भगनी से बढ़कर पाप है। और आदि गुरू ग्रन्थ साहिबमें मृत्युको अनंद लिखा है "जिस मरनेसे जग डरे मरे मन आनन्द' और नवीन सिंह (अकालीओं) का भाई श्री मान भाई अवतारसिंह जी वहीरीया रावलपिंडी निवासी अपनी पुस्तक "खालसा सुधार तरू" अठवी संची (पुस्तक) जो गुरुमत प्रेसमें प्रथम बार छपीका पृष्ठ ४४८ से ४५० तक नवीन सिंहोंकी अनंद विवाह मरयादाको जिसमें अनंद पढ़ना, ग्रन्थ साहिबसे फेरे लायां देनी, अरदास पढ़णी; उससे आदि कर्म हैं इनसे पति पत्नी नहीं होते भैण भाई होते हैं यह सिद्ध किया है॥

(४) गुरमत मृतक संस्कार के जरायसिंहलोग दान (पुन्य) लेते हैं जो सिंहों को महान पाप है जिसका निर्णय इस पुस्तकके उपदेश संख्या ५ में विस्तार पूर्वक लिखा है। नवीनसिंहोंके प्रश्न कि मृतकों को श्राद्ध नहीं पहुँचता उनके उत्तरमें तीन प्रार्थना हैं।

(क) जो नवीनसिंह (अकाली) मृतकोंके नमित्त कड़ाह प्रसाद, अरदास, गुरु ग्रन्थसाहिबका पाठ कराते हैं, यह कैसे पौहुँचेंगे"

(ख) दसों गुरूसाहिब परलोक पधारोंको अरदास (प्रार्थना) कैसे पौहुँचेंगी'

(ग) पंजप्यारे मृतक हुओंको कड़ाह प्रसाद कैसे पौहुँचेगा' इस पुस्तक उपदेश संख्या ४ में विस्तारपूर्वक लिखा है"

प्यारे मित्रो, जिला पेशावर मरदानकी सनातनधर्मके सभासदों ने मेरे साथ प्रयोग धर्म्म विरुद्ध व्यवहार (श्रीस्वामी प्रकाशानंद जीके सामने करने के कारण मेरी कोई पुस्तक लिखनेकी इच्छा

नहीं रही थी। श्री १०८ गोस्वामी गणेशदत्त शास्त्री त्याग मूर्तिजी मंत्री श्री सनातन धर्म्म प्रतिनिधी सभा पंजाब ने आज्ञा दी कि एक पुस्तक श्री १०८ भारत भूषण प्रसिद्ध नेता प० मदनमोहन मालवीयजीकी दृष्टीगोचर जरूर करानी है जिस्से येह सिद्ध होजाए दसो गुरू और ग्रन्थ साहिबादि सनातन हिंदू धर्म्मी हैं सो उक्त नेता जी की सेवामें हस्तलिखित पुस्तक समर्पण करदी और वोही पुस्तक छपकर आप प्रेमीओंकी सेवा में अर्पण है प्रेमप्रीतीसे पठन पाठन और श्रवण कीजीये जिस्से मेरा परीश्रम सफल हो ॥ इति भूमिका ॥

वृश्चिकांगत १
सं १९८२ वि०

"हस्ताक्षर"

गुरूविद्यारत्न पदवी प्राप्त
पं० सुखलाल उपदेशक
रोपड़ जिला अम्बाला निवासी

❀ पाठकोंसे आवश्यकीय प्रार्थना ❀

(१) श्रीगुरू आदिग्रन्थ साहिबमें ४८ पुरुषोंकी वाणी है, जिस में बीस बाईस से अधिक ब्राह्मण १० खत्री, २ वैश्य, कुछ शूद्र और ७ मुसलमान। जिनमें गुरू साहिबोंकी वाणी महल्लोंके नामसे है और भक्तोंकी वाणी भक्तबाणीके नामसे है ॥

(२) आदि ग्रन्थ साहिबमें जो वाणी है अथसे इति पर्यन्त गुरूसाहिबोंकी मानी जाती है "गुरु मानियों ग्रंथको" हाला के येह वचन आदि और दसम ग्रंथसाहिबमें नहीं। और आदि ग्रन्थसाहिब में शब्द दोतुके, तीनतुके, चारतुके, आठतुकोंकी अष्टपदी. सोलांतुकों का सोहिला, छंत (छंद) लामा, अलाहणीआं (स्यापा) अनेक प्रकारके शब्द हैं। तुक दोहरे

के अर्ध भाग जितनी होती है श्लोक एक दोहे जितना होता है। पौड़ी चौपाई जितनी होती है और रागोंसे प्रकरण है महल्ले और भक्तोंकी बाणीयां अध्यायोंके सदृश हैं।

(३) दशम ग्रंथसाहिब में, जाप, अकाल उस्तुत, बचित्र-नाटिक, तीन पुस्तक श्री दुर्गाजीकी उस्तुतिके ५५० कवितांक, ज्ञानप्रबोध, चौबीस अवतार महात्म, चारसौ चार तिरीया चरित्र जिनमें ११ चरित्र पुरषोंके हैं, ज़फ़रनामा, इत्यादि समग्र दसम ग्रंथसाहिब श्री मुखवाक पातसाही १० (कृत) है देखो दसम ग्रन्थ साहिबके सुधाईकी रिपोर्ट जो १ कतक संमत १९५४ वि० भाई मन्नासिंह हकीम सकत्र गुरुमत प्रचारक सभा अमृतसरने खालसादीवान अमृतसरजीकी आज्ञानुसार 'दी नीऊ आँगलों गुरमुखी प्रेस अंमृतसर' में छपवाकर धर्मार्थ बांटीमें समग्र दसम ग्रंथसाहिब गुरू दशम कृत सिद्ध किया है ३२ ज्ञानीओंकी सम्मति से

(४) श्री भाई गुरदासजी की वाणी और श्रीभाई मनी-सिंहजीकी वाणी जो सिखोंमें धर्म्मशास्त्रकी सदृश प्रमाणीक है और अैसेही सौसाखी को मानते हैं

(५) गुरुमतमें इतिहास ग्रंथ परम परमाणीक मानेजाते हैं (जन्मसाखी भाई वाले वाली, जन्मसाखी भाई मनीसिंहजी कृत, नानक प्रकाश, गुरविलास छेवीपातसाही, गुरविलास दसवी पातसाही सूर्गप्रकाश, पंथप्रकाश, गुरूग्रिरार्थ कोश, प्रयाय, (डिकशनरी) श्री गुरु आदि ग्रंथसाहिब, और प्रगाइ श्री गुरु दशम ग्रंथसाहिब इत्यादि सिखोंकी परमाणीक पुस्तकोंके ५०० परमाण पूरे पतेसे लिखे हैं जिनसे नवीनसिंह (अकाली) मुनः किर नहीं होसकते ॥

(६) इस पुस्तक में एक परमाण दुवारे तिवारे भी आया है उससे दो तीन विषयोंकी पुष्टी होती है इसको दूषण नहीं भूषण समझना ॥

(७) उक्त १४ पुस्तकोंके ५०० प्रमाण ज्योंके त्यों उदधृत (नकल) कीए गए हैं क्योंकि सिखलोग व्याकरणसे शुद्ध कीहुई ग्रंथसाहिबादि की बाणीको अशुद्ध समझते हैं और जो पुस्तक लेखक का लेख नोटादिसे है सो शुद्ध कर लिखा है ॥ जो अशुद्धी रहगई हो तो पाठकगण स्वयं शोद्धकर पठन पाठन करें॥ कोई अशुद्धि रह गई हो तो हमें सुचित करने पर दुवारे शुद्ध कर दी जाएगी ॥

—हस्ताक्षर

गुरू विद्यारत्न पदवी प्राप्त

पं० सुखलाल उपदेशक,

रोपड़ जिला अम्बाला निवासी ।

मङ्गलाचरण

(१) बलछुटकियो बंधनपरे कछु नहोत उपाइ ।
कहु नानक अबओट हरि गज जिउ होहु सहाइ

श्रीगुरु आद ग्रन्थ साहिब
श्लोक महाल्ला श्लोक ५३

(२) डंडौत बन्दना अनिकबार सर्बकला समरथ ।
डोलन ते राखहु प्रभु नानक देकरि हथ ॥

श्री गुरु आदि ग्रन्थसाहिब राग गौड़ी बाणी बावन अखरी महाल्ला ५ पौड़ी २६ का श्लोक १

(३) सिर मस्तक रख्या पारब्रह्म। हस्तकायां रख्या प्रमेस्वरह । आत्मरखना गोपाल सुआमी । धन

चरण रख्या जगदीस्वरह। सर्वरख्या गुरुदयाल भै दुःखबिनासनह । भगति वछ्ल अनाथ नाथे सरण नानक पुरख अचुतह (श्री गुरु आदि ग्रंथ साहिब श्लोक सहस क्रिती महाल्ला ५ श्लोक ५२)

॥ इति मंगलाचरण ॥

—०—

❀ उपदेश संख्या १ ❀

ईश्वर अवतार और गुरुमत धर्मग्रन्थ।

श्री गुरु नानकजी अवतार मानते हैं।

(१) ब्रह्मै[1] गर्बु[2] किया नही जानिया बेदकी बिपत[3] पड़ी पछुतानिया। जहँ प्रभु सिमरे तही मन मानिया[4] १ ऐसा गर्ब[2] बुरा संसारे । जिस गुर[5] मिलै तिस गर्व निवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बलिराजा माया[6] हंकारी जगन[7] करै बहु[8]भार अफारी[9] ॥ बिन गुर[5] पूछे जाइपियारी ॥२॥ हरिचन्द[10] दान करै जस लेवै ॥ बिन गुर[5] अंत न पाया भेवै ॥ आपि भुलाए आपमति देवै ॥ ३ ॥ दुरमति[11] हरनाखस[12] दुराचारी ॥ प्रभुनारायण गर्ब[2] प्रहारी[13] ॥ प्रहलाद उधारे क्रिपाधारी ॥ ४ ॥ भूलो रावण मुगद[14] अचेत ॥ लूटी लंका सीस समेत ॥ गर्ब[2]गय बिन सतगुर हेत ॥५॥

टिपणी–१ ब्रह्मा २ अहंकार ३ कष्ट ४ शोक ५ ईश्वर ६ प्रवती ७ यज्ञ ८ बहुत बड़ा ९ वजन १० दानीराजा ११ दुष्मती १२ प्रह्लादकापिता १३ दूर करने वाला १४ मूर्ख

सहसबाहु[१५] मधकीट[१६] महि[१७] खासा ॥ हरणाखस ले नखहु बिधासा[१८] ॥ दैत संघारे बिन भगवत अभिआसा ॥ ६ ॥ जरासिंध कालजंमन संघारे ॥ रक्तबीज[१६] कालनेम बिदारे ॥ दैत संघार ॥ सन्त निस्तारे ॥७॥ आपे सतगुरु शब्द बिचारे ॥ दूजै[१९] भारा दैत संघारे ॥ गुरमुख[५] साँच भगत निसतारे ॥ ८ ॥ बुडा[२०] दरजोधन पत[२१] खोई ॥ रामन[२२] जानिआ करता सोई ॥ जनको[२३] दूख[२४] पचै दूख होई ॥९॥ जनमेजे[२५] गुर[५] शब्द न जानिआ ॥ किंउ सुख पावै भर्म भुलानिआ ॥ इक तिल[२६] भूले बहुर[२७] पछतानिया ॥ १० ॥ कंस[२६] केस[२७] चंडूरन[२८] कोई ॥ राम[२२] न चिनिआ अपनी पत[२१] खोई ॥ बिन जगदीस न राखै कोई ॥ ११ ॥ बिन गुर[१] गर्व[२] न मेटै आजाई ॥ गुरमत[३] धर्म धीरज हरिनाई॥१२॥ श्रीगुरु आदग्रन्थ साहिब, रागगौडी महाल्ला १ अष्टपदी शब्द६

श्री गुरु २ अङ्गद जी अवतार मानते हैं ।

(२) ब्रह्मा[४] बिष्णु[५] महेसु[६] देव[७] उपाया ॥ ब्रह्मे दिते वेदपूजा लाया ॥ दस[८] अवतारी राम[९] राजा आया ॥ दैता मारे धाय हुकम सबाया ॥ (श्रीगुरु आदिग्रंथ साहिब राग मलार की वार महान्ला २ पौड़ी३

१५सहस्रवाहु १६मधूकैटभ राक्षसादि१७ महिषासुर राक्षस१८नष्ट किया १९ द्वितीय भाव २० दुष्ट२१ इजत २२ ईश्वर२३ पुरुष २४ कष्ट २५ एक राजा हुआ है २३ कृष्णजीका मातुल (मामा) २७ राक्षस २८ कंसका पौहलवान १ ईश्वर२ अहंकार ३ गुर मर्यादा ४ श्री ब्रह्माजी ५ श्रीविष्णुजी ६ श्री शिवजी ७ देवते ८ दस अवतारोंमें मुख्य ९ राजा राम ईश्वर अवतार

श्री गुरु ३ अमरदास जी अवतार मानते हैं।

(३ ,मेरी [१] पटिया लिखहु हरिगुबिंद गुपाला ॥ दूजे [२] भाय [३] फाथे [४] जमजाला ॥ सतिगुर [५] करे मेरी प्रतिपाला ॥ हरि सुखदाता [६] मेरे नाला ॥ १ ॥ गुर उपदेश प्रह्लाद हरि उचरै सासना [७] ते बालक गमन [८] करै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माता उपदेशै प्रह्लाद पयारे ॥ पुत्र रामनाम छोड जिऊ [९] लेहु उबारे [१०] ॥ प्रह्लाद कहै सुनहूँ मेरी माय ॥ राम न छोडा गुर दिया बुझाइ ॥ २ ॥ संडा मरका [११] सभ जाय पुकारे ॥ प्रहला आप बिगड़े पा सभ चाटड़े [१२] बिगाड़े ॥ दुष्ट सभामहि [१३] मंत्र पकाया ॥ प्रह्लाद का राखा होइ रघुराया [१४] ॥ ३ ॥ हथ गड़ग [१५] कर धाया अति अहंकरी ॥ हरि तेरा कहां तुझे लएं उबारी [१०] ॥ खिन [१६] महि भयानकरू [१७] निकसिया थंम [१८] उपाड़ ॥ हरणाखस [२०] नखी [२०] विदरिया प्रह्लाद लिया उबार [१०] ॥ ४ ॥ संतजना के हरिजीउ कारज सवारे ॥ प्रह्लाद जन के इक्कीह [२२] कुल उधारे ॥ गुरुकै शब्द हौमैं [२२] बिखमारे [२३] ॥ नानक राम नाम निसतारे ॥ ५ ॥ (श्रीगुरु आद ग्रन्थ साहिब राग भैरों महान्ला ३ शब्द २०)

---

१ फटो (तखती) २ द्वैतभाव ३ फसे ४ यमयातना ५ ईश्वर ६ ईश्वर ७ दण्ड(सजा) ८ जाप ९ जान १० जाप ११ संडा मरका दो पांधाओंके नाम है १२ विद्यार्थी १३ पापी सभा १४ ईश्वर १५ तलवार १६ क्षण (पलक) १७ नरसिंघ अवतार १८ स्तम्भ १९ हरिणकशिपु २० नाखून २१ दश आठो दस पिछली एक [illegible] २३ जैहर

श्री गुरु ४ रामदास जी अवतार मानते हैं।

(४) जपियो नामु सुक[1] जनक[2] गुर बचनी हरि हरि सरणि परे॥ दालदु[3] भंज[4] सुदामें मिलिओ भगती भाय तरे॥ भगति वछलु[5] हरिनाम कितार्थु गुरमुखि कृपाकरे॥ १॥ मेरे मन नामु जपत उधरे॥ ध्रू प्रहलाद विदुर दासीसुत[6] गुरमुख नाम तरे॥ १॥ रहाउ॥ कलिजुग नाम प्रधानु पदार्थु भगत जना उधरे॥ नामा जैदेउ कबीर त्रिलोचनु सभि दोख गए चमरे[7]॥ गुरमुख नाम लगे से उधरे॥ सभ किल बिखरा पटरे॥ २॥ जो जो नाम जपें अपराधी सभ तिनके दोख परहरे॥ वेस्वा[8] रवत[9] अजामलु उधरिओ मुखि बोलै नारायण नरहरें॥ नाम जपत उग्रसैण[10] गतिपाई तोड़ बंधन मुक्ति करे॥३॥ जनको आपि अनुग्रह[11] कीआ हरि अङ्गीकार करे॥ सेवक पैज रखै मेरा गोविंद सरण परे उधरे॥ जन नानक हरि किरपा धारी उर धरिओ नामुहरे॥ ४॥ श्रीगुरू आदि ग्रन्थ साहिब राग मारू महाला ४ घर २ शब्द १

श्री गुरु अरजनदेव जी अवतार मानते हैं।

(५) पाँच वर्ख को अनाथ ध्रूबारक[12] हरि स्मृति अमर अटारे॥ पुत्रहेत[13] नारायण किहो जमकंकर मार विदारे॥ १॥ मेरे ठाकुर केते अगनित[14] उधारे॥ मोह[15]

टिपणी--१ शुकदेवजी २ जनकजी ३ दरिद्रता ४ दुखदूर ५ रक्षक ६ लौंडीबाँदीका पुत्र ७ रवीदास ८ बजारूस्त्री (कंजरी) ९ भोगता १० कंसका पिता ११ कृपा १३ ध्रूभक्त १३ अजामल १४ वेशुमार १५ मुझे

दीन अलपमति[1] निरगुण परेओ सरणि दुआरे ॥ १ ॥
रहाउ ॥ बालमीक सुपचारो[2] तरेओ बुधक[3] तरे बिचारे ॥
एक निमख मनमाहिं अराधिओ गजपत[4] पार उतारे २
कीनी रखया भगत प्रहिलादै हरिनाखस नखह[5] बिदारे॥
बिदर दासीसुत[6] भयो पुनीता सगले कुल उजारे ॥ ३ ॥
कवन अपराध बतावऊ अपने मिथिया मोह मगनारे ॥
आयो साम नानक ओट हरि की लीजै भुजा पसारे ४
(आदि ग्रन्थ साहिब राग मारु महाल्ला ५ शब्द २)

(६) सुण साखी[7] मन जप पियार ॥ अजामल उध[8]
रिया कहि इकबार ॥ बालमीकै होआ साधूसंग ॥
ध्रूको मिलिया हरि निसङ्ग[10] ॥ १ ॥ तेरेयां सन्ता जाचूँ
चरणरेण[11] ॥ ले मस्तक लावूँ कर कृपा देन ॥ १ ॥ रहाउ ॥
गनका[12] उधरी हरिकहितोत[13] ॥ गजइन्द्र[14] ध्यायो हरि कियो
मोख[15] बिपर सुदामें दालदु भंज ॥ रे मन तुभी भज गो-
विंद ॥ २ ॥ बधक उधारिओ खम[16] प्रहार ॥ कुबिजा
उधरी अंगुष्ठधार[17] ॥ बिदर उधारिओ दासत भाइ ॥
रेमन तू भी हरि धियाये ॥ ३ ॥ प्रहलाद रखी हरि पैज[18]

१ तुच्छ बुद्धि २ चंडाल ३ कृष्णजीके चरण में बाण मारने वाला ४ हस्तीओंका राजा ५ नाखून ६ लौंडी बाँदीका पुत्र ७ साक्षी (उगाह) ८ भक्त ९ नारायण १० प्रत्यक्ष ११ पैरों की धूल १२ बाजारू स्त्री १३ तोता १४ हाथीओंका राजा १५ मोक्ष[मुक्ती] १६ तीर १७ श्रीकृष्णजी ने अंगूठाऔर चरणके सहारेसे कुवजाका कूबड़ सीधा करदिया १८ पत (इजत)

आप ॥ वस्त्र[1] छीनत[2] द्रोपती रखी लाज ॥ जिन जिन सेविया अन्तबार ॥ रे मन सेवत परह पार ॥ ४ ॥ धंनै[3] सेविश्रा बालबुधं[4] ॥ त्रिलोचन[5] गुर मिल भई सिध ॥ बेणी को गुर कीउ प्रकासु ॥ रे मन तूभी होहि दास ५ जैदेव त्यागयो अहंमेव[6] ॥ नाई उधरेयो सैन सेव ॥ मन डिगन डोले काहूँ जाइ ॥ मन तूभी तरसह सरन पाइ६

(श्री गुरूआद ग्रंथसाहिब राग बसन्त महाल्ला ५ अष्टपदी शब्द १ तक १ से ६)

(७) अचुत[7] पारब्रह्म परमेसर अन्तरजामी ॥ मधुसूदन दामोदर सुआमी ॥ रिषीकेस गोवरधन[8] धारी मुरली[9] मनोहर हरिरङ्गा ॥ १ ॥ मोहन माधव कृष्ण मुरारे जगदीसुर हरिजीउ असुर संघारे ॥ जगजीवन अबिनासी ठाकुर घट घट वासी है संगा ॥ २ ॥ धरणी धर ईस नरसिंघ नारायण ॥ दाड़ा[10] अग्रे प्रिथमि धरायण बवन रूप किया तुध करते सभही सेती है चंगा ॥ ३ ॥ श्री रामचन्द्र जिस रूप[11] न रेखिया ॥ बनवाली चक्रपाणि दरसु अनूपिश्रा ॥ सहस नेत्र मूरत है सहसा इकुदाता सभ है मंगा ॥ ४ ॥ बगती बछल अनाथह नाथे ॥ बासदेव निरञ्जनदाते बरन न साकउ गुण अंगा ॥ ५ ॥ मुकंद

१ कपड़े २ खोसना ३ भक्त ४ वली ५ ब्राह्मण ६ अहङ्कार ७ बावे बुढेकी प्रार्थना पर गुरु अरजन जीने विष्णु सहस्रनाम की नकल सिखोंमें परचारकी साहिबके गुरू ग्रन्थ प्रयाय (डिकसनरी) में लिखा है जिससे अवतार सिद्ध होते हैं ८ गोवरधन परबत ९ वंसरी १० बाह अवतार ११ राजतिलक त्याग

मनोहर लखमी[1] नारायण द्रोपती लजा निवार उधारण कमला[2] कंत करह कंतूहल[3] अनद बिनोदी नह संगा ॥ अमोघ दर्शन अजूनी संभउ ॥ अकाल मूर्ति जिस कदे-नही खउ ॥ अबनासी अवगत अगोचर ॥ सभकुछ तुझ ही है लगा ॥ ७ ॥ श्रीरंग बैकुण्ठ के बासी मछ कछ कूरम आगिया उतरासी ॥ केसव चलत करहि निराले किता लोडह सो होइगा ॥ ८ ॥ निराहारी निर वैर समाया ॥ धार खेल चतुरभुज[4] कहाया ॥ सावल सुंद्ररूप बणावह ॥ बेण[5] सुनत सभ मोहेगा ॥ ६ ॥ बन[6] माल बिभूखन कमल नैन ॥ सुंद्र कुंडल मुकट बैन ॥ संख चक्र गदा है धारी महासारथी सतसंगा ॥ १० ॥ पीत पितंबर त्रिभण धणी जगन नाथ गोपाल मुखभणी सारंग भ मनवान बीठला ॥ मैं गणतन आवै सरगंगा ११ निहकंटक निह केवल कहीऐ धनंजै जल थल है महीऐ मिरतलोक पयाल समीपत अस्थिरथान जिस है अभ-गा ॥ १२ ॥ पतित पावन दुखभै भञ्जन अहंकार निवारण है भवखंडन ॥ भगती तोखित दीनकृपाला गुणे न कितही है भिगा ॥ १३ ॥ निरङ्कार अछल अडोले जोति सरूपी सभ जग मडले ॥ सो मिलै जिस आप मलाए आपहु कोइ न पावैगा ॥ १४ ॥ आपे गोपी आपे काना ॥ आपे गऊ चरावै बाना ॥ आप उपावहि आप खपावहि तुध लेप नहीं इकु तिल रङ्गा ॥ १५ ॥ एक जिय गुण कवन बखानै ॥ सहसफनी सेख अंत न जानै ॥

टिपणी—१ लक्ष्मी २ लक्ष्मी ३ कौतक ४ चार भुजा वाला ५ बसरी ६ फूलाकी माला ७ जेवर ८ अरजनके रथ वाही ९ सेषनाग

नवतन नाम जपै दिनराती इक गुण नाही प्रभकहि सङ्गा ॥ १६ ॥ ओट गही जगत पित सरणाया ॥ भै भयानक जमदूत रहै भया ॥ होहु क्रिपाल इच्छा कर राखहु साध संतन कै संगि संगा ॥ १७ ॥ द्रिष्टमान है सगल मथेना[1] ॥ इक मागउ दान गोविंद संतरेना ॥ मस्तक लाइ परमपद पावउ जिस प्रास सो पाऐगा १८ जिनको क्रिपा करी सुखदाते तिन साधू चर्ण लौ रिदै पदाते ॥ सगल नाम निधान तिन पाया अनहद शब्द मनि वाजंगा ॥ १९ ॥ किरतम[2] नाम कथे तेरे जिहबा ॥ सत नाम तेरा परा पूर्वला ॥ कहु नानक भगत पए सरणाई देहु दरस[3] मनि रंगुलगा ॥ २० ॥ तेरी गत नित तूही जाणह ॥ तू आपे कथह तै आप वखाणह ॥ नानक दास दासन को करीअहु हरिभावै[4] दासा राख सङ्गा ॥ २१ ॥ (श्रीगुरु आद गून्थसाहिब राग मारूमहाल्ला५ सोहिले शब्द ११)

श्री गुरू ९ तेगबहादर जी अवतार मानते हैं ।

(८) दुख हरता हरिनाम पछानो ॥ अजामल गनका जिह सिमरत मुक्त भए जीयजानो ॥१॥ रहाउ गज[5] की त्रास मिटी छिनहूं महि जवही राम बखानो ॥ नारद कहत सुनत ध्रूव बारिक[6] भजनमाहि लपटानो१ अचल अमर निर निरभै पद पाइओ जगत जाहि है

टिपणी--१ मिथ्या २ ईश्वरके साकार कर्म कीथेहुए रूप ३ सकार ४ इच्छ ५ हस्ती ६ बालक

रानो नानक कहत भगत रछक हरि निकट ताहि तुम मानो ॥ २ ॥ (श्री गुरू आद ग्रंथसाहिब राग बिलावल महाल्ला ६ शब्द १)

(९) हरिको नाम सदा सुखदाई ॥ जाको सिमर अजामलु उधरिओ गजकाहु गतिपाई॥१॥रहाउ॥ पंचाली[1] को राजसभा[2] मै रामनाम सुध आई ॥ ताको दुख हरिओ करुणामैं अपनी पैज[3] बढ़ाई ॥ १ ॥ जिहनर जसु किरपानिध गायो ताको भयो सहाई ॥ कहु नानक मै इही भरोसे गही आन सरनाई ॥ २ ॥ (उक्त पता राग मारू महाल्ला ६ शब्द १)

(१०) मनरे प्रभकी सरन बिचारो ॥ जिह सिमरत गनका[4] सी उधरी ताको जस उरधारो ॥ १ ॥ रहाऊ ॥ अटलभियो ध्रूव जाके सुमिरन अर निरभै पद पाया ॥ दुखहरता इह बिध को स्वामी तै काहे बिसराया ॥ १ ॥ जबही सरन गही किरपा निध गज[5] गरा-[6] हते छूटा ॥ महमा नाम कहा लउ बरनउ रामकहत बंधन तिह तूटा ॥ २ ॥ अजामल पापी जग जानै निमख-माहि निस्तारा ॥ नानक कहत चेत चिंतामनि तै भी उतरहि पारा॥३॥ (उक्त पता राग सोरठा महाला ६ शब्द ४)

(११) साधो गोविंदके गुनगावो ॥ मानसजन्म अमोलक पायो बिरथा काहि गवायो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पतित पुनीत दीन बन्ध हरि सरन ताहि तुम आवउ ॥

---

१ द्रोपदी २ दुर्योधनकी सभा ३ इज़त ४ बाजारू पापन स्त्री ५ हस्ती ६ मकरमच्छ जलजीव

गजको[1] त्रास[2] मिटिओ जिह सिमरत तुम काहे बिसरावउ ॥ १ ॥ तज अभिमान मोह माया फुन भजन रामचित्त लावउ ॥ नानक कहत मुक्त पंथ इहु गुरमुख होइ तुम पावउ ॥२॥ (उक्त पता राग गौड़ी महाल्ला ९ शब्द ५)

(१२) बल हुटकिओ बंधन[3] परे कछू न होत उपाइ ॥ कहुनानक अब ओट हरि गज[1] जिउ होहु सहाइ ॥ (श्री गुरू आद ग्रन्थसाहिब श्लोक महाला ९ श्लोक ५३)

(१३) संग सखा सभ तजगए कोउ न निबिहिओ साथ ॥ कहु नानक इह बिपत[4]मैं टेक एक रघुनाथ (उक्त पता महाल्ला ९ श्लोक ५५)

(श्री गुरु १० दशमजी अवतार मानते हैं)

(१४) जब जब होत अरिष्ट[5] अपारा ॥ तब तब देह धरत अवतारा ॥ इनमहि श्रिष्ट सुदस अवतारा ॥ जिनमैं रमिया राम हमारा॥ अनत चतुर्दस गन[6] अवतारू॥ कहो जु तिन तिन कीए अखारू[7] (श्री गुरु दशम ग्रन्थ साहिब श्री मुख वाक पातसाही १० चौबी अवतार कविता अंक २ और ४)

(१५) नमो सर्व रूपे (उक्त दशम ग्रन्थ साहिब श्री मुख वाक पातसाही १० जापसाहिब कविता अंक १९)

(१६) एक मूर्ति अनेक दर्शन कीन रूप अनेक (उक्त पता जाप साहिब कविता अंक ८१)

---

(१) दुख (२) कैद (३) दुख (४) पाप (५) चौबी ६ लीला

(१७) आदि[1] अनादि अगाधकथा ॥ ध्रूसे प्रहलाद अजामिल तारे ॥ नाम उचार तरी गनका ॥ सोई नाम अधार विचार हमारे (उक्त पता श्रीमुखवाक पातसाही स्वैये जागती जोतमें स्वैया १०)

(१८) सुआद अन्त एकयं ॥ धरे सरूप नेकियं (उक्त पता श्री मुखवाक पातसाही १० बाचित्र नाटिक अध्याये १ कविता १ अंक ५०)

(१९) बपुधर[1] काल बलि भगवाना ॥ आपहु रूप धरत भयो नाना ॥ भिन भिन जिमदेहि धराए ॥ तिम तिम कर अवतार कहाए (उक्त पत श्रीमुख वाक पातसाही १० चौबी अवतार कविता अंक ३३)

(२०) धुणं[2] नेवराणं[3] ॥ घुरंघुंघराणं ॥ चतुर्थबाहं चारं ॥ त्रिजूटं सुधारं ॥ गदा पास सोहं ॥ जगं पासमोहं ॥ सुभं जीभ[4] जुआलं । सुदाड़ा[5] करालं ॥ बजी वंब सांखं ॥ उठे नाद वंखं ॥ सुभंरूप स्यामं ॥ महासोभ धामं ॥ छत्रेचार चित्रं ॥ परेयं पवित्रं (उक्त पत श्रीमुख वाक पातसाही१० बचित्र नाटिक अध्याये १ कविता अंक ३१से ३४ तक

नोट-प्यारे मित्रो श्री गुरु नानकजीसे लेकर (अङ्गद अमरदास, रामदास, अरजन, तेगबहादरजी के शब्द आदग्रंथसाहिब में है और दसम गुरुजीके शब्द (बाणी) दसमग्रन्थ साहिबमें हैं सोई लिखे हैं (गुरु गोविंद, गुर हरिराय, गुरु हरिकृष्णजीके शब्द ग्रंथ साहिब में नहीं सो नहीं लिखे" इन दस गुरुओंका सिद्धान्त एक और एकरूप है इस कारण दशों गुरु हिन्दू सिद्धांत के अनुसार ईश्वर अवतार मानते हैं

१ शरीर २ आवाज ३ पैरोंका भूषण ४ अग्नि ५ दांत

"नरसिंह अवतार" और गुरुमत धर्मग्रंथ ।

(२१) दुरमति हरनाखस[1] दुराचारी ॥ प्रभू नारायण गर्व प्रहारी ॥ प्रहलाद उधारे कृपाधारी ॥ (श्री गुरु आद् ग्रंथसाहिब राग गौड़ी महाल्ला १ शब्द ६ तुक ४)

(२२) हरि जुग जुग भगत उपाया पैज[2] रखदा आया रामराजे ॥ हरनाखस[1] दुष्ट हरि मारिया प्रहलाद तराया ॥ (उक्तपता राग आसा महाल्ला ४ छन्त शब्द ६ तुक ४)

(२३) खिन मैं भियानक रूप निकसिया थंमुपाड़ हरनाखस नखही बिदरिया ॥ प्रहलाद लीया उबार ॥ (उक्त पता राग भैरो महाल्ला ३ शब्द २० तुक ४)

(२४) थंमु उपाड़ हरि आप दिखाया ॥ अहंकारी दैत मार पचाया ॥ प्रहलादके कारज हरि आप दिखाया करतै अपणा रूप दिखाया (उक्त पता राग भैरो महाल्ला ३ अष्टपदी शब्द तुक १० और १३)

(२५) तिन करते इक चलत[4] उपाया ॥ अनहद बाणी शब्द सुनाया ॥ मनमुख[5] भुले गुरमुख[6] बुझाया ॥ कार्ण करदा करता आया ॥ १ ॥ गुरका शब्द मेरे अंतर ध्यान ॥ हौ कबहू न छोडू हरिका नाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पिता प्रहलाद पठन पठाया ॥ लै पाटी पाधे कै आया ॥ नाम बिना नह पड़उ अचार मेरी पटीआ लिखदेहु गोबिंद मुरार ॥ २ ॥ पुत्र प्रहलाद सियों कहियामाय[7] ॥

टिपणी—१ हिरणकशिपु २ इज्जत ३ क्षीण ४ चरित्र ५ नास्तक ६ आस्तक ७ माता

पर विरतन पड़हु रही समझाय ॥ निरभौ दाता हरजीउ मेरै नाल ॥ जे हरि छोड़ों तो कुल लागै गाल ॥ ३ ॥ प्रहलाद सभ चाटड़े[१] विगारे ॥ हमरा कहिया न सुणै अपणे कारज सवारे ॥ सभ नगरी महि भगति द्रिड़ाई ॥ दुष्ट सभा का कछु न बसाई ॥४॥ संडैमरकै[२] कीई पुकार ॥ सभे दैत रहे झखमारि ॥ भगत जनाकी पति राखै सोई ॥ कीते कै कहियै क्या होई ॥ ५ ॥ किरत संजोगी दैंतराज चलाया ॥ हरि न बूझै तिनि आप भुलाया ॥ पुत्र प्रहलाद सिउ वादु रचाया ॥ अंधा न बूझै काल नेड़े आया ॥ ६ ॥ प्रहलाद कोठे विच राखिया बाहर दीआ ताला ॥ निरभौ बालक मूलन डरई मेरे अंतर गुर गोपाला ॥ कीता होवै सरीकी करै अणहोदा नाउ धराया ॥ जो धुर लिखिया सो आप पहुता जन सिउ वादु रचाया ॥ ७ ॥ पिता प्रहलाद सिउ गुरज उठाई ॥ कहां तुमारा जगदीस गुसाई ॥ जगजीवन दाता अन्त सखाई ॥ जहदेखा तह रहिया समाई ॥ ८ ॥ थंमु उपाड़ि हरि आप दिखाया ॥ अहंकारी दैतु मार पचाया ॥ भगता मन अनन्द वजी वधाई ॥ अपने सेवकको दे वडिआई ॥ ९ ॥ जंमण मरण मोहु उपाया आवण जाणा करते लिखपाया ॥ प्रहलादकै कारज हरि आप दिखाया[३] ॥ भगतां का बोल आगै आया ॥ १० ॥ देवकुली लखमी[४] को करहि जै कार ॥ माता नरसिंहका रूप निवार ॥ लखमी[४] भौ[५] करे न साकै जाइ ॥ प्रहलाद जन चरणी लागा

टिपणी–१ विद्यार्थी २ पड़ाने वाले पाधोंका नाम है ३ प्रत्यक्ष हुआ ४ लक्ष्मी ५ भय

आइ ॥ ११ ॥ सतिगुरनाम निधान द्रिड़ाया ॥ राजमाल झूठी सभ माया ॥ लोभी नर रहे लपटाए ॥ हरिकेनाम बिना दरगैह मिलै सजाइ ॥ १२ ॥ कहै नानकु सभको करे कराया ॥ से पर वाण जिनी हरिसियों चित लाया ॥ भगतांका अंगी कर करदा आया ॥ करतै अपणा रूप दिखाया ॥१३॥ (उक्त राग भैरों महाला ३ अष्टपदी शब्द १)

(२६) प्रभु थंभते निकसकै बिसथार[1] ॥ हरनाखसु छेदेओ नख बिदार ॥ ओइ पर्म पुरख्ख देवादी देव ॥ भगत हेत नरसिंह भेव ॥ कह कबीर को लखै न पार ॥ प्रह-लाद उधारे अनक बार (श्री गुरू आदि ग्रंथ साहिब राग बसन्त वाणी कबीरजी शब्द ४ तुक ४ और ५)

(२७) पीत पीतम्बर त्रिभवण धणी थंभमहि हरि भाखै । हरनाखस जिन नखह बिदरियो सुर नर किये सथाना ॥ कह नामदेव हम नर हरि नर ध्यावहु राम अभी पद जाता (श्री गुरू आद ग्रन्थ साहिब राग भैरो वाणी नामदेव शब्द ६ तुक ४ और ५)

नोट—इसी प्रकार आदि ग्रंथसाहिब में सैकड़ों प्रमाण भगवान नरसिंह अवतार उस्तुति के मौजूद हैं और दसम ग्रंथ-साहिब चौबी अवतार में सातमा अवतार नरसिंह जी का बिस्तार पूर्वक लिखा हैं और श्री भाई गुरदासजी की वार १० पौड़ी दो में नरसिंह अवतार की सिद्धी मौजूद है और भगवान् नरसिंह अवतार की निसेधी गुरमतके किसी धर्म ग्रंथमें नहीं ।

बावन अवतार और गुरमत धर्मग्रन्थ ।

(२८.) कर ढाई धरती मांगी बावन रूप बहाने किउं पया[2] लेजाए क्यों छलीये जे बल रूप पछाने (श्रीगुरू

टिपणी १ प्रगट २ पाताल

आद ग्रन्थ साहिब राग प्रभाती महाल्ला १ अष्टपदी शब्द ४ तुक ३)

(२९) बलिराजा माया अहंकारी जगन करै[1] बहु भार अफारी (उक्त पता राग गौड़ी महाला १ अष्टपदी शब्द ९ तुक २)

(३०) बावन रूप किया तुध करते सभही सेती है चंगा (उक्त पता राग मारू महाल्ला ५ सोहिले शब्द ११ तुक ३)

(३१) नामा कहे भगत बस के सब अजहू बलके द्वार खरो (उक्त पता राग मारू बाणी नामदेव शब्द १ तुक ३)

(३२) बलिराजा घर आपणे अंद्र बैठा जग करावै॥ बावन रूपी आया चार वेद मुख पाठ सुणावै ॥ राजे अन्द्र सदया मंगस्वामी जो तुध भावै ॥ अछल छलन तुध आया शुक्र प्रोहित कह समझावै ॥ करो[2] अढ़ाई धरती मंग पिछो देह[3] त्रिहुं[4] लोअन माठी हुई कर वा कर तिन लोय ॥ बलि राजा लै मगर मिणावै ॥ बलि छल आप छला अनु होय दियाल मिलै गल लावै ॥ दिता राज पता लदा होए अधीन भगत जस गावै ॥ होए दरवान महासुख पावै ॥ (श्रीभाई गुरदास जीकी वार १० पौड़ी ३)

(३३) बावनरूपी होइकै बलिछल आप छलाया ॥ करो[2] अढ़ाई धरती मांगी पिछेदेह बड पिंड[5] बधाया ॥ दुयकर वाकर तिन लोय बलिराजे फिर मगर[6] मिणाया ॥ सुरगहुँ चंगा जाणकै राज पताल लोकदा पाया ॥ ब्रह्मा बिष्णु महेश त्रै भगत बछल दरवान सदाया ॥ (उक्त पता श्री भाई गुरदास जी की वार २३ पौड़ी ६)

टिप्पणी १ यज्ञ २ हाथ ३ शरीर ४ तिनोंकी जीतनी ५ शरीर ६ शरीर

(३४) बलि पोता प्रहलाददा ईन्द्र पुरीदी इच्छ कारन्दा ॥ कर सम्पूर्ण जँग सिउँ इक इकोत्र जँग करंदा ॥ बावनरूपी आपके गर्व निवार भगत उधरंदा ॥ ईन्द्रासणनों परहरै जाइ पताल सु हुकमी धंदा बलि छल आप छलायो न दरवाण होवंदा ॥ (उक्त पता श्रीभाई गुरदास जी की वार २५ पौड़ी ७)

(३५) जह साधन संकट परैं जहतह भए सहाय॥ दुआरपाल है दर बसे भगत हेत हरिराय ॥ (श्री गुरू दसम ग्रन्थ साहब श्रीमुख वाक पातसाही १० अष्टम बावन अवतार कविता अंक २६)

नोट–इसी प्रकार गुरमत धर्मग्रंथों में सैंकड़ों परमाण श्री भगवान बावन अवतार के भरे पड़े हैं विस्तार से नहीं लिखे ॥

परशुराम अवतार और गुरमत धर्मग्रन्थ ।

(३६) सहस[1] बाहु[2] मधुकीट[3] महखासा[4] ॥ हरना[5] खस लै नखहु बिधासा ॥ दैंत संघारे बिन भगती अभ्यासा (श्री गुरू आद ग्रन्थसाहिब राग गौड़ी महान्ला १ अष्टपदी शब्द ६ तुक ६)

(३७) गावै जमदग्नि[6] परशुरामे ॥ सुरकर[7] कुठार[8] रघुतेज हरियो ॥ (आदि ग्रंथसाहिब स्वैये महाल्ला १ के स्वैया ४)

(३८) काल पुरुषकी करी बड़ाई । इम आज्ञा तह ते तिम पाई ॥ ३ ॥ दिज जमदग्न जगतमों सोहत ॥ तिन उठ करत अघ[9] ओघन[10] कोहत ॥ तह तुम धरो बिष्णु अवतारा ॥ हनहु सकके सत्र सुधारा (दशम गुरू

टिपणी १ एक सौ एक २ सहस्रबाहु अरजन ३ मधुकैटव ४ महिषासुर ५ हरिणयकशिपु ६ परशुरामका पिता ७ देवतों का हाथ ८ कुहाड़ा ९ पाप १० दुख

ग्रंथसाहिब श्रीमुख वाक पद साही १० परशुराम ६ अवतार कविता अंक ३ और ४)

नोट-इत्यादि अनेक परमाण हैं।

श्री रामचंद्र अवतार और गुरुमत धर्मग्रंथ।

(३६) रघुवंस[1] तिलक सुंद्र दसर्थ[2] घर मुनि बाछहि जांकी सरणं (श्रीगुरु आदग्रन्थ साहिब स्वैये महाल्ला ४ के स्वैया २)

(४०) गावैं जमदग्न[3] परशुरामै सुरकर[4] कुठार[5] रघु तेज हरियो (उक्त पता स्वैया महाल्ला १ स्वैया १)

(४१) दस अवतारी राम राजा आया॥ दैता मारे धाए हुकम सवाया॥ (उक्त पता राग मलार की वार महाल्ला ३ पौड़ी ३)

(४२) श्री रामचन्द्र जिस रूप न रेखिया॥ (उक्त पता राग मारू महाला ५ सोहिले शब्द ११ तुक ४)

(४३) राजा रामकी सेव न कीनी कहु रविदास चमारा (उक्त पता राग आसावाणी रविदासजी शब्द ३ तुक ३)

(४४) गोतम नार अहल्या तारी पावन केतक तारी आले (श्री गुरु आद ग्रंथसाहिब राग माली गौड़ा वाणी नामदेव शब्द २ तुक २)

(४५) गोतम सती सिला निसतरी॥ (उक्त पता राग गौंड बाणी नामदेव शब्द ५ तुक ३)

(४६) जसरथ रायनन्द राजा मेरा रामचन्द प्रणवै नामा तत्व रस अंमृत पीजै॥ (उक्त पता राग रामकली बाणी नामदेव शब्द ४ तुक ४)

टिप्पणी १ रघुके वंशमें २ विश्वामित्र ३ परशुरामका पिता ४ देवतों का हाथ ५ कुहाड़ा

(४७) पाड़ पड़ोसणि पुछले नामा का पहिछानि छवाई हो ॥ तोपहि दुगणी मजूरी दैहो मोको बेढी देहु बताई हो ॥१॥ री †बाई बेढी देन न जाई ॥ देखु बेढो रहिया समाई ॥ हमारै बेढी प्रान अधारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेढी प्रीतमजूरी मांगै जो कोऊ छानि छवावै हो ॥ लोक कुटंब सभहुने तोरै तो आपन बेढी आवै हो २ ऐसो बेढी बरन न साकु सभ अन्तर सभ ठाई हो ॥ गुंगे महाअंमृत रस चखिया पूछे कहनुन जाई हो ॥३॥ बेढीके गुण सुनरी बाई जलधि बाँध ध्रू थापि ओहो ॥ नामें के स्वामी सीया बहोरी लंक बिभीखण आपिहो४

(उक्त पता राग सोरठ बाणी नामदेव शब्द २)

(४८) संग सखा सभ तज गए कोऊ न निबियो साथ ॥ कहु नानक इह विपतमें टेक एक रघुनाथ (उक्त पता श्लोक महान्ला ६ श्लोक ५५)

(४९) रामनाम उरमें गहियो जाकै सम नहीं कोय जिह सिमरत संकट मिटै दर्श तिहारो होय (उक्त पता श्लोक महाला ६ श्लोक ५७)

(५०) तिथै सीतोसिता महिमा माहि ॥ ताके रूप न कथने जाहि ॥ नाओ हमरहि ना ठागहि जाहि जिनके राम बसे मन माहिं (उक्त पता जपजी साहिब महान्ला १ पौड़ी ३७)

(५१) रामकथा जुग जुग अटल सभ कोई भाखत नेत ॥ स्वर्गवास रघुवर करा सगरी पुरी समेत ॥ जो येह कथा सुने अर गावै दुख पाप तह निकट न

टिपणी १ गुआडन २ हपर ३ तेरेसे ४ छपर बनानेवाला ५ सितांके बरनेवाले ६ मित्र ७ नासिकासे रहित ८ रामचन्द्र ९ अयोध्या †भगनी

आवै ॥ बिष्णु भगत की येह फल होई आध व्यध छ्वै सकै न कोई (श्री गुरू दसमग्रन्थ साहिब श्री मुख वाक पातसाही १० रामाअवतार कबिता अंक ८५८ और ८५९)

(५२) रंगमहिल रंगबिच दसरथ कौसलया रलीयाले ॥ मता मताया इन आप विच चाइ चईयाले खरे खुसःले घर असाडै पुत्तहोइ[1] नाऊ की धरीये बालकबाले रामचन्द नाऊँ लैदियाँ तिन हत्याते होए नराले[2] ॥ राम राज पर वाण जग सत संतोख धर्म रखवाले ॥ माया विच उदास हुए सुणै पुराण बसिष्ठ बहाले ॥ रामायण वरताया सिलातरी पग छुहि ततकाले ॥ (श्री भाई गुरदासजी की बार २३ पौड़ी ८)

(५३) भला बुरा सँसार विच जो आया तिस सर पर मरणा ॥ रावण तै रामचन्द्र वाग महाबली लड़ कार्ण करणा ॥ जर जर वाणा बसकर अन्त अधर्म रावण मन धर्णा ॥ रामचन्द्र निरमल पुरुष धर्महु[3] सायर पत्थर तरणा बुरियाई अहु रावण गिया काल कटिका परत्रिया हरणा ॥ रामायण जुगि जुगि अटल से उधरे जो आए सरणा (श्री भाई गुरदासजी की बार ३१ पौड़ी १८

(५४) रामचन्द कार्ण करण ॥ कार्ण वस होआ देह धारी ॥ मन मतेई लै वणवास बडाई चारी ॥ परशुरामदा वलहरै दीनद्याल गर्ब परहारी ॥ सीता लछमण सेवकर जती सती सेवाहितकारी ॥ रामायण बरताया रामराजकर श्रिष्ट उधारी (श्री भाई गुरदास जी की बार ३१ पौड़ी २०)

(५५) निन्दा कर हरनाखस सौं वेखहु फलवटै ॥

टिपणी १ संमती २ अध्यातमक ॥ आधिदैविक ॥ अधिभौतक ३ स्याही

लंक लुटाई रावणै मस्तक दस कटै ॥ (श्री भाई गुरदास जी की वार ३५ पौड़ी ५)

नोट इत्यादि अनेक परमाण हैं। और जो "राम गयो रावण गियो जाको बहु परवार ॥ कहु नानक कछु थिर नहीं सुपने जिऊं संसार ॥ इत्यादि शब्दोंसे रामावतार का खण्डन समझते हैं "वह ज्ञानी नहीं अज्ञानी (मूर्ख) हैं उक्त शब्द के अर्थ येह हैं।"

(क) 'रामगयो रावण गियो ॥' जब राम लंका मे गिया तब रावण संसारसे चला गिया जाको बौहु परवार था बाकी शब्द का अर्थ अक्षरार्थ है ॥

(ख) 'राम गयो रावण गयो जाको बौहु परवार ॥' रावण के मनमें सीता बिराजमान थी सीता के मनमें रामचन्द्र जी बिराजमान थे जब राम रावण का घोर संग्राम हुआ तो रावण के मनसे सीता और रामचन्द्र जी चले गए तब रावण संसार से चला गया जिसका बहुत परिवार था ॥ बाकी शब्द का अर्थ अक्षरार्थ है ॥

(ग) 'रोवे राम निकाला गया ॥' रामचन्द्र जी निकाले (बनोवास के) समय नहीं रोए, देखो रामायण वाल्मीक और तुलसीकृत ॥

(घ) 'सीता लछमन विछुड़ गिया ॥' सीता और लक्ष्मण का विछोड़ा नहीं हुआ ॥ सीता पंचवटी में अग्नी सपुर्द करदीं थी लक्षमण मूर्छित हो गया था। देखो तुलसीकृत रामायण ॥

(ङ) पांडे[1] तुमरा रामचन्द सोभी आवत देखिया था ॥ रावनसेती सर वर होई घर की जोइ[2] गुवाई थी ॥

टिप्पणी १ पंडित २ स्त्री

नोट-इसका उत्तर सिखों में परम परमाणीक श्री भाई मनीसिंह जी अपनी भगतरत्नावली साखी ५४ लिखते हैं ॥ यथा "पांडे तुमरा रामचन्द सोभी आवत देखिया था ॥ रावनसेती सरवर होई घरकी जोरा गवाई थी ॥ ते उसे नाम देउदा बचने है ॥ दसरथ राय नन्द राजा मेरा रामचन्द प्रणवैं नामा ततरस अंमृत पीजैं ॥" ता पैहला बचन सुणकै औतार निंदा हुंदी है ॥ ते दूजा बचन करकै उपमा हुंदी है ॥ क्यों कर समझीये ॥ तां बचन होया ॥ जो इक सरगुण दी उपासना है ॥ इक निरगुण दी उपासना है ॥ जैसे समुद्र दे उपर कोई जावै ता कई लैहरा उसदे विचों निकल दीआं हैं ॥ तेजे नदी ते कोई जावै ता एहा नहीं समुद्र है जल रूप है तैसे सोई महाराज औतार होए वरते हैं ॥ (इत्यादि श्रीभाई मनीसिंह कृत भगतरत्नावली साखी ५४)

(५६) जैसे श्रीराम जी ने कपा अर भालका ते रोकसानू तुड़ाया है सी ॥ (उक्त साखी १३१)

श्रीकृष्ण अवतार और गुरुमत धर्मग्रंथ ।

(५७) एक कृष्णं सर्व देवा ॥ देवा देव आत्मा आत्मा बासदेवस्य जेको जाणैं भेउ [2] ॥ नानक ताका दास है सोई निरञ्जन देव (श्रीगुरू आद ग्रन्थसाहिब श्लोक सहस्त्रकिरती महाला १ श्लोक ४)

(५८) जुजमहि जोर छली चन्द्रावलकान कृष्ण जादम भया ॥ पार जात गोपी लै आया विंद्रबन में रंग किया (उक्त पना राग आसा की वार महाल्ला १ पौड़ी १३ का श्लोक २) [3]

(५९) कृष्णमाला जपहु तुसी सहेली हो ॥ जम

१ ... २ भेद ३ कृष्ण नाम

कारन होहु खड़िया ॥ सिख सुणहु महेली हो ॥ (उक्त पता राग वंड हंस महाल्ला १ छंत शब्द[1] २ तुक ७)

(६०) रासमंडल कीनो अखारा[1] ॥ सगलो साज रखियो पसारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहुविध रूप रंग अपारा पेखे खुसी भोगन हारा ॥ सभरस लै तबसत निरारा ॥ (आदग्रन्थ साहिब राग सूही महाला ५ शब्द ४५ तुक १)

(६१) वाहिगुरु[2] वाहिगुरु वाहिगुरु बाहिजीउ कमल नैन मधुर बैन कोट सैन संग सोभ कैहत मा जसोध जिसह दही भात[3] खाहि जिउ ॥ देख रूप अति अनू । मोह महा मग भई किंकनी शब्द झनत कोर खेल पाहिजीउ ॥ काल कलम हुकम हाथ कहहु कौन मेट सकै ईस वंमु गियान ध्यान धरत हिये चाहि जीउ ॥ सत साच श्रीनिवास[4] आदि पुरुष सदा तुही वाहि गुरु वाहिगुरु वाहिगुरु[5] वाहिजीउ ॥ १ ॥ पीत बसन कुन्दसदन प्रिय सहित कंठमाल मुकुट सीस मोर पंख चाहिजीउ ॥ वे बज़ीर बड़े धीर धर्म-अंग अलख अगंम खेल किया आपणे उछाह जीउ ॥ अकथ कथा कथी न जाए तीन लोक रिहा समाय ॥

टिपणी १ अखाड़ा २ श्री भाई गुरदास जी यह अर्थ करते हैं ॥ सतजुग सति गुर वासदेव वावा विष्ण नाम जपावै ॥ दुआ पुर सतिगुर हरी कृष्णा हा हा हरि नाम जपावै ॥ त्रेते सतगुरराम जी रारा रामजपे सुख पावै ॥ कलजुग नानक गुरू गोविंद गगा गोविंद नाम जपावै चारो अछर इक कर वाहि गुरू जप मंत्र जपावै (गुरदासवार १ पौड़ी ४९) और श्री भाई मनीसिंह जी कृत भगत रत्ना वली साखी १० और ५३ और जन्मसाखी भाई वाले वगली में वाहिगुरू शब्दका हिन्दू संकेतक अवतार नाम महात्म अर्थ कीया है ॥ ३ चावल ४ लक्ष्मी ५ राधका

सुतह सिध रूप धरियो महन के साहिजीउ ॥ सत साच श्रीनिवास[1] आदि पुरुष सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिजीउ ॥ (श्रीगुरू आदग्रंथ साहिब स्वैये महाल्ला ४ के स्वैया ६)

(६२) धन धन ओराम बेन[2] वाजे ॥ मधुर मधुर धुन अनहद गाजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धन धन मेघा[3] रोमावली ॥ धन धन कृष्ण ओढे कामली ॥ १ ॥ धन धन तू मात देवकी जह ग्रह रमया कमलापती ॥ २ ॥ धन धन वन खंड बिद्रावना ॥ जह खेलै श्री नारायणा ॥ ३ ॥ बैनवजावै गोधन चरै ॥ नामें के स्वामी अनन्द करे ॥४॥ (आद ग्रन्थ साहिब राग माली गौडा बाणी नामदेव शब्द १)

(६३) देवा पाहन[4] तारीयाले राम कैहत जनक न तरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तारीले गनका बिनरूप कुबजा व्यध अजामल तारीयाले ॥ चरन बधक जन तेऊ मुक्त भए ॥ हौं बल बल जिन राम कहे॥१॥ जपहीन तपहीन कुलहीन क्रमहीन ॥ नामें के स्वामी तेऊ तरे ॥ २ ॥ (श्री गुरू आद ग्रंथ साहिब राग गौड़ी बाणी नामदेवजी की शब्द १)

(६४) मन तन अती सोहणा[5] भई भेटिया कृष्ण मुरार ॥ (उक्त पता राग सूही की वार महाला ३ पौड़ी ६)

(६५) गुरमत कृष्ण गोबरधन धारे ॥ (उक्त पता राग मारू महाला १ सोहिले शब्द २० तुक १०)

(६६) दीनद्याल भए हैं जिऊं कृष्ण बिदर घर आया ॥ मिलयो सुदामा भावनि धार सभ कुछ आगै

टिपणी १ लक्ष्मी २ वसरी ३ मेडा ४ःईश्वर मूर्ति ५ सुन्दर

दाल[1] दुभंज[2] समाया ॥ (उक्त पता राग राग वसंत हिंडोल महाला ४ अष्टपदी शब्द १ तुक ४)

(६७) बिंद्राबन मन हरन मनोहर कृष्ण चरावत गऊरे ॥ जाको ठाकुर तुही सारंगधर[3] मोह कबीरा नाऊरे ॥ (उक्त पता राग गौड़ी बाणी कबीर जी शब्द ६६ तुक २)

(६८) हरि हरि करत पूतना तरी ॥ बालघातनी कपटहु भरी सिमरण द्रोपद सुत[4] उधरी ॥ केसी कंस मथन जिन किया जीयादान काली को दिया ॥ प्रणवै नामा ऐसो हरी जासु जपत भै अपदा टरी ॥ (उक्त पता राग गौंड़ बाणी नामदेव शब्द ५ तुक ३ और ४)

(६९) हरिके संग बसे हरिके लोक ॥ तन मन अर्पसर्वसु अरपियो अनहद सैहज धुन जोक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दर्शन पेख[5] भए निर बिखई पाए है सगले थोक[6]॥ आन बस्त सिऊ काजन कछुऔ सुंद्र बदन अलोक ॥१॥ स्यामसुंद तज यान जु चाहत जिऊँ कुष्टी तन जोक ॥ सूरदास मन प्रभ हथ लिनो दिनो इहु प्रलोक (उक्त पता राग सारंग बाणी सूरदास शब्द ८)

(७०) स्वैया ॥ जैसे तिनाबरतो अघको सुबकासुरको[8] बध जासुख फरियो ॥ खंड कियो सकटासुरको गह केसनते जिह कंस पछारियो ॥ सिंघजरा हूंको सैन मथियो अरु सँत्रहिको जिह्मानहि टारियो ॥ तिऊं त्रिजनायक साधनको पुन चाहत हैं सभ पापन टारियो॥ स्वैया । जो उपमा बृजनाथ की गाथ है अरु कवितन

टिपणी १ दलिद्र २ दुखनास ३ धनुषधारी विष्णु ४ द्रोपदी ५ देख ६ बहुत ७ और ८ कृष्ण समयके राक्षस

बीच करेंगे ॥ पापन की तेऊ पावक[1] मैं कबि स्याम[2] भनै कबहूं न जरैंगे ॥ चित सभै मिटहै तुरही छिन मैं तिन के अघ[3]ब्रिंद टरैंगे ॥ जे नर स्याम जू के परसे पगते नर फेर न देह धरेंगे॥ (श्री गुरू दसम ग्रन्थ साहिब श्री मुख वाक पातसाही १० कृष्ण अवतार कबिता अंक २४८० और २४८२

(७१) कहूं गीत के गवईया कहूँ बेन के बजया ॥ कहूँ नृत के नचया कहूं धेन के चरया ॥ कहूं लाखन लवईया ॥ कहूं सुंद्र कुमार हो ॥ (दसम ग्रंथ साहिब श्रीमुखवाक पातसाही १० अकाल उसतुत कबिता अंक १८)

(७२) आई पापण पूतना दोही थणी[4] विहु[5]लाय वहेली ॥ आय बैठी परवार विच नेहु लाय न वहोण बेली[6]॥ कुछड़ लए गुविन्दराय कर चेटक चितरंग महेली॥ मोहण मुमे पाई अनु बाहर आई गर्ब गहेली ॥ देह वधाई उचाई अनु तिह चर अठ नार अठखेली ॥ तिह लोआंदा भारदे चंबड़िया गलहोए गहेली। खाए पछाड़ वाग जाएपई उजाड़ धकेली ॥ कीती माऊं तुल सहेली (श्री भाई गुरदास जी की वार १० पौड़ी २२)

(७३) किसन लया अवतार जगमहि मा दस मास मसकंद वखाणै ॥ लीला चलत अचरज कर जोग भोग रलीआ माणै ॥ महाभारथ करवायो न कैरों पाडो कर है हैराणे ॥ इन्द्रादिक ब्रह्मादिक महमामित मिरयादन जाणै ॥ मिलीया टैहला गंडकै जग राजसू राजेराणै ॥ मंग लई हरि टैहल एह पैर धोए चर्णोदक माणे ॥ (श्री भाई गुरदासजी की वार २३ पौड़ी ६)

टिप्पणी १ अग्नि २ स्यामकवी गुरू १० का नाम शतभिषा के चौथे चरणमें होनेके कारण है ३ पाप ४ कुच । स्तन ५ विष ६ सेवा

(७४) किसन सहाई पांडवां भाए भगत करतूत विसेखै ॥ वैर भाउ चित कैरवां गणती गणन अंद्र का लेखै ॥ भला बुरा पर वंनिया ॥ भालण गरान दिष्ट सरेखै ॥ बुरा न कोई जुधिष्टरै दुरजोधन को भला न देखै ॥ कर वै होरासुं टोटी रेखै ॥ (श्री भाई गुरदास जी की वार ३१ पौड़ी ४)

(७५) ते श्री कृष्ण महाराज उसनू उपदेश कर फेर बरन आश्रमदा धर्म द्रिड़ाय करकै जुध द्रिड़ायासी (श्री भाई मनीसिंह कृत भगतरत्नावली साखी १३५ सं० १९५ वि० आफताब प्रेस लाहौरमें छपी का पृष्ठ १७७ पंक्ती १-२)

(७६) श्रीकृष्ण महाराजनू रूकमणी पूछियासी ॥ जो जगत तेरी महिमानू गावदा है ॥ तां तू किसदा ध्यान करदा हैं ॥ महाराज बोले ॥ जो मैनू गावदे हैन मै ओनानू गावदा है ॥ (उक्त पता साखी १३६ पृष्ठ १७९ पंक्ती १-२)

(७७) जिसने कृष्णा औतार धारकै लीला प्रसोत्तम होय विचरिया है ॥ सोई हिन्दूआंनू शस्त्र फडायकै ज्ञान ब्रत देवैगा ॥ (उक्त पता साखी १३८ पृष्ट १८१ पंक्ती ४-५) (शंका १) नवीनसिंह (अकाली) करते हैं कि आदि ग्रन्थसाहिब में कृष्ण जन्म अष्टमी (जन्म) का ही निषेध करते हैं ॥ यथा—सगली थीति पासिडार राखी ॥ अष्टमी थीत गोबिंद जन्मासी ॥ १ ॥ भरम भूले नर करत कचरायण ॥ जन्म मरण ते रैहत नाराइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कर पंजीर खवाइयो चोर ॥ ओह जन्म न मरै रे साकत ढोर ॥ २ ॥ सगल पराध देहिलोरोनी ॥ सो मुख जलउ जितु कहहि ठाकुर जोनी ॥ ३ ॥ जन्म

मरै न आवै जाइ नानक का प्रभु रहिओ समाइ ॥ ४ ॥ (आदि ग्रन्थ साहिब राग भैरो महाला ५ शब्द १) (समाधान) श्री गुरु ५ अरजन जी संसारी जीवों के सदृस श्रीकृष्ण जीका जन्म मरन नहीं मानते सो यथार्थ है श्रीकृष्णजी तो संसार में प्रगट हुए है भक्त रक्षा और मुक्तिके लिये ॥ यथा- विप्र सुदामें दाल दुभंज ॥ बश्रक उधारियो खंमप्रहार॥ कुबजा उधारी अंगुष्टधार बिदर उधारियो दासत भाए वस्त्र छीनत द्रोपती रखी लाज ॥ रे मन तू भी हरि ध्यायै ॥ (श्रीगुरु आदि ग्रन्थ साहिब राग बसंत महाला ५ अष्टपदी शब्द १ तुक ३) जन्म करने की मनाही की है जन्म दिन मनाने की (भक्ती) करने आज्ञा उक्त शब्द में और पूर्व लिखे २१ शब्दों में मौजूद है (शंका २) श्रीगुरु दसमजी दसमग्रंथ साहिब में कृष्णजी की निषेधी करते हैं ॥ यथा- मैं न गनेसह[1] प्रथम मनाऊं ॥ किसन बिसन कबहूं न[1] ध्याऊं ॥' (समाधान) उसमें नवीनसिंघों का बड़ा भारी अज्ञान है अज्ञानी (मूर्ख) यह शंका करते है जिसका निर्णय इस पुस्तक के अखीर उपदेश संख्या १० गुरु दसम जी के जीवन चरित्र प्रश्न उत्तर में विस्तार पूर्वक लिखा है वहां देखो दुबारे लिखना पिष्ट पेषण है॥ (शंका३) कृष्णजी तो व्यभचारी हैं उनका क्या मानना है ॥ (समाधान) (क) श्रीगुरु हरिगोविंद जी से कौलाने संतानके लिये प्रार्थना की और रामकृष्ण बड़े २ अवतारों के संतान होने का परमाण दिया ॥ यथा- कौलां बाच ॥ जेंजग नारकरे संग संगम[2] तांको दुख कहो कस थीजै ॥ राम औ कृष्ण भए जग मैं सुत होइ घने प्रभु और मुनीजै॥ चारसु पुत्र भए तुमरे पुन कन्या

टिप्पणी १ नकर देली दीपक न्यायसे दां का वाचक है २ भोग

भई मम ऐस करीजै ॥ भोग बिना सुत होत नहीं बिन भोग कहो जग कौन रहीजै ॥ (गुरू ६ हरिगोबिंद[1] बाच) जे जग मूड़ अधीन त्रिया नर राम हरी कह केल मचायो ॥ सुद्ध सदा सतनंद प्रमात्म ताहि को लेप न रंच दिखायो ॥ (गुरबिलास पातसाही ६ अध्याये ६ कबिता अंक ७१० और ७११) (ख) श्रीगुरू दसमजी से रूप कौर ने कृष्ण व्यभचारी बताया गुरू दसमजी ने श्रीकृष्ण जी को पूर्ण ब्रह्म जताया ॥ यथा-(रूपकौर बाच) कृष्ण पूज जग के भए कीनी रास बनाय ॥ भोग राधकां सो करे परे नर्क नहीं जाए ॥ (गुरू दसम बाच) पंजततवौ ब्रह्मकर किनी नरकी देह ॥ किया आप ही तिन बिखै स्त्री पुरुष सनेह (श्री गुरु दसम ग्रन्थ साहिब श्रीमुख वाक पातसाही १० चरित्र२१ कबिताअंक २० और २१) (शंका४) नवीनसिंह (अकाली) तो दसगुरूओं को ही प्रमेश्वर और अवतार मानते हैं देखो सिखों की अरदास ॥ (समाधान) दसों गुरू एक रूप हैं ॥ श्री नानक अङ्गद करमाना ॥ अंगद अमरदास पहचाना । अमरदास रामदास कहायो साधन लखा मूड़ नहीं पायो ॥ भिन भिन सभहूँ कर जाना एक रूप किन हूं पहचाना । जिन जाना तिनही सिध पाई ॥ बिन समझे सिध हाथ न आई ॥ (दसम ग्रन्थ साहिब में बचित्र नाटिक अध्याये ४ कबिता अंक ९ और १०) सो दस गुरूओंमें अंतम गुरूदसम जी आज्ञा देते हैं ॥ 'जे हम को परमेसर उचरहै ॥ ते सभ नर्क कुंड महि परहै ॥ मोको दास तवनका जानो ॥ यासै भेद न रंच पछानो (श्री गुरु दसमग्रंथ साहिब श्री मुख

---

[1] कृष्णजी

वाक पातसाही १० बचित्र नाटिक अध्याये ६ कविताअंक२२)
(नोट) इससे प्रगट है जो गुरू मतावलम्बी राम और कृष्ण-
दिकोंको छोड़ दस गुरूओंको परमेश्वर और अवतार मानेंगे
वोह सीध नरकमें जाएँगे ॥ कई एक नवीन सिंह (अकाली)
धोखा देनेके लिए "हमको" का अर्थ सर्व संसार करते हैं ॥
सो उनका मिथ्या अज्ञान है॥ क्योंकि उक्त पुस्तकमें "हमको,,
दसगगुरू अपने प्रति कथन करते हैं 'हम इह काज जगत
मो आए' (दसम ग्रंथ साहिब श्रीमुखवाक पातसाही १० बचित्र
नाटक अध्याय ६ कविता अंक ४२)

उपदेशसंख्या २

मूर्ति पूजा (भक्ती) और गुरमत धर्म्मग्रंथ ॥

(१) जिन राम कृष्ण आदि को ईश्वर गुरमत धर्म ग्रन्थ
मानते हैं उन ही की मूर्ति पूजन हिन्दू करत है ॥

(२) एह बिध सुनके जाटरो उठ भगती लागा मिले
प्रतख गुसाईंया ॥ धन्ना वडभागा (श्री गुरू आद
ग्रन्थ साहिब राग आसा वाणी धन्ना भक्त शब्द २ तुक ४
महाल्ला ५) नोट-इसकी टीका सिखोंके आद ज्ञानी श्री भाई
गुरदास जी अपनी पुस्तक वारों में लिखते हैं जो सिखों (गुरु
मत में परम परमाणीक है) "बामण पूजै[1] देवते धन्ना गऊ
चरावण आवै ॥ धन्नै डिठा चलत एह पूछै बामण
आख सुणावै ॥ ठाकुरदी सेवा[2] करै जो इच्छै सोई
फल पावै ॥ धन्ना करदा जो धड़ी मैभी देह इक जो तुध
भावै॥पत्थर इक लपेट कर दे धन्नेनू गैल खैहड़ा छड़ावै॥
ठाकुरनो नवालकै छाहरोटीलै भोग चड़ावै ॥ हथ जोड़

१ ईश्वर मूर्ति २ चरित्र ३ प्रार्थना

भिनता करै पौरी पै पै बहुत मनावै ॥ गोसाई[1] प्रतख[2] होय रोटी खाहि छाह मुह लावै ॥ भोले भाइ गोबिंद मलावै (श्री भाई गुरदास जी वार १० पौड़ी १३)

(३) दुध कटोरे गडवेपानी ॥ कपलागाइ[3] नामै दुहि आनी ॥ १ ॥ दूध पीओ गोबिंदेराय ॥ दूध पियो मेरो मन पतिआय ॥ नहीं तघरको बाप[4] रिसाय[5] ॥१॥ रहाउ ॥ सोयन कटोरी अंमृत भरी ॥ लै नामें हरी आगै धरी २ एक भगत मेरे हिरदे बसे नामें देख नारायण हसै ॥३॥ दूध पिआय भगत घर गिया नामें हरिका दर्सन भिया ४ (श्रीगुरु आद ग्रन्थ साहिब राग भैरो बाणी नागदेव शब्द ३) नोट इसकी टीका उक्त श्री भाई गुरदासजी करते हैं ॥ यथा — कंम किते पिऊ चलिया नाम देवनो आख सिधाया[6] ॥ ठाकुरदी सेवा करी दुध पी आवन कह समझाया ॥ नाम देव इसनानकर कपला गाए दुहकै[7] लैआया ॥ ठाकुरनू न्हवालकै चर्णोदक लै तिलक चड़ाया ॥ हथ जोड़ बिनती करै दुध पीयोजी गोबिंदे राया ॥ निहचो कर अराधिया होय दयाल दरस दिखलाया ॥ भरी कटोरी नाम देव ठाकुरनू दुध पीआया (श्री भाई गुरदास वार १० पौड़ी ११)

(४) हस्त खेलत[8] तेरे देहुरे[9] आया ॥ भगती करत नामा पकड़ उठाया ॥ १ ॥ हीनड़ी जात मेरी जादव-राया ॥ छीपेके जनमहि काहेको आया ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लै कमली चलयो पलटाइ ॥ देहुरै पाछै बैठा जाइ ॥२॥ जिऊं जिऊं नामा हरि गुण उचरै भगतजना को देहुरा फिरै।॥३॥(आद ग्रन्थ साहिब राग भैरों बाणी नामदेव शब्द ६)

---

१ ईश्वर २ प्रगट । ३ काली ४नाने को पिता कहते थे ५गुस्से ६ गया ७ चाकर ८ हसदा खेलदा ९ मन्दिर

नोट-भगत वाणी सटीकमें इस शब्दका अर्थ मूर्ति पूजन किया है

(५) सालग्राम बिप[1] पूज मना बहु सुकृत तुलसी माला ॥ राम नाम जप बेडा बांधहु दया करहु दयाला १ काहे कलरा[2] सिंचहु जन्म गवावहु॥ काची ढहगि दिवाल काहे गचलावह ॥ रहाउ ॥ कर हरि हर माल टिंड परोवह तिस भीतर मन जोवहु ॥ अंमृत सिंचहु भरहु कियारे तउ मालीके होवहु ॥ २ ॥ कांम क्रोध दुउकरहु बसोले[3] गोडहु धरती भाई ॥ जिउ गोडहु तिऊ तुम सुख पावहु किरतन मेटिआ जाई ॥ ३ ॥ बगुले ते फुन हंसला होवै जेतु करह दयाला ॥ प्रणवत नानक दासन दासा दयाकरहु दयालो ॥ ४ ॥ (आद ग्रन्थ साहिब राग वसंत महाला १ शब्द ६) नोट-इसका भावार्थ (टीका) उथान का परमाणीक पुस्तक "प्रथाइ आदि श्री गुरु ग्रन्थ साहिबजी के "जो वजीर हिन्द प्रेस अमृतसर में प्रथम वार छपे की पृष्ठ १२६३ पंक्ती ७ से १६ तक सालग्राम पूजन तुलसीमाला द्वारा रामनाम सुकृत कर्म मूर्ति पूजकोंको उपदेश है और काम क्रोधादिका निषेध है ॥ और दयालो शब्द से संपुट ब्राह्मण को संबोधन रूप उपदेश है जो मूर्ति पूजक था ॥ यदि नवीनसिंह सालग्रांम और तुलसीमालाका निषेध समझें तो रामनाम का भी निषेध साथ ही होगा जो आदि ग्रंथ साहिब में सद्गति कारक और मुक्ति दाता है ॥ और श्री गुरु नानक देवजी का जन्म ही मूर्ति पूजा (ठाकुरद्वारे) रक्षा के लिए ही गुरु मत में आपत वक्ता श्री भाई गुरदासजी बतलाते हैं ॥ यथा ॥ ठाकुर द्वारे ढाहिकै तिह ठौर मसीत उचारा ॥ मारन गौ गरीबनू धरती उपर पाप बिथारा ॥ पापेदा वरतिया वरतारा

टिप्पणी १ ब्राह्मण २ व्यर्थ भूमि ३ खोदी के यंत्र (औजार)

(श्री भाई गुरदासजी की वार १ पौड़ी २०)

(५) देवतियां[1] दरशन के ताई दूख[2] भूख[3] तीर्थ कीये ॥ खलड़ी खपरी लकड़ी चमड़ी सिखासूत धोती कीनी ॥ तूं साहिब हौ सांगी तेरा प्रणवै नानक जात कैसी (आद ग्रन्थ साहिब राग आसा महान्ला १ शब्द ३३ तुक १ और ४)

नोट—इस शब्द का भावार्थ (टीका) उथाना का सहित उक्त आदि ग्रंथ साहिब के प्रयाय पृष्ठ ५५८ पंक्ती १४ से २४ और पृष्ठ ५५६ पंक्त १ से ४ तक से प्रगट है कि गुरू नानक देवजी ने देवतेयों के दरशन के लिये तपस्या की और शिखा (बोदी) सूत (यज्ञोपवीत) ईश्वर प्राप्ती के लिये स्वांग धारण किया ॥ देखते भाई गुरदास जी अपनी वार १० पौडी १२ में हिन्दुओं की पूजन वाली मूर्तियें बतलाते हैं ॥

(६) क्या जप क्या तप क्या व्रत पूजा जाके हृदै भाव है दूजा ॥ १ ॥ रे जनमन माधो सियों लाईये चतुराई न चतुरभुज[4] पाईये ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परहर लोभ अर लोकाचार ॥ परहर कांम क्रोध अहंकार ॥ २ ॥ कर्म करत बंदे अहं मेव ॥ मिल पाथर की करह सेव[5] ३ कहु कबीर भगती कर पाया ॥ भोले भाए मिले रघुराया ॥ ४ ॥ (श्री गुरु आद ग्रन्थ साहिब राग गौड़ी बाणी कबीर भगत शब्द ६ महाला ५)

नोट—इस उक्त शब्द में 'चतुराई न चतुर भुज पाईये' और 'मिल पाथर की करह सेव' पद पड़ेहुए हैं येह सच्ची भक्ति मूर्त्तिपूजा सिद्ध करते हैं ॥ जिस से ईश्वर प्राप्ति हो मुक्ति होती है यही अर्थ उक्त प्रयाय श्री गुरू आदि ग्रंथसाहिब पृष्ठ ४५५ पंक्ती २ से १६ तक किये हैं ॥

टिपणी—१ ईश्वर पूजन की मूर्त्ति २ चोटी ३ यज्ञो पवीत ४ चार हाथों वाला ५ पूजन

(७) बारां[1] बर्ष बालपन बीते ॥ बीस बर्स कछु तप न कियो ॥ तीस बर्स कुछ देव[2] न पूजा ॥ फिर पछ-ताना बिरध भियो ॥ (आद ग्रंथ साहिब राग आसा बाणी कबीर भक्त शब्द १५ तुक १ महाला ५)

नोट—उक्त शब्द में स्पष्ट मूर्त्तिपूजन का उपदेश है ॥

(८) जे ओह अठसठ[3] तीर्थ नावै ॥ जे ओह द्वादस[4] सिला[5] पूजावै ॥ आद ग्रंथसाहिब राग गौंड बाणी भक्त रवि-दास जी शब्द २ तुक १)

नोट—उक्त शब्द से प्रगट है गियारां ज्योती लिंग (शिव मूर्त्तियां) बारवीं शालग्राम (विष्णुमूर्त्ति) पूजन फल निंदा करने से जाता रहेगा ॥

(९) एक समाले नाम को एक करंता ध्यान ॥ एक करता शिला पूज तीनो भगत समान ॥ (सौसाखी की साखी ६७ श्रीमुख वाक पात साही १०)

नोट—यह सौ साखी[6] 'सिखों में पर्म परमाणीक है जिस पर सिखों का पूर्ण आचरण है ॥ यथा—"राज करेगा खालसा आकी रहे न कोइ" जैसे उक्त वचनको नवीनसिंह (अकाली) पर्म परमाणीक मानते हैं वैसे ही मूर्त्तिपूजा (सच्ची भक्ति) को मानना चाहीये तो गुरू १० जी के आज्ञाकारी सच्चे सिख होंगे ॥

(१०) दरस ध्यान सरगुन अकालमूर्त्ति पूजा फल फूल चरणामृत बिश्वास है (गुरदास जी के कबित्त १२५)

नोट—इससे मूर्तिपूजा की विधी और फल स्पष्ट है ॥

टिप्पणी—१ वानक २ ईश्वर पूजन लिये मूर्त्तियां ३ अठाहट ४ बारां ५ मूर्त्तियां ६ सौसाखी अब मुकंमल और सौसाखी के नाम से 'अंमृत-सर छपी है "

(११) जैसे जैसे भाउ कर पूजत पदारविंद सकल संसार के मनोरथ पूजावई ॥ (गुरदासजी के कवित्त १७८)

(१२) किसी जड़ पदार्थ के सामने शिर झुकाना वा उसकी पूजा करनी सब मूर्त्तिपूजा है जैसे मूर्त्ति वालों ने अपनी दुकान जमाकर ठाड़ी की है वैसे ही इन लोगोंने भी करली है जैसे पूजारी लोग मूर्त्ति का दर्शन कराते भेट चढ़वाते हैं वैसे नानक पंथी लोग ग्रंथकी पूजा करते कराते भेट भी चढ़ाते हैं (आर्या समाज का धर्म्मग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ बार छपा पृष्ठ ३५८ पंक्ती १२ से १६ तक)

नोट—उक्त लेख से प्रगट है आर्या समाज के करता श्री स्वामीदयानन्द सरस्वती जी ने सिखों को ग्रंथसाहिब की पूजन द्वारा जड़ पूजक सिद्ध किया है और दसों गुरु साहिबों के जन्म विवाह मृत्यु स्थान और वस्त्र वर्त्तनादि सामान जहां २ पर हैं वहां २ उनकी पूजन (जड़ पूजन) होती है फिर ईश्वर पूजन को न मानना और निन्दा करना महान पाप और मूर्खता है ॥ जिसको विस्तार पूर्वक लिखूं तो एक पुस्तक पृथक ही बनजाए यथा—चोला ॥ १ ॥ (गलेका वस्त्र) की पूजा डेरा गुरू नानक जिला गुरदासपुर में जिस पर कुरान की बहुतसी आयतें लिखी हुई हैं जो मुसलमान बादसाह ने भेटा फकीर जानकर दीया ॥ २ ॥ पोथी पैहली पातसाही की और माला की पूजा हरसहाय नगर मुक्तसर समीप जिला फिरोजपुर में ॥ ३ ॥ पलंग गुरू अमरदास जी की पूजा मद्र ग्रांम में ॥ ४ ॥ चोला गुरू हरिगोविन्दजी की पूजा अंमृतसरमें ॥ ५ ॥ जामा (गले का वस्त्र) गुरू १० जी की पूजा नाभे रियास्त में ॥ ६ ॥ हरी साहिब (वहां बट्टे तोलने के पड़े हैं) उन की पूजा सुलतानपुर रियासत कपूरथले में ॥ ७ ॥ बेरी पूजा सुलतानपुर रियासत कपूरथले में ॥ ८ ॥ जंडी पूजा

उदोग्राम बटाले नजदीक जिला गुरदासपुर में ॥ ९ ॥ रीठा वृक्ष पूजा पहाड़ जिला नैनीताल में ॥ १० ॥ चबारा पूजा मनसूरपुर रियासत नाभा में ॥ ११ ॥ रोड़ (पथर) पूजा एमनाबाद जिला गुजरांवाले में ॥ १२ ॥ बेरी वृक्ष पूजा स्यालकोट में ॥ १३ ॥ कीलो (लकड़ी) पूजा गोयंद वाल जिला अंमृतसरमें ॥ १४ ॥ बावली (पानी) पूजा गोयंद वाल जि० अंमृतसर में ॥ १५ ॥ बेरी (वृक्ष) पूजा अंमृतसर दुख भंजनी के नाम से अमृतसर में ॥ १६ ॥ जोड़ा (जुतीं) पूजा सिधार ग्राम जिला लुदेहाना में ॥ १७ । नौ ग्रहों की पूजा माणक चौक गुरद्वारे के नामसे झबाल जिला अंमृतसर में १८ गरनावृक्ष पूजा झिगड़ ग्रांम जिले हुशयारपुर में ॥१९--२०॥ पगूड़ा[1] (छोटी पिंजी) की पूजा पटने में ॥ २१ ॥ ढोलक रबाब पूजा पटने में ॥ २२ ॥ एक सौ आठ हुकम नामेओं की पोथी जिसमों एक हुकम नामें में कई हुक्के मगवाए लिखे हैं उसकी पूजा पटने में ॥ २३ ॥ हांडी (मृत्तका का पात्र) पूजा पटने में ॥ २४ ॥ मौंजे (गुरू १० जी के बचपन की जुतीया) पूजा पटने में ॥ २५ ॥ झाड़ साहिब चुहड़ा पुजारी जिला लुदेहाना में ॥ इत्यादि थड़ा साहिब, मंजी साहिब, झंडा साहिबादि अनेक जड़ पूजाए होती हैं कहां तक लिखें ॥ (शंका संख्या१)मूर्त्ति पूजक भक्तोंको कुछ फल नहीं मिला इस कारण मूर्त्ति पूजन व्यर्थ है ॥ (समाधान) उक्त परमाणों से प्रगट है भक्त धन्ने जाट नामदेव छीपे को मूर्तिपूजा से ईश्वर प्राप्ति हुई जो मुक्ति हो जन्म सफल होगया और नामदेव को

१ सिखों की प्रमाणीक पुस्तक श्री गुरू तीर्थ संग्रह श्रीमान पं० तारासिंह ग्याली पटेयाली निवासी कृत्त पृष्ठ १०६ पंक्ती १९ और २० में देखा

ईश्वर प्रत्यक्ष मिला ॥ गुरु ५ जी मानते हैं ॥ "पाखंतण[1] बाज[2] बजाएला ॥ गरड़ चड़े गोबिंद आएला ॥ अपने भगत पर की प्रतिपाल ॥ गरड़ चड़े आए गोपाल ॥ (श्री गुरु आद ग्रंथसाहिब राग भैरों बाणी नामदेव शब्द १० तुक १६ और १७) (शंका २) गुरु ग्रंथसाहिब में तो मूर्त्तिपूजनका खंडन है ॥ यथा ॥ जो पाथरको कहितेदेव ॥ ताकी बिर्था होवे सेव[3] ॥ जो पाथर की पाई पाइ ॥ जिसकी घाल अजाई जाइ ॥ १ ॥ ठाकुर हमरा सद बोलंता ॥ सर्ब जियको प्रभु दान देता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतर देउन जाने अंध भ्रमका मोहिया पावै फंध ॥ नापाथर बोले नाकिछु देइ ॥ फोटक[4] कर्म निहफल है सेव ।२। जे मृतक को चंदन चडावै ॥ उसते कहहु कवन फल पावै ॥ जे मृतकको बिष्टा माह रुलाई तां मिरतक का क्या घट जाई ॥ ३ ॥ कैहत कबीर हऊं कैहत पुकार ॥ समझ देख साकत गवार ॥ दूजे भाए बहुत घर गाले॥ राम भगत है सदा सुखाले ॥४॥ (श्री आदग्रंथसाहिब राग भैरो बाणी कबीर) (समाधान) हिन्दू पत्थरको देव ईश्वर नहीं कहते कवी कालेया लाल या सफेद पथराय नमः कहकर नमस्कार पूजन नहीं करते ॥ ना पत्थरके पैरी पडते हैं कबीर जी का ठाकर सदा बोलने वाला ईश्वर है उसकी पूजन हो सक्ती है उक्त शब्द तो वेदान्त का है इसका मूर्तिपूजनसे कुछ सम्बंध नहीं ॥ (शंका ३) पाती तोरे मालनी पाती पाती जीउ ॥ जिस पाहन को पाती तोरे सो पाहंन निर जिउ ॥ १ ॥ भूलनी मालनी है एहु सतगुर जागता देउ ॥ ॥ १ ॥

१ पंख २ बाजकी सद्रिश अवाज ३ सेवा ४ निसफल ५ पत्र

रहाउ ॥ ब्रह्म[1] पाती बिष्णु[2] डाली फूल शंकर[3] देउ ॥ तीन देव प्रतख तोरहु करहु किसकी सेउ ॥२॥ पाखान घाड़ कै मूर्ति कीनी देके छाती पाऊं ॥ जे एह मूर्ति साची है तउ गड़नहारेको खाउ ॥३॥ भात[4] पहत अरु लापसी[5] ॥ कर करा[6] कसार भोगन हारे भोगिया ॥ इस मूर्तिके मुख छार ॥ ४ ॥ मालन भुली जग भुलाना ॥ हम भुला ने नाहि ॥ कहु कबीर हम राम राखे किरपा हरि राय ॥५॥ (आद ग्रंथ साहिब राग आसा बाणी कबीरजी) (समाधान) उक्त शब्द जड़ पत्र पत्र में ईश्वर व्यापक बताते हुए ॥ पाहन में व्यापक ईश्वर नहीं माना ॥ फिर 'ब्रह्मपाती बिष्णु डाली फूल संकरदेव " जड़ में ईश्वर मानलिया परस्पर विरोध है ॥ जो पाषाण घढ़ के मूर्त्ति कीनी देके छाती पाऊ " तुक के विचार से सारे शब्द की भ्रांती दूर हो जाएगी ॥ जब मूर्त्ति बनाने वाले मूर्त्ति बनाते हैं तो उनके मन में मूर्त्ति का भाव होता है पत्थर में से उस भाव की मूर्त्ति प्रगट कर लेते हैं छाती पर कोई पैर नहीं आता ॥ फिर कुतसित शंका करनी अज्ञान (मूर्खता) है उक्त शब्द में "एहु सतगुर जागदा है देऊ "तुक मौजूद है क्या सतगुर बगैर मूर्त्ति के जागता देउ निराकार होना वंध्या के पुत्र समान नहीं ॥ इत्यादि विचार पाठकगण स्वयं करें॥(शंका ४)हिंदू मूले भूले अखूटी जाहीं ॥ नारद किहा सा पूज कराहीं ॥ अंधे गुंगे अंध अंधार पाथर ले पूजह मुगध गवार ॥ सोई जां आप डुबे तुम कहां तरावण हार (आद ग्रंथ साहिब राग बिहागड़ेकी वार म० १) (समाधान) नारदजीका भक्ती सूत्र

---

१ ब्रह्माजी २विष्णु जी ३ शिव ४ चावल ५ कड़ाह प्रसाद ६ बूरा में आटा भुना मिला हुआ ७ करसे कुमारग

ग्रंथ है जिस भक्तीको आदि गून्थ साहिब श्रेष्ठ मानता है ॥यथा॥ (क) हरि अंमृत भगत भंडार है (आद ग्रन्थ सा० राग आसा महाला ४ छन्त शब्द १० तुक १) (ख) भाईरे भगत हीण काहे जग आया ॥ (उक्त पता राग श्री म० ३ अष्ट-पदी शब्द तुक १) (ग) हरिका भगत प्रगट नहीं छपै ॥ हरिकी भगत मुक्त बहुकरै (उक्त पता राग गौड़ी म० ५ बाणी सुखमनी अष्टपदी २ तुक ७) फिर श्री नारदजीके उपदेश शित्ताको आद ग्रंथ साहिब[1] श्रेष्ठ मानता है ॥ (क) नारद कैहत सुनत ध्रू बारक ॥ भजन माहि लपटाना (आद ग्रंथ साहिब राग बिलावल महाला ६ शब्द १ तुक २) (ख) जाए पूछहु सिमृति सासत[2] ब्यास नारद बचन सभ श्रेष्ठ करे (आद ग्रन्थ साहिब राग रामकलीकी वार महाल्ला ३ पौड़ी १० का श्लोक १) (ग) नारद बचन ब्यास कैहत हों ॥ सुकको[3] पूछहु भाई (उक्त पता राग मारू बाणी कबीर जी शब्द १ तुक ४) (घ) नारद मुनि उपदेशिया ॥ मथ भगवत गुनगीत कराया (श्री भाई गुरदास जी की वार १ पौड़ी ११) (ङ) नारद मुनि उपदेशिया ॥ नाम निधां न अमिओ[4] रस पीता (उक्तपता वार १० पौड़ी १) नोट— श्री नारदजीके उपदेश मानने वाले हिन्दूओं को अन्धे, गूंगे, अंध, अंधार, कैहना अज्ञान है क्योंकि नारदजी का उपदेश गुरू ग्रन्थ साहिब मानता है तो ग्रन्थसाहिबके मानने वाले अंधे, गुंगे, अंध अंधरा, हैं ॥ इत्यादि और अनेक शब्दोंकी व्यवस्था समझना विस्तार भय से ज्यादा नहीं लिखता ॥

—o—

१ बालक २ शास्त्र ३ शुकदेव ४ अंमृत

उपदेश संख्या ३ तीर्थ महात्म और गुरुमत धर्म ग्रंथ।

(१)सिरखुआहि पिअ हमलवाणी जुठा मंगि मंगि खहि॥ फोल फदीहत मुंहले निभड़ासा पाणी देख संगाहीं॥ भेड़ा वागी सिरखोहाइन भरीं अन हथ सुआही॥ माउ पीउ किरत गवायन टबर रोवन धाही॥ ओना पिंडन पतल किरया न दीवा मुए किथा ऊपाही अठसठ तीर्थ देनन ढोई ब्राह्मण अंनु नखाही॥सदा कुचील रहहि दिनराती मथौ टिके नाही॥ झुंडी पाइ बहन नित मरणै दड़दी बाण न जाही॥ लकी कासे हथी फुंमण अगो पिछी जाही॥ ना ओइ जोगी ना ओइ जंगम ना ओइ काजी मुंला॥ दया वगोइ फिरह बिगुते फिटा वते गलां॥ जीआमार जवाले सोई अवरु न कोई रखै॥ दानु- हुते इसनानहु वंजे भसुपई सिर खुथै॥ पाणी विचहु रत्न उपंने मेरु किया मधाणी॥ अठसठ तीर्थ देवी थापे पुर्वी लगै बाणी॥ नइ निवाजा नातै पूजा नावन सदा सुजाणी॥ मुया जीवदियां गतहोवै ज सिरपाई अैपाणी॥ नानक सिरखुथे सैतानी एनागालन भाणी॥वुठै होरी होय बिलावल जीआ जुग समाणी॥ वुठैं अंन कमाद कपाहा सभसै पड़दा होवै॥ वुठैं घाहु चरहि नितसुरही साधन दही विलोवै॥ तितघी होम जग सद पूजा पायै कारज

१ वाल उखाड़ने २ मैला ३ विष्ठा ४ दुरगन्धी ५ भय ६ अठाहट ७ अपवित्र ८ मृतुसमय इकत्रता ९ पात्र १० चौरासी ११ खाली १२ भस्म १३ समुद्रमथन १४ महातम समय १५ वर्षा १६ अनाज १७ ईख १८ कपास १९ घास (तिण) २० गौ २१ स्त्री २२ हवन

सोहै गुरु समुंद नदी सभसिखी नातै जित वडिआई ॥ नानक जेसिर खुथे नावन नाही तां सत चटे सिर छाई ॥ (श्री गुरु आद ग्रन्थसाहिब राग माझकी वार महाल्ला १ पौड़ी २६ का श्लोक १)

(२) गंगाजल गुरु गोबिंदनाम ॥ जो सिमरे तिसकी गत होवे ॥ पीवत बहुड़न जोन भ्रांम (आद ग्रन्थसाहिब राग भैरों महाल्ला ५ शब्द ८ तुक १)

(३) देवतिया दर्शन के ताई ॥ दूख भूख तीर्थ किये (आद ग्रन्थसाहिब आसा राग महाल्ला १ शब्द ३३ तुक १) (नोट) श्री भाई गुरदास जी भी इसकी पुष्टी करते हैं ॥ यथा—बाबा आया तीर्थी तीर्थ पूर्ब सभी फिरदेखे॥ (गुरदासजीकी वार १ पौड़ी २५)

(४) नावण पूर्ब अभीच॥ प्रिथम आराकुल खेत ॥ तुनीये जमन गए ॥ त्रीतीआ आए सुरसरी (आद गून्थ साहिब राग तुखारी महाल्ला ४ छन्द शब्द ४ तुक १ और ३ और ४ और ५)

(५) तीर्थ व्रत अरु दान कर मन मैं धरै गुमान ॥ नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनान (आदि ग्रन्थ साहिब श्लोक महाल्ला ६ श्लोक ४६)

कबीर भांग माछली सुरापान जो जो प्रानी खाहि ॥ तीर्थ व्रतनेमकिये ते सभे रसातल जाहि (आद गून्थ-साहिब श्लोक कबीरभगत श्लोक २३३)

(७) जे ओह अठसठ तीर्थ नागै करे निंद सभ

---

१ वाल उखाड़न २ सौ बार ३ राख ४ योनि ५ पूजन लिए ईश्वर मूर्तीयां ६ महत्मका समय ७ कुरुक्षेत्र ८ जमनाजी ९ गंगाजी १० हस्ती ११ सुक्खा १२ मीन १३ मदिरा १४ निष्फल

बीर्थी जाणै (आद गून्थसाहिब राग गौंड बाणी रवदास भगत शब्द २ तुक १)

(८) अथ कबीजन्म कथनं मुरपित[1] पूर्बकियस पयाना ॥ भांत भांत के तीर्थ नाना ॥ जबही जात त्रिबेणी[2] भए ॥ पुंन दान दिनकरत बतए ॥ तही प्रकाश[3] हमारा भेयो ॥ पटने शैहर बिखै भवलेओ[4] (दसम गुरू गून्थ साहिब श्रीमुखवाक पातसाही १० बचित्र नाटिक अध्याये ७ कबिताअंक १ और २) नोट—उक्त परमाणोंसे प्रगट है गुरू १० जी के जन्मका कारण तीर्थ स्नानका फल है ॥

(९) सारस्वती नात है पूर्ब पाप उत्तारन को (दशम गूथ साहिब श्रीमुख वाक पातसाही १० चंडी चरित्र अध्याये ३ कविता अंक ६७)

(१०) धंन धंन संजोग है अठसठ तीर्थराज परागे (श्रीभाई गुरदासजीकी वार ६ पौड़ी १७)

(११) लख दरयाओ समुंद बिच लख तीर्थ गंगा ॥ (श्री) भाई गुरदासजीकी वार १३ पौड़ी १०)

(१२) तीर्थनाते पाप जान ॥ पतित उधारण नाम धराया (गुरदास वार २३ पौड़ी २)

(१३) गंगाजल मुक्त प्रवाह प्रसाद है (श्री भाई गुरदासजीके कविता में कबित्त ४५७)

(१४) पोहकर[5] तीर्थ सतगुर गए॥ बाबाघाट[6] सिध जह नहए (सौ साखी की साखी ५७ श्रीमुख पातसाही १०)

(१५) कीर्त्तन भजन गंगा जलधार ॥ सोई मुक्त जिन भजा मुरार (उक्त पता सौसाखी की साखी ६४)

१ गुरू १० २ प्रयागराज ३ गर्भाधान ४ जन्म ५ पुष्कर ६ गुरू९ तेगबहादर का घाट

(१६) गंगा पापादूर हित क्या नाया क्या चेत (उक्त पता सौसाखी की साखी ७१)

(१७) नीगम बोध तीर्थ अधिकतां तीर्थ प्रताप (उक्त पता सौ साखीकी साखी ८२) नोट गुरूमतमें गंगादि तीर्थों की नकल जलस्थाई तीर्थ अनेक हैं (अंमृतसर में तालाब तरनतारनमें तालाव, गोयन्द बाल बावली साहिब अनेक कूंए और बपालिआं हैं जिनके स्नानका फल माना जाता है। (शंका) गुरू महाराज तो तिर्थोंका खण्डन करते हैं॥ यथा-अंतर मैलु जे तीर्थ न्हावै तिसु बैकुण्ठ न जाना ॥ लोक पतीणे कछू न होवै नाही रामु अयाना॥१॥ पूजहु राम एकु ही देवा साचा नावण गुरकी सेवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जलके मजन जे गति होवै नित नित मेंडुक नावहि॥ जैसे मेंडुक तैसे ओइ नर फिरि फिरि जोनी आवहि॥ २ ॥ मनहु कठोरु मरै बानारसि नरकुन बांचि आजाई॥हरिका सन्तु मरै हडंबत सगली सैन तराई ॥ ३ ॥ दिनसु रैन बेदुन ही सोसत्र तहा बसै निरङ्कारा ॥ कहि कबीर नर तिसहि धिआवहु बावरिआ संसारा ॥ (आद ग्रन्थ राग आसा कबीरजी) उत्तर-उक्त शब्द किसी गुरूजीका नहीं कबीरजीका है जो गङ्गादि तीर्थोंको महात्म सैहित मानता है॥ यथा-"हज हमारी गोमती तीर"(आद ग्रन्थ आसाबाणी कबीरजी शब्द १२ तुक१) आपन देह चुरू भर पानी तह निंदै जह गङ्गा आनी (आद ग्रन्थ साहिब राग गौड़ी बाणी कबीरभक्त शब्द ४४ तुक २) गङ्गाके संग सलता बिगरी सो सलता गंगा होइ निबरी (आद ग्रन्थ साहिब राग भैरो कबीरजी शब्द ५ तुक१)कबीर-भांग माछली सुरापान जो जो प्रगनी खाहि।

१ स्मरण

तीर्थ व्रत नेम कीयेते सभै रसातल जाहि (आद ग्रंथ साहिब कबीर श्लोक २३३) गंग गुसाइनि गहिर गंभीर॥ गंगाकी लैहरि मेरी टुटी जञ्जीर (आद ग्रन्थ सा० राग भैरो वाणी कबीरजी शब्द १८ तुक १ और २) "अन्तर मैल जे तीर्थ न्हावै तिसै बैकुण्ठन जाना" जिसके अन्तहकरणमें मल है वोह बैकुण्ठ नहीं जासक्ता क्यों कि तीर्थों पर पाप करनेसे दुगना पाप होता है नावन चले तीर्थी मन खोटे तन चोर॥ इक भौ लथी नाहर्तीआं दो भउ चड़ीआं होर (आद गून्थ साहिब) 'लोक पतीणे कछु न होवै नाही राम इयाना' लोक परचानेसे कुछ फल नहीं होता क्योंकि राम तो प्रेमसे तीर्थ सनानका फल देता है ॥ 'पूजो राम एक ही देवा ॥ साचा नावण गुरकी सेवा' रामकी पूजाका उपदेश है सच्चा सनान गुरकी सेवा बताई है सो आद गून्थ साहिबमें गुरू दरयाओ और समुद्र माने हैं जो सर्व तीर्थोंसे बड़े तीर्थ हैं ॥ यथा—

(१) 'गुर दरआउ सदा जलु निरमलु मिलिआ दूर मन मैलु हरै' (आद गून्थ सा० राग प्रभाती महाल्ला १ शब्द ६ तुक २)

(२) गुरू समुन्दु नदी सभिसिखी नातै जितु वडिआई (आद गून्थ सा० राग माझी वार महाला १ पौड़ी २६ का श्लोक१) नोट—गुरू गंगादि दरियाओं नदीयें और समुन्द्र है जिसके सनानसे बिसेष फल मिलेगा नहीं गुरू गून्थ साहिब झूठा सिद्ध होगा ॥ 'जलकै मजन जेगति होवै नित नित मेंडक नावहि ॥ जैसे मेंडक तैसे ओइ नर फिर फिर जोनि आवहि॥' महात्मसे बगैर जल समझ गङ्गादि तीर्थोंमें जो स्नान करेगा उसकी मुक्ती नहीं होगी मेंडक सदृश 'मनहु कठोरु मरै बनारस नर्क न वाचिया जाई' मनसे कठोर (पापी) जो हो वोह नरकसे नहीं बचेगा ॥ आगे शब्दमें मन

शुद्धीका फल है जो तीर्थ स्नानादि शुभ कर्मोंसे मल दूर हो श्रेष्ट गती मिलती है ॥ आगे शब्दका ऐसे ही शुभकर्म और पुराण निश्चयका फल पाठक स्वयं अर्थ समझें ॥

(१) जे मोहा[1] का घरू मोहे घरमोहे पितरी देई ॥ अगै[2] वस्तु सिञ्झाणी[3] ऐ पितरी चोर करेइ ॥ वढीअह हथ दलालके[4] मुसफी[5] एह करेइ ॥ नानक आगे सो मिले जो खाटे घाले देइ (आद ग्रंथसाहिब राग आसा की वार महाला १ पौड़ी १७ का श्लोक १) नोट इस उक्त शब्द का अर्थ श्री गुरू अरजन देवजी ने अपने सिखों को उपदेश किया है ॥ यथा-सेठा सुभागा ते उदवंगा अराड़े चुहणीआं[6] विच रैहदेसन ॥ ओना अरदास कीती जोऐथे पितरा देन-मित दिंदेहै ॥ ता पितरानू पौहुचदाहै के नहीं ॥ ता बचन होया पहुचदा है "गुरू नानकजी भी बचन कीता है "जे मोहां का घर मोहे घरूमोहि पितरीदेइ ॥ अगै वस्तु सिञ्झाणी ऐ पितरी चोर करेइ॥ वढीअह अथ दथ हलालके मुसफी एह करेइ ॥ नानक आगे सो मिले जो खाटे घाले देइ" तां ओना किहा भलाजी एऽहता ऐथे प्रथवीते ब्राह्मणनु खुआवेगा ते पितर तां स्वर्ग विच के नर्क विच के किसे जून विन होवेंगे ओनानू क्योकर अहार[7] पौहुंचेगा ता बचन होया जदों पितरा देदिनआवदेहैन ॥ खत्री ब्राह्मण होर वर्णा दे पितर ब्राह्मणां विच आंन परवेस करदेहै ॥ ओह आहर ओनानू पौहुचदा है अते होर लड़का जोपतंग चड़ावदा है ते पतंग आकास मै होती है॥डोर बालकके हथ होती है ता उस डोरी देमार्ग जगायके दीपक पठाइ

१ गरीबों २ पितरी लोक ३ पैहचानी ४ जो फल चाहे ५इनसाफ ६ जिला लाहौर में है ७ भोजन

देताहै ॥ तां पतंगनू जाए प्रास हुंदाहै ॥ तैसे पित्तरकिसे सथान होते हैं ते ओनादी मोहदी डोरी पुत्रामैं बधी होती है उस मोह द्वारा प्रसाद पित्तरानू प्रापती हुंदा है (सिख धर्म्मकी परमपरमाणीक पुस्तक भक्ता रत्नाबली भाई मनीसिंह कृत साखी ७२)

(२) ओना पिंड[1] पतल[2] न किरिया[3] दीवा मोए किथा उपांही ॥ दांन हुले इसनानह गांजे भसपई सिर खुथे (आद ग्रन्थसाहिब राग माझ की बार महाला १ पौड़ी २६ का श्लोक १ में) नोट—श्री गुरु आद ग्रन्थ साहिबजी के गुरुगिरार्थ कोष में उक्त शब्द से मृतक श्राद्ध सिद्ध किया है ॥ यथा माझ बार के पचीवे श्लोक में जैनमत की निंदा विखे "ओना पिंड पतल कृयान दवा मूए किथा उपाह,, ऐसे आदगुरोंने श्राद्ध हीनो की निंदा करने से श्राद्ध का विधान किया है याते श्राद्ध करना चाहीये "देखो गुरु गिरार्थ कोश महाराजा पटे आले का छपवा कर धर्म्मार्थ बांटा जिलद अक्षर ३ से ण तक पृष्ठ २५५ कालम २ पंक्ती १६ से २१ तक और पृष्ठ २५६ कालम १ पंक्ती १ से ३ तक)

(३) अंतेसन[4]गुर बोलिया मैं पिछै कीरतन[5] करुअहु निरबाण[6] जीउ ॥ केसोगोपाल पण्डित सदअहु हरि हरिकथा पड़ह पुराणजीउ ॥ हरिकथा पड़ीऐ हरिनाम सुणीऐ वेबाण हरि रंग गुर भावए ॥ पंडि पतल क्रिया दीवा फूल हरिसर पावए ॥ हरि भाया सति गुर बोलिया ॥ हरि मिलिया पुरुष सुजाण जीउ ॥ रामदास सोढी तिलकदीया गुरु शब्द सच निसाण जीऊ (आद

---

१ श्राद्ध २ स्नान ३ खाली ४ मृत्युसमय ५ प्रशंसा ६ पक रस ७ ब्राह्मण ८गरुड़ पुराण९ श्री गंगाजी

ग्रन्थ साहिब राग रामकली वाणीसद पौड़ी ५) नोट- इस उक्त शब्दका अर्थ श्री गुरु आद ग्रंथ साहिबजीकी डिक्स- नरी (पर्याय) में ऐसे कीयाहै अंते-अंत समिय वचन एहु निरबाण-इकरस केसो गोपाल नाम पंडितनू गरड़ पुराणमें जो हरि प्रकारदी कथा है सो पड़ह बेबाण-सानू हरे रंगदा भावए है दीवा-दीवा करेयो ते फूल हरिसुरि (गंगा) में हरि-नू जो भाया सो सतगुर बोलिया सोढ़ी-नू शब्द उपदेश रूपी सच्चा निसाण (झंडा) वा परवाना (देखो श्री गुरु आद ग्रंथ साहिबजीके "- याय "जो प्रथम बार वजीर हिन्द प्रेस अमृतसर छपेका पृष्ठ १०५५ पंक्ती ७ से ३३) उक्त शब्द के अर्थ भ्राती निवार्णा प्रश्न उत्तर) प्रश्न-कीरतन करआवहु निरबाण जीउ ॥ ईश्वर भजन की उक्त शब्द में आज्ञा है ॥ उत्तर-उक्त शब्द में निर- बाण पद के अर्थ ईश्वर और ईश्वर भजनके नहीं होसक्ते इक रसके उक्त पर्याय पृष्ठ १०५५में किए हैं॥ क्योंकि निर्वाण नाम ईश्वर का कहीं नहीं ॥ प्रश्न-केसो गोपाल नाम ईश्वर का है किसी देहधारी पंडित का नहीं॥ उत्तर-केसो गोपाल नाम इस जगह ब्राह्मण पंडितका है ईश्वर का नहीं ॥ यथा-(क) उक्त पर्याय पृष्ठ १०५५ केसो गोपाल नाम वाले पंडित नू अर्थ किया है (ख) केसोगोपाल-भाषाशब्द ॥ गुरु अमरजी की सभामें एक गुरु का पंडित जिसके प्रथाइ "केसोगोपाल पंडित सदि- अहु ॥ हरि हरि कथा पड़हि पुराणजीउ ॥ जोती जोत समाव समें कथा हेत गुरु अमरजीने आज्ञा करी है (श्री गुरु ग्रन्थसाहिबजी का गुरु गिरार्थकोश अक्षर ३ से ण तक पृष्ठ ४५६ कालम २ पंक्ती १५ से २१) (ग) फरीद कोट टीका आद ग्रंथसाहिब में केसोगोपाल शब्द का अर्थ पण्डित ब्राह्मण किया है ॥ (घ) द्विज केसो गोपाल कही विद्या

निपनाई ॥ आवैं चौथेयाम दिन इतिहास प्रकासै ॥ सुनैं सतगुर वैठके संगत इक पासै (सूर्यप्रकाश रास ३ अंसू ३० में) (ङ) सुनै कथा दिन ढरै बिसालू पंडित इक केसो गोपालू ॥ निगमागम पुराननकेरी ॥ कथा सुनावै नित प्रति टेरी (पंथप्रकाश सं० १६४६ वि० का छपा कथा गुरु ३ में) (क) पिछले पहरेके समय केसोगोपाल तो उपनिषद् आदिक शास्त्रादी कथा सुनदेसन (देखो खालसा त्वारीख कथा गुरु ३ में) (ख) गुरु ग्रन्थ साहिबमें मृतक श्राद्धका मूल पंडित केसोगोपाल का प्रत्यक्ष प्रमाण॥ जो उनकी तेरवी पुस्तके ब्राह्मण[1] गोयंद वाल जिला अंमृतसर में अबतक मौजूद हैं॥यथा-१केसो गोपालका बालमीक २ बालमीकका नथमल ३ नथमलका तखतराम ४ तखतरामके चारपुत्र तारा, चंद, निरोत्तम, लछमन, ५ तारे का जेठ (बाकी तीन की वंसावली बिस्तार भयसे छोड़ता हूँ) ७ जेठका दुरगा दत्त ८ दुरगादत्त का सौहजू ९ सौहजू का चंदराम १० चंदरामके दो पुत्र ठौकुर और जोध११ठौकरके तीन पुत्र, देवीदत्त,गोविंद दुलोराम, १२ देवी दत्तके छजूराम १३छजूरामके सोमाराम, विंदराबन,निरंजनदास, लभूराम, १३ गोविंद के दूसरेपुत्र मायाधारी अरु सालग्राम १३ गोविंद के तीसरे पुत्र दुलोराम के नत्थूराम, ब्रह्मानन्द ॥ १३ ॥ नोट-येह पं० केसोगोपाल की १३ पुस्त में ब्राह्मण ब्रह्मानंद और सालग्राम अब तक गोयंद वाल में मौजूद हैं फिर केसोगोपाल का अर्थ ईश्वर करना अज्ञान और पाप है ॥ और दो कार्णों से केसोगोपाल पंडित जरूर मानना पड़ेगा ॥ यथा (१) जैसे रामचन्द्रजी ईश्वर अवतार हैं

१ गुरु ग्रन्थ [illegible] में लिखे केसो गोपाल पंडित की वंसावली

आज कल अनेक लोगोंका नाम रामचन्द्र है इसी प्रकार नानक जी गुरू हुए हैं आज कल अनेक लोगोंका नाम नानक है ॥ क्या केसो गोपाल नाम ईश्वर का हो तो ब्राह्मण का नहीं होसक्ता है अवश्य होसक्ता है ॥ (२) उक्त प्रमाण संख्या ३ अंतेसतगुर बोलिया में दोनाम आये हैं केसो गोपाल और रामदास सोढी॥ सोनाम रूढ़ी होते हैं यदि कलजुगी अकाली सिंह केसोगोपाल नाम यौगिक अर्थद्वारा बदलेगे तो रामदासजी का नाम भी जरूर बदलना पडेगा "रामयस्यदासः सो रामदासः "चौथी गुरयाई रामदास को मानेंगे तो केसोगोपाल पण्डित कथा करनेवालेको जरूर मानना पड़ेगा ॥ जिससे मृतक श्राद्ध सिद्ध है नहीं तीसरी गुरयाई तक गुरयाई समाप्त होती है॥ (प्रश्न) पिंड पतल क्रिया दीवा ईश्वर नामका समझना ॥ (उत्तर) ईश्वर नाम भी एक कर्म है,जैसे ईश्वर नाम पौहुंचेगा वैसे पिंडपतलादि कर्म पौहुंचेगा ॥ और श्रीगुरू नानक देवजी पिंड, पतल, क्रिया, दीवा, मृतकोंके लिये कथन करते हैं "ओना पिंड पतल क्रिया न दीवा मोए किथा उपाही,, देखो आदि ग्रन्थसाहिब राग मांझ जो प्रमाण संख्या २ में पूर्ण पतेसे शब्द लिखा है ॥

(३) नमो प्रेत अप्रेत देवेसू धर्मे (श्री गुरू दसम ग्रंथ साहिब श्रीमुख वाक पात साही १० जाप साहिब पौड़ी ५५) नोट–गुरू दसम जी आज्ञा करते हैं नमो (नमस्कार) देव (देवते) अप्रेत (पितर) प्रेत (मृतक) को करनी चाहीये जो श्राद्ध मे मुख्य कर्म है

(४) क्रिये देव अदेव श्राद्ध पितं (श्री गुरू दसम ग्रन्थ साहिब श्री मुखवाक पातसाही १० अकाल उस्तुति कबिता अंक १४८) नोट- गुरू १० जी बतलाते हैं कि ईश्वर ने रचे देव दैत्य और पितर जिनके श्राद्ध जरूर करने चाहीये.

(५) पितरन पख[१] पहुचा आई॥ पितरन की थित तिन हुं सुन पाई ॥ त्रिया[२] सो कहा श्राद्ध नहीं कीजै ॥ तिन इम कही अबी करलीजै॥सकल श्राद्ध को साज बनायो॥ भोजन समै दिज[३]न को आयो ॥ पती इम कही काज त्रिया कीजै ॥ इनको दछना कछु नही दीजै ॥ त्रियो आखा मैं ढील न करहूं॥टका टका.बिराजत दैहूं (श्री गुरू दसम ग्रन्थ साहिब श्री मुख वाक पात साही दस चरित्र ४०) नोट—यह चरित्र अचल देव जाट और उसकी स्त्री दिलजानमतीका है जो मृतक श्राद्ध सिद्धी में है जिससे प्रगट है गुरमत में श्राद्ध करना जरूरी है इस विधिसे

(६) एक बेर गुरू १० जीके श्राद्ध होया ॥ पंडित पाधे ब्राह्मण इकट्ठे किये श्राद्ध दी धर्म्म सांत करी ॥ मोहर दी दखणा[४] देकर॥सेहजा गऊ घोड़ा गैहणे जनाने मरदाने दिये (देखो सौसाखी की साखी ७२ श्री मुखवाक पात साही १०)

(७) गुरू १० जी सभलोकांनू बोले श्राद्ध विधदू रहैगी ॥ कोई विरला ही पात्र होगा ॥ उधार पितरादा अथवा तीर्थादा श्राद्ध करहुं दा है (उक्त पता सौसाखीकी साखी ७२)

(८) बोल वाक गुरू जी पातसाही १० ब्राह्मण दस दिन सूत[५]की माता दूगणी मान ॥ खत्री बारा, वैस इक

---

१ पितरपक्ष २ स्त्री ३ ब्राह्मण ४ दक्षिणा ५ सूतक ग्रन्थ साहिबमें भी है ॥यथा॥ नानक सूतकु एवन उतरै गियान उतारै धोइ ॥ मनका सूतक लोभ है जिहवासूतक कूड़ ॥ अखी सूतक वेखणा पर त्रिय पर धन रूप॥कंनी सूतक कंनपै लाइ तबारी ख हि॥ नानक हंसा आदमी बधे जमपुर जाहि ॥ सभो सूतक भर्म है दूजे लगै जाइ (आद ग्रन्थ साहिब राग आसा की वार महाला१ पौड़ी १८ का श्लोक १-२-३)

पांच, सूद्र तीस पहचान,॥ गऊ दस बारा महींका दुध-देवन ही भोग ॥ श्राद्ध कराए जग नहीं खावत भवका रोग ॥ सूतक जीते पातकी पातक कटे न सूत अग्न कटै दोनो दुखी चिप्र अग्न मैं कूत ॥ सूतक पातक गएबिन ॥ दानदेइ द्विजलेई ॥ बानर ग्रही दाता नर्क ॥ मानुख देह न सोइ (उक्त पता सौसाखीकी साखी ७२) नोट—उक्त पर-माण संख्या ६-७-८—सौसाखीकी साखी ७२ से प्रगट है गुरू १० जीके श्राद्ध होना और गुरूजीने पितर श्राद्धकी आज्ञा देनी और सूतक पातकको माननेका हुकमे देना सिखोंकी पर-माणीक पुस्तक सौसाखीसे प्रकट है ॥

(९) अंतबार कुसतिल जिमी बैठत बचन सुनीत॥ सिखन पंडित आनके सोढी अलघर कोट ॥ क्रिया कर्म सगली करी सुध दे गिया सलोक (उक्त पता सौसाखी की साखी ९६) नोट—सिखोंनै गुरू दसजीकी मृत्यु पर क्रिया कर्म मृतक श्राद्ध किया ॥

(गुरमत इतिहास ग्रन्थ और मृतक श्राद्ध)

(१०) जद श्री गुरू जी गया पर गए ता वाले के पूछने पर यह उपदेश सिगा। यथा—जो प्राणी इस स्थान बिखे आय कर पित्रर श्राद्ध जा पिंड पतल शास्त्रानुसार कर।वैगा उसके संपूर्ण पितरोंका उधार होवैगा ॥ और तिस को भी खूब फल प्राप्ती होवैगा (जन्मसाखी श्री गुरू नानक देव भाई बाले वाली साखी ८४)

(११) जदकालूजी[1] नै देह त्यागी वेद रीत ते कुला रीत देस चल सभ कीना और श्री गुरू नानक जी नै माता[2] जीका संस्कार वेद रीति कुलारीति देस चाल दे

१ गुरू नानक जी के पिताका नाम २ गुरू १ की माताका नाम त्रिपता है

अनुकूल का। बड़े दान पुंएय करे (उक्त श्री गुरू नानक जी की जन्म साखीकी साखी १८२)

(१२) श्री चोणी[1] जी सुणेया कि गुरूजी समावण लगे हैन ॥ ता छेती ही जाइ चरणा पर मथा टेकिया ॥ तेहथ जोड़के अरदास कीती हे दीनानाथजी॥कल महता[2] जीका श्राद्ध है ॥ मैं पीठी पीस रही हां ॥ जे श्राद्ध कर के जां देतां अच्छी बात है ॥ नहीं तां आपदी जो मरजी सोई करीये ॥ एह कह कर लगी बैराग करन ॥ तां श्री बाबेजी केहा चोणीये[1] चित्त थाए रख असी कल श्राद्ध करके जामागे ॥ तूंमनमें चिंता न कर॥ असी दसमींको चलांगे ॥ तां श्री वाबेजी सभ समग्री इकत्र करवाय छड़ी अते अष्टमी को कालूजीका श्राद्ध कर वाया ॥ (उक्त गुरू नानक जी की जन्म साखी वाले वालीकी साखी १८३) नोट-उक्त श्राद्ध प्रसंग श्री गुरू नानक देवजीकी सर्व जन्म साखीओंमें लिखा है जो १८ प्रकारकी मेरे देखनेमे आई है उनमें मुख्य सूर्य प्रकाशका पैहला हिसा नानक प्रकाश मे ऐसे लिखा है ।। चौपाई ॥ सुन कर दीन[3] भई इह बाणी लता[4] बातते[5] जिऊ कुमलानी ॥ हाथ बंद हुए निमर बसाला ॥ बोली वचन सुनो प्रभ चाला ॥ भलके है श्राद्ध तोहि ताता[6] जिऊ भावे तिऊ कर सुख दाता ॥ चौपाई ॥ अष्ट[7] दिवस प्रकास्यो भाना[8] भोजन भए त्यार बिधनाना ॥ धर्म शालसे उठ सुखरासा गए सुलखणी केर अवासा॥ बिधसो लगे करावन श्राद्ध ॥ जिह मघराजह धर्म्म

१ गुरू नानकजी का स्त्रीके पिता गोत्र होनेसे नाम चोणी था ॥ २ गुरू नानकजी के पिता का नाम ३ दीनता ४ बेल ५ गरमी ६ पिता ७ अष्टमी ८ सूर्य

अगाधू ॥ (नानक प्रकाश अध्याये ५५ कविता अंक८७और८७)

(१३) गोयंद बाल दर्शन करो जिस दिन होए श्राद्ध ॥ अमरदास कार्ण कर्ण पूर्ण पुरुष अराध (गुर बिलास पात साही ६ अध्याये ६ कविता अंक ३) (नोट— गुरु ३ अमरदास जीका सदैव साल दर साल श्राद्ध होता है

(१४) बाबा श्रीचंदजी सं १६०० वि० को नगर ठठे सिंध यात्रा करने गए असू वदी १० को गुरु नानक जीका श्राद्ध कीता श्रीचन्दजीने (देखो पुस्तक गुरु उदासीन मत दरपण श्रेष्ठ ३८७ पंक्ती १ और २)

(१५) चंदनकी[1] गुरु चिता बनाई ॥ उपर महादेव[2] देह पाई ॥ श्री गुरु निज कर लाबू[3] लायो सगल रिति[4] गुरु आप करायो ॥ कपाल क्रयाकर गुरु न्हाए दै तिलांज[5] दिवानमें आए ॥ दुतिया दिवस गुरु पुसप[6] चनाए ॥ गंगा को सिख पास पठाए (गुरु बिलास पात साही ६ अध्याये ७ कविता अंक २६ और ३१) नोट—उक्त कर्म श्री गुरु अरजन देव जी नैं अपने बड़े भाई महां देवजीकी मृत्यु पर मृतक कर्म स्वयं कीया ॥

(१६) प्रथम गुलाब सनान कराई ॥ पुन गंगा जल सो अनवाई ॥ दीवससातमें फूलन[6] पाई ॥ बैठे हुते किरिया सुरराई ॥ सभ मिल हरन चर्मभो[7] पाई[8] ॥ विष्णु-पदी प्रभ दीए पठाई ॥ देवीदास[9] पुन गरड़ पुराना[10] दिन तेरहमें पूरन ठाना ॥ करी क्रिया शुभ धर्म्म शांत ॥ (देखो जाप साहिब की टीका कृत संत निहाल सिंह चक्र धर

१ चिखा २ गुरु अरजन का भाई ३ अग्नी ४ हिंदू रीती सिर फोड़ना ५ तिलाज ली (पितर तरपण) ६अस्थी (हड्डी) ७ मृग-छाला ८ गंगाजी ९ १ हिंदू रीति कर्म १० सतारी

चरित्र चारु चंद्रका जापसाहिब जो अँगलो संस्कृत प्रेस लहौर सं१६५५ वि० में छपेका पृष्ठ ४१) नोट-यह श्रीगुरु दसमजीने अपने पिता गुरु तेगबहादरजीकी मृत्युपर मृतक क्रिया कर्म किया जिसकी पुष्टी सिखोंके परम परमाणीक पं० तारा सिंह ग्यानी पटे याला निवासी जिनकी आदि ग्रंथ साहिब की भक्त बाणी श्रीराग गौडी पर टीका और गुरु गिरार्थकोश गुरुमतमें प्रसिद्ध और परमाणीक है उनकी लिखी श्रीगुरु तीर्थ संग्रह देखो यथा॥ अनंदपुर अकालबुंगा जहां बैठके गुरु गोविंदसिंहजीनै गुरुतेग बहादर साहिबकी क्रिया कराई नाम उसथान का अकाल बुंगा है ॥ यह देहरे साहिबके समीप है ॥ इहां संबत १७३२ वि० नौ ग्यारा महीने अठारा दिन की उमरमों गुरु १० जी क्रिया पिछे गदी बैठे (श्री गुरु तीर्थ संग्रह पुस्तक पृष्ठ ११० पंक्ती १३ से २० तक जो सं १८८४ ई० अटैपल प्रेस अबाला कंपमें छपी) इन करणोंसे गुरमतमें मृतक श्राद्ध सिद्ध होता है॥जो अकाली लोग प्रश्न क्रिया करते हैं उनके यथार्थ उत्तर॥यथा-मृतकों को नहीं मानना चाँहीये क्योंकि गुरु दसजी का हुकम है "कोई पसू मृतानको पूजन धायो "उत्तर-दसों गुरु जन्मे और मरे उन को सर्व सिख मानते हैं क्या सर्व सिखों की पशु संज्ञा है प्रश्न- मृतकों को कुछ नहीं पौहुंचता उत्तर-दसों गुरु जन्मे और मृत्यु हुए उन को अरदास कैसे पौहुंचेगी जो, सिखों के हर एक कार्य में होती है यथा ॥ (क) "वार श्री भगौती जी पात साही १० ॥ प्रिथम भगौती सिमरकै गुरनाक लई ध्याये ॥ फिर अंगद गुरते अमरदास रामदासै होई सहाय ॥ अरजन हरिं गोविंद ने सिमरो श्रीहरि राय श्रीहरि

१ येह अरदास दुर्गा की वार पुस्तक की पैहली पोड़ी है

कृष्ण ध्याईये जिस डिठै सभ दुख जाइ ॥ गुरू तेग बहादर सिमरीयै घर नौ निध आवै धाए ॥ सभ थाई होई सहाय ॥ दसवा पातशाह ॥ "इत्यादि ॥ अरदास पौहुचेगी तो श्राद्ध क्यों नही पौहुंचेगा (ख) सिखों के हर एक कार्य में पंज प्यारोंका कडाह प्रसाद निकाला जाता है यह प्रसाद (छांदा) मृतक पंज प्यारे (दया सिंह खत्री १ धर्म सिंह जाट २ साहिब सिंह नाई ३ हिमत सिंह फंदक ४ मोहकम सिंह छीपा ५) जी को कैसे पौहुचेगा ॥ जब छांदा (प्रसाद) पौहुचेगा तो श्राद्ध क्यों नहीं पौहुंचेगा ॥ (ग) नवीन सिंह (अकाली) हरेक मृत्यु नमित्त गुरू ग्रन्थ साहिब जीका पाठ कराते हैं क्या बोह पाठ पौहुचता है या पाठका फल यदि यह पौहुचते हैं तो श्राद्ध क्यों नहीं पौहुचना । जरूर पौहुचता है ॥ नोट–नहीं तो अरदास, पांच प्यारोंका छांदा, (प्रसाद) मृतक नमित्त ग्रंथ साहिब जीका पाठ व्यर्थ है ॥ (घ) श्री गुरू आद ग्रंथ साहिब में लिखा है "मतमो पिछैं कोई रोव सी मै मूलन भाया "(आद ग्रंथ साहिब राग राम कली बाणी सद पौड़ी ४) जब रूदन पौहचना गुरू जी मानते हैं तो श्राद्ध जरूर पौहुंचेगा ॥ प्रश्न–जीवत पितर न माने कोई मुए श्राद्ध कराही॥पितर भी बपुड़े कहु किउखावे कउआ कूकर खाही ॥ इसशब्द से श्राद्ध खंडन है ॥ उत्तर—श्री गुरू आदि ग्रन्थ साहिब के गुरू गिराथे कोश में उक्त शब्द का अर्थ लिखा है यथा ॥ यह वचन (शब्द) जीवते पितरोंकी सेवा करनी उपदेश करे है ॥ जो जीते पितरों की सेवा करे है तिनहेत मरेओंके श्राद्ध का भी निखेध नहीं करे (देखो श्री गुरू आदि ग्रन्थ साहिबजी का गुरू गिरार्थकोश अक्षर ३

१ छीमर

से ढ पृष्ठ २५५ कालम १ पंक्ती १५ से २० तक) प्रश्न- गुरू
१ जीतो[1] मृतक श्राद्ध का डबल खंडन इस शब्दसे करते हैं ॥
यथा-दीवा मेरा इकनाम दुखविचपाया तेल । उन चानण
ओह सोखिया । चुका जमसिउ मेल ॥ १ ॥ लोका मत
को फकड़ पाइ ॥ लख भड़ियाकर एकठे एक रती ले
भाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पिंडपतल मेरी केसउ किरिया
सचनाम करतार ॥ ऐथै ओथै आगै पाछै एहुमेरा
अधार॥२॥ गंगा बनारस सिफत तुमारी नावै आत्मराउ॥
साचा नावणता थीऐ जां अहि निस लागै भाउ ॥३॥
इकलोकी होर छम छरी ब्राह्मण वट पिंडखाए ॥ नानक-
पिंड बखसीस का कबहूं निखुट सिनाहि ॥ ४ ॥
(आसाम० १) उत्तर—नानक देवजी उदासी साधू थे
"(नानक भिया उदासी) "येह शब्द उनका अपना
आचरण है यथा ॥ दीवा मेरा इकनाम, लोका एक वचन
है, अपने लिये मेरी केसो किरिया, यह मेरा अधार,
इत्यादि से प्रगट है गुरू चौथी अवस्था में पौहुचे हुए कर्म कांड
के फल की इच्छा नहीं रखते थे ॥ और गुरूजी नास्तक नहीं
थे जो कर्मकांड न मानते गुरूजी ने उक्त शब्द में कर्म कांड माना
है जो उक्त शब्द और उसके अक्षर अर्थ से प्रगट है ॥ यथा
"दीवामेरा इकनाम,, देह मे नामरूपी दीवा ॥ "दुख विच
पायातेल,, दुखादि जिसमें साधन है ॥ "ओहचानण ओह
सोखिया,, इस प्रकार से प्रलोकगत संकट नष्ट होते हैं ॥
"चुका जम सिउमेल "पुराणोंमें लिखे यमदूतों के कष्ट से
बचें॥ "लोका मतको फकड़ पाइ,,हे मेरे मना मत खराबीयों

[1] इस शब्दका अक्षरार्थ आगे लिखा है जिससे श्राद्ध खंडन की भ्रान्त दूर होगी

में पड़ ॥ लोका एक वचन है ॥ "लख मड़ीयां कर इकठे एक रती ले भाइ 'लत्त मृतक चिताओं की लकड़ीयों को एक रती भाइ (अग्नी) भसम करदेती है ॥ "पिंड पतल मेरी केसो किरिया,, केसो नाम पौराणिक "केशव का,, अपभ्रंश है देखो विष्णुसहस्र नाम श्लोक २१-८७-१५१-१५५ अर्थात पौराणिक क्रिया ॥ "सचनाम करतार;, जो सचे नाम जपने वाले को करतार की कृपा से पौराणिक क्रिया प्राप्त होती हैं ॥ "ऐथे ओथै आगे पाछे एह मे से अधार., लोक प्रलोक में गुरु क्रिया का आसरा है॥ "गंग बनारस सिफत तुमारी नावें आत्मराउ,, श्रीगंगाजी और कासीजी सिफत (प्रशंसा) ईश्वरी (प्रत्यन्तकला) है जिसके स्नान से आत्मा निर्मल हो जाती है ॥ "साच नावण तां थीऐ ॥ जां अहिनिस लागै भाउ 'सच्चा स्नान कर्म वोह है जो दिनरात्री पौराणिक रीति महात्म सहित स्नानकरे ॥ "इकलोकी होर छपछरी ब्राह्मण वट पिंडखाए,, लोगों की छिमा प्रार्थना तब स्वीकार होती है पितरों के ताईं जब ब्राह्मण प्रसन्नता से भोजन करे ॥ "नानक पिंड बखसीस का कबहू निखुट सिनाहि,, श्री गुरु नानक जी कहते हैं ईश्वरीदात शरीर समाप्त नहीं होते निष्काम कर्म मुक्ति करादेते हैं ॥ नोट-उक्त शब्द का येह अक्षारार्थ है जिस से कर्म की आज्ञा जो श्राद्ध कर्म में मुख्य है यह स्पष्ट प्रगट है श्राद्ध खंडन समझना अज्ञान है॥ * ॥ * ॥ * ॥

प्रश्न गुरमतके किसी ग्रन्थमें श्राद्ध शब्द ही नहीं॥ उत्तर-श्राद्ध शब्द गुरमतके हरेक ग्रंथोंमें आया है ॥ यथा-श्री आदि ग्रन्थ साहिब राग गौड़ी वाणी कबीरजी शब्द ४५ तुक १ में आया है"मुए श्राद्ध कराई"सो इस श्राद्ध शब्दका अर्थ श्री आदि गुरु ग्रन्थ साहिबजीके गुरु गिरार्थ कोशमें ऐसे किया है। यथा-(क) श्राद्ध० संस्कृत शब्द-पितरोंके ...

देने योग्य अन्न जलादिका॥ इस श्राद्ध से पितर अैसे त्रिप्त होते हैं जैसे यज्ञके अन्नादिकोंसे देवता तृप्त होते हैं औ त्रिप्त होकर पुत्रादिकों तैसे फल देते हैं जैसे यज्ञकरताको देवते देते हैं याते श्राद्ध करना सफला है। (देखो श्रीगुरु आद ग्रन्थ साहिबजीका गुरु गिरार्थकोश अन्तर डसेढ पृष्ट२५१ कालम २ पंक्ति ६ से १५ तक (ख) श्राद्ध देसमों देवन वत पितर आवै है (उक्त पता गुरु गिरार्थ कोश पृष्ट २५२ कालम १ पंक्ति १)(ग) जेकर गुरू वचनका मरिओं के श्राद्धका निखेद कहनेमों भाव होवे तब रामकलीके सदबाणी में जो"अंते सतगुर बोलिआ मै पिछै किरतन करहो निरवाण जीउ ॥ केसो गोपाल पण्डित सद अहु हरि हरि कथा पड़े पुराण जीउ ॥ हरि कथा पड़ी औ हरि नाम सुणीए बेबाण हरि रङ्ग भावए॥ पिंड पतल क्रिया दीवा फुल हरि सर पावए"अैसे पितरोंके उपदेशसे श्राद्धकी विधी न कैहते (देखो श्री गुरु आदि ग्रन्थ साहिबजीका गुरू गिरार्थ कोश अन्तर डसेढ पृष्ट २५५ कालम २ पंक्ति १ से १४तक) (घ) आदि गुरोंने श्राद्ध हीनोंकी निन्दा करनेसे श्राद्धका विधान किया है याते श्राद्ध करना चाहीये(उक्त पता गुरु गिरार्थ कोश पृष्ट २५६ कालम२ पंक्ति १ से ३) (ङ) चले प्रकरणमों यह भी चिन्तन कीया जाता है जैसे पितर पखमे इतर जीवोंके श्राद्ध होते हैं॥ तैसे पूर्व हुए अवतारोंके कोई पुरुष श्राद्ध करे नहीं ना समापती दिनमोंउत्सव करे हैं॥ गुरमत के लोग समापती दिनमों उत्सव करे हैं गुरमत के लोग समापती दिनमों गुर पूर्व करते हैं श्राद्ध करते हैं जो मरेओंके नमित देना होता है (देखो उक्त गुरुगिरार्थ कोश पृष्ठ २५८ कालम १ पंक्त ८ से २१)

उपदेश संख्या ५

सिंहोंको दान पूजा लेना पाप है गुरमत धर्म ग्रंथोंसे

(१) खत्री[1] सो जो कर्मों का सूर॥ पुंनदानका करै शरीर ॥ खेत्[2] पछाणै बीजैदान ॥ सो खत्री दरगह परवान ॥ लभ[3]लोभजे कूड़ कमावै ॥ अपणा किता आपै पावै (श्री गुरु आदि ग्रन्थसाहिब श्लोक वारा ते वधीक महाल्ला १ श्लोक १७) नोट—पुन्यदान में जो क्षत्री लोभ करेगा वोह पापी होकर नरक में जायगा ॥

(२) जीऊं मरयादा[4] हिन्दूआं गऊमास अखाजू[5] ॥ मुसलमाणां सूअरहु सौगंद ब्याजू ॥ सहुरा घर जमाईऔ पाणी मदराजू[6]॥ साहानखाई चूहड़ा माया महताजू॥ जिउं मिठै मखीमरै तिस होइ अकाजू ॥ तिउ धर्म्मंसाल[7]दी झाक है विहु[8] खंडू[9] पाजु[10] (श्री भाई गुरदासजी की वार ३५ पौड़ी १२ नोट श्री भाई गुरदासजी सिखों के लिये पूजा चड़ावा ऐसा पाप बतलाते हैं जैसे हिन्दूओं को गोमांस मुसलमानों को सूअर इत्यादि ॥

(३) इकदिन माता[11]जी आय के किहा गुरुजीनूं ॥ सिखां दे मारन वासते उपाय कीया है सिखखड़देहैन वैरी सिर पर कड़क देहैन ॥ अते भुख बरतरही है ॥ धनादे खजाने दरयांओ[12] विच गिरावदेहो ॥ सिखां की गुनाह करिघाहैगा ॥ किसतरां जुझनगे[13] रणमाझ ॥ पाइ

१ क्षत्री २ पात्र ३ लालच ४ धर्म्म ५ अभक्ष ६ मदिरा ७ इच्छा ८ विष ९ खांड (मिठा १० पाग ११ गुरु १० की माता गुजरी १२ दरयाय सतलज १३ लड़नगे

पाइ मर अंन खाणे नू मिलदा है बखसीये ॥ संगतनू ॥ तां गुरूजी बोले ॥ एह पंथ[1] करतारदे हुकम नाल होया[2] है ॥ पंथ बधावणाहै गालणानहीं। जिस दिन पूजादे खजाने लगे खावण तां दिन घाटा होवेगा। सुणों माता जी जैहर है पूजादा धान ॥ जो खावेगा सो दगध हो जावेगा'' मैं पंथजुध वास्ते खड़ा कीता है भुखा नंगाही भला है ॥ परमै नर्क नहीं पावणा ॥ अता बुरानहीं करना ॥ जैसे हम तेरे पुत्रहां तूंमाता सानू जैहरदेवे ॥ किऊं तूं देसकदी है ॥ हमभी सिखा पूत्रानू पूजादा जैहर नही देणा (देखो सौसाखी की साखी ३७ श्रीमुख पातसाही १०) नोट—उक्त परमाणीक परमाण से प्रगट है पूजादा धन जैहर है जो सिखखावेगा सो दग्ध हो नरक जाएगा ॥

(४) मेरासिख ग्रन्थीआ पूजा खाइ अरदास[3]॥ बिख[4]-खावैझूठा चुगल मेरा नहीं सोदास[5] सौ साखी की साखी६२ श्रीमुखवाक पातसाही १०) नोट-गुरू १० जी आज्ञा देते हैं जो मेरा सिख ग्रंथी तक पूजा अरदास खाएगा वोह जैहर खाएगा और झूठे चुगल जैसा पापी होगा मेरा सिखनहीं ॥

(५) पंथ रचा मै धर्म्म हित ॥ पूजा मूलन गह ॥ लोभ वंत मानत नहीं शुक्र[6] जोनी जाहि (सौसाखी की साखी ८५ श्री मुखवाक पातसाही १०) नोट-गुरू १० जी श्री मुख से आज्ञा करते हैं जो सिंह पूजा का धांन खाएगा वोह बिष्टाखाणेवाले सूअर की योनी जाएगा ॥ (प्रश्न) नवीनसिंह (अकाली) ओं के धर्म्मग्रन्थोंमें दान का हुकम और महात्म नहीं ॥ उत्तर-गुरमत धर्म ग्रन्थोंमें दानका महात्म और हुकम स्पष्ट है ॥ (क) दानहुने असनानह वंजे भसपई[7]

१ नष्ट २ दान पुन्य ३ अरदास (भेटा) में मिली वस्तु ४ जैहर ५ शिष्य (चेला) ६ सूअर ७ राख

सिरखुथे (श्री गुरू आद गून्थसाहिब राग माझ की वार महाल्ला १ पौड़ी २६ का श्लोक १) (ख) पुंनदान का करै, शरीर सो ग्रही गंगा का नीर (श्री गुरू आद ग्रन्थ साहिब राग रामकली की वार महाल्ला ३ पौड़ी[१] १२का श्लोक २ (ग) तीर्थ ब्रत अरु दानकर मनमैं धरे गुमान ॥ नानक निहफल जात है जिउ कुंचर इसनान (आद ग्रन्थ साहिब श्लोक महाल्ला ६ श्लोक[२] (४६) (घ) तिन हरीचन्द प्रथमी पतराजे ॥ कागद की मन पाई ॥ औगण जाणै तां पुंनकरै कियों क्यों नैं खास बिकाई (आद ग्रन्थ साहिब राग प्रभाती महाल्ला १ अष्टपदी शब्द ४ तुक २) (ङ) मुर पित पूर्व कीयस पयाना[४] ॥ भांत भांत के तीर्थ नाना ॥ जब ही जात त्रिबेणी[५] भए पुंनदान दिन करत बतए ॥ तही प्रकाश हमारा भयो ॥ पटने सैहर गिरार्थ कोश पृष्ठ २५८ कायम १ पंक्त ८ से २१) बिखौ भव लेयो (श्रीगुरू दसम ग्रंथ साहिब श्रीमुख वाक पातसाही १० बचित्र नाटिक ग्रन्थ अध्याये७ कविता अङ्क१ और२) (च) द्विजन[६] दीजीअहु दान ॥ द्रुजनको[७] द्रिष्ट दीखाईअहु (दसम ग्रन्थ साहिब चरित्र २१ तुक ५८ श्रीमुखवाक पातसाही १०) (छ) सूद्रनेमदा जीमदे बिपर[८] देह्नि दिधकार ॥ उपकारी सूझै नहीं बौहुते बधे विकार (सौसाखी की साखी ८६ श्रीमुख वाक पातसाही १०) (ज) आया भैरबा[९] दिन दिज केसव हाथ जोर बोले सब सेसब॥ देव कृपा मम तुम प्रसोद ॥ देओ मन्त्र कुलगुर मुदि आद[१०] ॥ सवा लाख देऊंगा धन्ना ॥ एह कह मेलेयो अगन घना

१ अहंकार २ हस्ती ३ लिखत पड़त ४ तीर्थ यात्रा की त्यारी ५ प्रयागराज ६ ब्राह्मण ७ दुष्ट ८ ब्राह्मण ९ प्रातःकाल १० गलफड़ी

(उक्त सौ साखीकी साखी १७) (ङ) जिथे कोऊ गऊ आंनूंके अतिथानूं ॥ के ब्राह्मणा नूं दुखावै ता ओथै जुध करै ॥ बौहते थोड़े न विचारे॥ ते जो कुछ पास होवै सो दान करै (देखो सिंहोंकी परमाणीक पुस्तक श्री भाई मनीसिंह कृत भक्त रत्नावली साखी ६१) प्रश्न—श्रीगुरु दसमजीने दसम ग्रन्थ साहिबजीमें "जो कुछ लेख लिखियो,, आदि तीन स्वैये एक दोहेसे सिंहोंको दान देनेका हुकम दिया है ब्राह्मणोंको दान देनेका निषेध किया है। उत्तर प्यारे मित्रो! नवीनसिंह (अकालियों)का यह सफेद झूठ और पाप है॥ जिसको उनका शिरोमणि गुरू १० जीका ज्ञानी श्री भाई मनीसिंहजी अपनी आंख देखी वारता अपनी पुस्तकमें लिखते हैं ॥ यथा—साखी होर चली तां सिखानै भाई मनीसिंहजी पास प्रश्न कीता ॥ जो साहिब दसवी पातसाही नै खालसा वरताया ते देवी प्रगट होगई है।देवीकी उपाशना कीतीहै॥सोसाखी कृपा करके सानू सुणाईये ॥ तां भाई मनीसिंहजी होरा किहा ॥ इकसमें साहिब- दसवी पातसाही ने कांसी ते पण्डित बुलाया ॥ ते उसनू बचन कीता भ.ई छत्रीआंनै जो शस्त्र छड़ दिते हैन। ते मलेछानै[1] शास्त्र फड़लए हैन॥ इस करकै मलेछांदा राज तेज होया है ते असानै शस्त्र फेर फड़ाइके राज मलेछां तो फेर लैणा है॥ चिकड़ विचो सोयना कढ लैणा है ॥ अस नू देवीकी उपासनाके मंत्र कहो॥ जिस करकै देवी प्रतख होवै॥ तां ओसनै किहा जी गरीब निवाज मलेछता बौहुत है जि ॥ बचन होया जैसे श्रीरामचंद्रजी कपी[2] अर भालका[3]से राकस[4]दा नास करवाया है तैसे हमएना तकड़ी पकड़न वालियांसो आ

१ मुसलमान २ बांदर ३ रीछ ४ हिंदूओंसे

हलवाहण[1] बालियांसो सभ मलेछादा नास करवाणा है॥ तांओ सनै केहाजी गरीब निवाज जेतां वरस राती तुसी नेम करो ते लख देवीदा पाठ कराओ तां देवी प्रतख[2] होवेगी ॥ तां साहिब नै नैणा देवी देटिले[3] उते बैठके होमदा[4] अरंभकीता॥ चेत्रदे नौरा त्रियांदी अष्टमीके दिन॥ जब बर्स का दिन पूरा होया तब पंडितानै सभदेसां दे ब्राह्मण जगदे[5] निवदे वास्ते बुलाए॥ तां मंत्र पड़दीयां ही देवी प्रतखहोई ॥ तां करद साहिबदे हथ दिती ॥ तां साहिब करद लैके ध्यान धरकै नेत्र मुंद लए॥ देवी अलोपहोई ॥ सवालाख सीस सिखादे साहिबनै समरपण कीते॥ जो शस्त्राकर जुझनगे ते शस्त्रादी भेट हो बनगे ॥ ते सहीद होबनगे ॥ तां लागी[6] आंन अरदास[7] कीती ॥ जी गरीब नीवाज लंगरत्यार है ॥ तां ओस समें ब्राह्मण सभ आपो आपणे घरा विचहैसन॥ ते सिख सभ हजूर बैठेहैसन॥तां प्रसाद[8] साहिब बरत्वादिता॥तां ब्राह्मणनूं खबरहोई॥तां सभं इकठे होएके कांसीदे ब्राह्मण पास गए लगे सम क्रोध करन ॥ जो प्रसाद छूत[9] कर छोडिआ है॥ते असी खुधिआर्थी[10] रहेहां॥तां साहिबदे पास सिखां आंन अरदास कीती॥जो ब्राह्मण बहुत कलपदेहैन॥ तां साहिबनैभाई नंदलालनू ओनादे मनावणवास्तेघलेया तेएहु स्वैया लिख घलिया॥स्वैया॥जो कुछ लेख लिखियो बिधना[11] सोई पायत मिश्रजू[12] शोक निवारो ॥ मेरो कछू अपराधनहीं ॥ गयोयादते भूलन कोपचितारो ॥ बागो[13]

१ हिन्दुओंसे २ प्रत्यक्ष ३ पर्वत ४ हवन ५ यज्ञ ६ गुरु १०७ रसोईया ८ प्राथना ९ भोजन १० जुठा ११ भुखो १२ परारब्ध १३ ब्राह्मण १४ वस्त्र

निहाली[1] पठैदैओ ॥ आजभले तुमको निहचै जीया धारो॥ छत्रीसभै क्रित[2] बिपन[3] के इनहूंपै कटाछ[4] क्रृपाकै निहारो१ स्वैया ॥ जुध जिते इनहूं के प्रसाद इनहूँ के प्रसाद सुदान करे ॥ अघ[6] ओघटरे[7] इनहीके प्रसाद इनही की क्रृपा फुन धांमभरे॥ इनही के प्रसाद सु बिद्यालई इनही की क्रृपा सभ सत्रमरे ॥ इनहीकी क्रृपाके सजेहम हैं नहीं मोसे गरीबक्रोरपरे ॥२। स्वैया ॥ सेवकरी इनही की भावत और की सेव न सुहातनजी को ॥ दानदयो इन्ही को भलो अरआन को दान न लागतनीको ॥ आगै फलै इनही को दियो जगमो जसु और दियो सभ फीको ॥ मोग्रहमै तनते मनते सिरलौ धन है सभही इनको ॥३॥ तां भाई नंद लालजी ओना ब्राह्मणादे पास गिया ते केहा जो साहिबनैं बचन कीता है जो तुस नाना प्रकारदे भोजन करके तुसानू छकावनेहां ॥ बख्श सभेदेमांगे ॥ ते तुसी क्रोध नहीं करना ॥ तुसी असानू ओस प्रसाद वेले भूल गए हो ॥ तां भाई ओह क्रोधछोडलियो नाहीं[9] यथा ॥ दोहा ॥ चटपटाय चितमैं जरियो त्रिन जिऊ क्रुधतहोइ ॥ खोजरोजके हेन लगदियो मिश्रजूरोय ।४। तां ब्राह्मणानू खुसी करके भाई नन्दलालजी मनाके हजूरलै आए ॥ सभनानू भोजन खवाइकै रुप्या रुप्या दखणा देकै बिदाकीते ॥ ते कासीदे ब्राह्मणनू लख रुप्या भेट देकै कांसी पौहुचाया ॥ (देखो सिखोंमें धर्म परमाणीक पुस्तक भगतरत्नावली भाई मनीसिंह कृत

१ तुलाई २ करेहुए ३ ब्राह्मण ४ नजर ५ कृपा ६ पाप ७ दुख८ श्रेष्ठ ९ यह ब्राह्मणों के क्रोध की दशाहै जिनकी क्रोध सान्ती लिये भाई नंदलाल जी भेजा

साखी १११ जो आफताब प्रेस लहौर सं० १९५० वि० में छपीका सफा १६७ से १७० तक)

नोट—उक्त परमाणीक साखीसे प्रगट है उक्त तीन स्वैये ब्राह्मणों को दान देनेकी प्रतिज्ञा के हैं और ब्राह्मणों के मनावण वास्ते ही लिख कर भाई नंदलाल जी पास भेजे ॥ और उन ब्राह्मणोंको रुप्या २ और कांसीके ब्राह्मण को लक्ष रुप्या दिया प्रगट है और सिखों (सिहों) का इन स्वैयोंमें नाम तक नहीं ब्राह्मणों का नाम है (स्वैया १ में विप्र जू, और विप्रन, स्वैया २ इनहीके प्रसाद विद्या लई स्वैया ३ में सेवकरी इनही की भावत,) गुरु चेलों से विद्या ले और सेवा करे गुरूना हुआ चेला हुआ जो चेलों को नर्क में पौहुचाने का साधन है इत्यादि कारणों से उक्त ३ स्वैये सिहों के लिये नहीं हो सक्ते और स्वैयोंके समय सिंह बणेही नहीं थे चेतमें स्वैये बने हैं ॥ विसाख में सिंह बने हैं प्रश्न—ब्राह्मणोंने गुरुपुत्र मरवाए हैं इस कारण ब्राह्मणोंको दान देना नहीं चाहिये ॥ उत्तर—गुरुपुत्र ब्राह्मणों ने नहीं मरवाए ॥ गुरुपुत्र मरणे के कारण यह हैं ॥

(१) श्रीगुरु नानकजी ने तिमिरलिंग को सात मुठी भंग के बदले सातपुस्त बादशाहतका बर देदिया ॥ बाले और मरदानेके पश्चाताप कर पूछने पर गुरूजीने कहा हमारे सात सिर लग कर बादशाहत वापिस आजायगी ॥ यथा ॥ पाछैं बाला मन बिस माना ॥ क्या कौतक इह मुखो बखाना ॥ सुन गुरु नानक एह अलाई ॥ भली बात तुम याद कराई ॥ तैसे सात सीस[1] निज[2] देवौ ॥ तौ पतसाही इनतेलेवौ ॥ मरदाने पुन अरज सुनाई ॥ हे

१ सिर २ अपने

प्रम मोको सीस गनाई ॥ श्रीगुरु कह पंचम चपलेवो प्रथम सीस इहहित देवौ ॥ अष्टम ग्रह नवम धार वप[1] देवौ सीस उतार ॥ दसम रूपके चार सुत[2] देवो इहहि तवार ॥ नोट-बाबे बुढ़े के पूछने पर गुरुअरजनजी ने लाहौर जाते समय कहा—श्रीगुरु अरजन तब कहा सीसी देन एह भाइ ॥ गुरु नानक मुख कमलसों एक समै प्रगटाय इसी हेत भाई सुनो अब हम चले लहौर ॥ प्रथम सीस तहि देवहौं आवन नही बहौर ॥ गुर बिलास पातसाही ६ अध्याये ७ कबिता अंक १११ ११४-१२१--१२३--१२४ और १०४--१३२)

(२) उक्त इतिहासकी पुष्टी सिंहों की परमाणीक पुस्तक भाई मनीसिंह कृत भक्तरत्नावली से होती है॥ जो दिल्ली में श्रीगुरु तेगबहादरजी ने भाई मतीदास ब्राह्मण से कहा था ॥ यथा ॥ इना सुखा छकायके पहली पातसाहीथों राज लिया है ॥ तेसीस देकर इनाथों राज फेर लेना है ॥ श्री भाई मनी सिंह कृत भगतरत्नावली साखी १३०) नोट-उक्त दोनो परमाणोंसे प्रगट है गुरुपुत्र ब्राह्मणोंने नहीं मरवाए गुरु नानकजीने मरवाए हैं ॥

(३) श्रीगुरु दसमजी की माता[3] गुजरीजी गुरुपुत्र मारनेवाले तुर्क बतलाती है ॥ यथा ॥ वडीमात संग गुरसुत मुआ ॥ ब्योगकथा बरनी किमजाई॥ गिरकर मरी मात सुन अैसे ॥ कृष्ण ब्योग देवकी जैसे ॥ दुष्टन बालमारे अति पापी उखड़ी जड़ तुर्क न सब थापी ॥ (सौ साखी की साखी ५६ श्रीमुखपातसाही १०) नोट--उक्त परमाणसे प्रगट है गुरुपुत्र मुसलमानोंने मारे ब्राह्मणोंका कोई कसूर नहीं॥

१ शरीर २ पुत्र ३ श्री गुरु १० जीकी मातागुजरी

(४) श्री गुरु दसमजी अपने पुत्र मारने का उलांभा दसम ग्रंथ साहिब में औरंगजेब को लिखते हैं ॥ यथा ॥ चिहा सुद कि बचगों कुस्तचार ॥ कि बाकी बिमादास्त पैचीदह मार ॥ (दसम ग्रंथ साहिब जफरनामा हकायत १ तुक ७८ ॥ श्रीमुख वाक पाक पातसाही १०) अर्थ ॥ क्या हुआ अगर चार (अजीतसिंह, १ जुझारसिंह, २ जोरावर-सिंह, ३ फतेसिंह ४) बचों को तैने मार दिया मैं गजबनाक सांप मौजूद हूं जो तुझे निगल जाऊंगा ॥ चिमरदी कि अखगर खमोसा कुनी ॥ कि आतस दमारा फिरोजा कुनी (दसम ग्रंथ साहिब जफर नामा हकायत १ तुक ७९ श्रीमुख पातसाही १०) अर्थ ॥ क्या मरदानगी है की तैने छोटे२ चंगारों को बुझा दीया बलकि प्रज्वलित आग कोऔरभी भड़का दीया ॥ नोट-उक्त परमाण नवीनसिंह अपने परमाणीक पुस्तक 'गुरमत प्रभाकर, प्रथमवार छपे का पृष्ठ २२७ पर गुरू १० जी की धीरज और वीरता से मानते हैं जिस से प्रगट है गुर पुत्र मुसलमानों ने मरवाए ब्राह्मणोंने नहीं ॥ अकाली भाईयों से प्रार्थना है कि गुरूजी तो गुरपुत्र मुसल-मानों ने मरवाए बताते हैं आप अकाली ब्राह्मणोंने मरवाए बताते हैं दोनों में कौन सच्चा है गुरू १० जी या कलजुगी अकाली सिंह ॥

(५) दो गुरूपुत्र अजीतसिंहजी और जोरावरसिंह जी को संमत १७६२ वि० पोह मास में तुर्कोंकी फौजके साथ अकेले२ भेजकर गुरू दसमजी ने चमकौर के जुधमें मरवादिये ॥ नोट-जैसे गंगू ब्राह्मणने दो गुरपुत्र मरवाए बताते हो वैसे ही दो गुरूपुत्र गुरूदसमजी ने मरवाए जैसे ब्राह्मण को बुरा पापी

२ इसका परमाणीक अर्थ लिख दियाहै

समझते हो वैसे ही गुरू दसमजीको समझना चाहीये तो इनसाफ है ॥

(६) श्रीगुरू आदि गून्थ साहिब जीकी आज्ञा है 'जमण मरणा हुकम है भाणै आवै जाइ.(आद ग्रन्थसाहिब रागआसा की वार म० १) नोट-जब गुरूपुत्र मरणेका भाणा (कर्मफल) ऐसाही था तो ब्राह्मणों का और गुरू १० का क्या कसूर है प्रश्न--ब्राह्मणों ने गुरू साहिबों पर कोई उपकार नहीं किया इस कारण ब्राह्मणों को नहीं मानना चाहिये ॥ उत्तर--ब्राह्मणोंने दसों गुरूओं पर उपकार कीया है॥

(१) श्री गुरू नानक जी को पं० हरद्यालजी ने विद्या पड़ाई ॥ बालेवाली जन्म साखी में दर्ज है ॥

(२) श्री गुरू अमरदासजी को पं० केसोगोपालजी ने वेद पुराण और उपनिषदों की अनेक वार कथाए सुना कर भक्त ज्ञानी बनाया (देखो पंथ प्रकाश सूर्यप्रकाश और खालसा त्वारीख कथा गुरू ३ मे ॥

(३) श्री गुरू अरजन देवजी का अंमृतसर तलाव बननेसमय लंगरे तीनमहीने गंगोराम ब्राह्मण बठिंडा निवासी के मोठ बाजरे से काल में चला जो सारी सिखी को प्राणदान दीया ॥ (देखो खालसा तवारीख कथा गुरु ५॥)

(४) श्री गुरू अरजन और गुरू हरिगोबिंदजी को ब्राह्मणों ने श्री मत भागवत सुनाकर ज्ञानी बनाया (देखो गुरविलास पातसाही ६॥)

(५) श्री गुरू हरिगोबिंदजी की बीबी बीरो ब्यवाह घरीको सिंघा ब्राह्मण मुगलों के घेरेमें से अपने कंधे पर उठाकर ल्याया ॥ नहीं तो कौलांका वदला उतरगया था (देखो गुरविलास पातसाही ६)

(६) श्रीगुरु तेगबहादरजी की मदत भाई मती दास ब्राह्मणने की जो साथ गया दिल्ली और लहौर भिड़ादूनेकी सामर्थ प्रगट की गुरु तेग बहादर जी ने भाणेके अनुसार रोकदिया जो शहीद हुआ और सर्व-सिख गुरु ६ जी को त्यागगए ॥ इसपर गुरुजी ने भग-वान श्रीरामचंद्रजी का आसरा भरोसा समझकर शब्द उच्चारण किया ॥ संगसखा सभ तजगए कोउ न निबि-घो साथ ॥ कहुनानक इह बिपतमैं टेकएक रघुनाथ ॥ (आद ग्रन्थ साहिब श्लोक महान्ला ६ श्लोक ५५)

(७) श्री गुरु दसमजी को भंगाणी का जुध पं० दया राम जीत कराई जिसपर गुरु १० जी ने द्रोणाचार्य (गुरु) की पदवीदी जो दसमग्रन्थ साहिब में दर्ज है॥ कोपेओ देवतेसं दयाराम जुधं ॥ कीयो द्रोण कीजीयो महा जुध सुधं दसम गुरु ग्रन्थ साहिब श्री मुखबाक पातसाही १० बचित्र-नाटिकग्रन्थ अध्याये ८(कबिता अंक ५)

(८) श्री गुरु आदि ग्रंथसाहिबजीमें २० पचीस ब्राह्मणों की बाणी है रामानंद, त्रिलोचन जयदेव, वेणी सूरदास,सोंला-भट, आदि ॥ जिनकी बाणी को सर्व सिख मत्थे टेकते हैं और सिर झुकाते हुए कल्यान मानते हैं कितना उपकारहै ॥ इससे वढकर और क्या उपकार होसकता है ॥

उपदेश संख्या ६

जन्म से वर्ण व्यवस्था विवाह संस्कार और गुरमत धर्म ग्रन्थ

१ टकरा २कर्म फल ३ संगी ४ मित्र ५ रामचंद्र ६ कुपित (क्रोध) ७देवतों सदश ८ गुरु द्रोणाचार्य ९ महान

(१) जोगशब्दं ग्यानशब्दं ॥ बेदशब्दं ब्राह्मणं ॥ खत्री शब्दं सूरशब्दं सूद्रशब्दं परा क्रितह (श्री गुरू आद ग्रंथ साहिब श्लोक सहसक्रिती महाला १ श्लोक ३) (नोट) गुरूजी उक्त शब्द द्वारा उपदेश वर्णों के धर्म्म का करते हैं ॥ जो वर्ण प्रथमहोते हैं तो उपदेश होता है ॥

(२) खत्री ब्राह्मण सूद वैस उपदेश चहु बर्णों को साझा (आद ग्रंथ साहिब राग सूही महाल्ला ५ शब्द ५ तुक ४) नोट जब पैहले जन्म से वर्ण व्यवस्थाहै तो उनको उपदेश साझा है ।

(३) चहु वर्णा को दे उपदेश नानक उस पंडित को सदा अदेश (आद ग्रंथसाहिब राग गौड़ी महाल्ला ५ बाणी सुखमनी अष्टपदी ६ तुक ४) नोट--उक्त शब्दसे प्रगट है जन्म से चारों वर्ण और उनको उपदेश देने वाले ब्राह्मणों को नमस्कार करते हैं

(४) उठे गिलानी जगतविच वरते पाप भ्रष्ट संसारा ॥ वरना वरनन भावनी खहि खहि ॥ जलन बांस अंगेआरा (श्री भाई गुरदासजी की बार १ पौड़ी १७)

(नोट - जन्मसे व्यवस्था मानने से हटना पाप भ्रष्टता नष्ट होना है जैसे बांस आपसमें नष्ट होजाते हैं अपनी अग्नीसे ॥

(५) चार वर्ण गुर सिख संगत आवणा (श्री भाई गुरदासजी की बार १४ पौड़ी २) नोट -उक्त परमाण से प्रगट है चार वर्ण जन्मसे वर्ण व्यवस्था गुरमत में है ॥

(६) चौह वरना दे गोत अपारं (गुरदास बार ८ पौड़ी १२)

(७) छत्री को पूत हों बामन को नहीं कै तप

१ धर्म २ सेवा ३ क्षत्री ४ सूद्र ५ नफरत ६ बासों. की अग्नी ७ क्षत्री ८ ब्राह्मण

आवत है जुरुरो ॥ अरु और जंजार जितो ग्रहको तुहि त्याग कहां चित तामैं धरों ॥ अब रीझकै देहु वहै हमको जोऊहों बिनती कर जोर करों॥जब आवकी औध निदानबनै अतिही रनमैं तब जुझमरों (दसम ग्रंथ साहिब श्रीमुख वाक पातसाही १० कृष्णा अवतार के अंत में गुरू १० जी की प्रार्थना कविताअंक २४८८) और ऐसेही चंडी चरित्र उक्ता विलासेके अंत में है ॥ नोट-श्री गुरू १०जी जन्म से वर्ण व्यवस्था मानते हुए अपने आपको छत्री का पुत्र मानते है ।

(७) प्रथम छत्री[1] के धाम दियो बिध[2] जन्महमारो ॥ बहुर जगत के बीच कीयो कुल अधरू उजियारो ॥ बहुर सबन मैं बैठ आपको पूजकहाऊं (श्री गुरू दसम ग्रंथ साहिब श्रीमुखवाक पातसाही १० चरित्र २१ तुक ३२) नोट-उक्त परमाण से प्रगट है गुरू १० जी अपने आपको जन्म से छत्री मानते हैं और गुरू मत में जन्म से वर्ण व्यवस्था मानते हुए अपनी खत्री जात में लड़की लेन देन (बिवाह) हुए यथा-

श्री गुरु नानकजी का बिवाह

(क सवैया-वेदी जे ब्रिंद[3] औवेंकी वेदी रची जहगे तिह थाई ॥ पुंज[4] जहां दिजराज[5] बिराजत हेरसमाज उठे हरखाई॥ दै मुख आसिखको सुखपाय गए सभी बैस तहां चहुघांई ॥ वेद के मंत्र उचार तबै शुभ रीति करी जिम वेदनगाई ॥ पंकज नैन बने दिसदाहन श्री महला[6] किय बाम जिअंगा दीपत[7] कीन हुतासनको[8] दिजपूज[9] वनायक चंदनसंगा ॥ धार ओए बिखै सरपी[10] मधपावक पावत

१ क्षत्री २ ब्रह्मा ३ व्रती ४ बहुत ५ ब्राह्मण ६ स्त्री ७ दीपक ८ अग्नी ९ श्रीगणेशजी १० घृत

जोत अभंगा ॥ लेइ भवार फिरे वरचार सुहावत ज्यों रति संग अनंगा। (नानक प्रकाश अध्याये २२) नोट-श्री गुरु नानक देवजी की १८ प्रकार की जन्मसाखी है सबमें मुख्य भाई बाले वाली और और नानक प्रकाश है ॥ सो भाई बाले वाली मे भी गुरू नानक जीका बिवाह ऐसे लिखा है ॥ हाड़ सुक्ला पंखदी सप्तमीको अंमृत वेले बाबे नानक जीका व्याह होया ॥ माता सुलखणी जी को इसनान कराय नवीन वस्त्र पहनाय कर वेद बिधी अनुसार खारेयां[1] पर बाबे नानक जीके पास बिठाये कर बैठाया ॥ अग्न देव को जगाय कर गणेश पूजन करके घृत की अहुती पाय कर लामा लेते है (देखो बाले वाली जन्म साखीकी साखी १६ पृष्ठ ५८ पंक्ती ६ से १० तक)

श्री गुरू हरिगोबिंद जी का बिवाह

(ख) चौ० भलो महूरत धेन धूल[2] ॥ निन बूझे सभ मंगल मूल ॥ सुनत हूने[3] बाजन पर डंके ॥ दूलहु चलियो बेस धर बंके ॥ सुखमसंद संग सभ गए ॥ जाइ वेदका महि तिथ भए ॥ देख उठे तहां समुदाय बैठ गए सत गुरन बठाइ ॥ बिप्रीत सुभ पूजन केरी ॥ लई दछना जान घनेरी ॥ करजु प्रकाश हुतासन[4] ताही ॥ डार श्रो एते घृत माहीं ॥ हरिचंद निज तनजा[5] साथ ॥ अग्र प्रदछना फेरे नाथ ॥ और रीत सभ जेतक होई ॥ यथा-योग कहि कीनस सोई ॥ लैलावां डेरे जब आए ॥ बैठे हुते कछू निज थाए (देखो सिखोंका प्रमाणीक पुस्तक "सूर्य प्रकाश रास ५ अंसू २८ कवता अंक ३४ से ३८) नोट-इसी

१ बिवाह में बैठने का आसन २ धेनु धूली लग्न ३ गुरू के कर्मचारी ४ अग्नी ५ पुत्री

प्रकार गुरू हरिगोबिंद जीके दो बिवाह और हुए है यह बिवाह गुरू अरजन जी कर गए थे ॥

श्री गुरू तेग वहादरजी का बिवाह

(ग) चौ० निस डूढ जांम जवबीती ॥ हितलावा-छेसन प्रीती ॥ नर पठ कर गुरू बुलाए ॥ लखसमा तुरत चल आए ॥ श्री तेग बहादर बैसे जिह वेदी सुंदर हैसे ॥ गण पती सुर[1] पूजन कीने ॥ तह जथा जोग धन दीने ॥ श्री गुजरीको ले आए ॥ दिस बाम विखै बठाए ॥ कर पूजा अग्न प्रकाशी ॥ विच हवी[2] पाय वहु भासी ॥ दिज बचते फिर कर फेरे ॥ सभ लाग दियो तिस वेरे ॥ कर-रीत यथो चित सारी ॥ चल आए डेरे मझारी (उक्त सूर्ग प्रकाश रास ४ अंसू ६ कबिता अंक ६से १३) नोट— गुरू हरिगोबिंद जी ने बिवाह किया और ऐसे ही बाबा गुर दिना और सूर्ग मल्ल और गुरू हरिराय जीके सात विवाह किये थे ॥

श्री गुरू दसमजी का बिवाह

(घ) सुध[3] श्री माता पास पठाई साहा तुरत ही लीयो सुधाई सभै समिग्री त्यार कराई ॥ रीत बेद कर कुल सभ भाए सतगुर को फेरे फिर वाए ॥ बजे सधा ने मंगल गाए लैं दुलहनी दुलहा जब आए ॥ जुरी द्वार पर[4] तिय समुदाय ॥ रोके गुरू पौरपर घरकी करी आरती आरत हरिकी ॥ वारी वार मात तब पीओ अनंद उमग चलियो भर हीओ ॥ अती सुंद्री नाम सुद्री करसु सगन इकठे बैठाए (देखो सिखों की परमाणीक पुस्तक पंथ प्रकास पृष्ठ ६२८ से ६२९ तक) नोट—श्री गुरू दसमजीके इसी प्रकार

१ देवते २ ब्राह्मण ३ खबर ४ दरवाजेपर ५ पाणी

हिन्दू रीति जन्मसे वर्ण बिवस्था अनुसार दो विवाह और हुए सूर्य प्रकाश और गुर ब्यलास पात साही १० में लिखे हैं॥ प्रश्न—गुरु साहिबोंने अपनी कन्या हिन्दू रीतिसे नहीं विवाही॥ गुरुओं को जैसे कन्या दी वैसे लेली उत्तर—दसों गुरुओंमें गुरु अंगद जीके कन्या बीबी खीवी, गुरू अमरदास जीके बीबी भानी, गुरू हरि गोविंद जीके बीबी बीरो थी॥ आखरी कन्या का विवाह दिखलाता हूं॥ दो० पांच गड़ी जब निस गई प्रोहित कहेयो सुनाय॥ महाराज बिलम[1] न करहू[2] लागा देहु बुलाइ॥ चौ० तुरत[3] तवन हकारन गयो धर्म[4] साथ कैहत इम भयो लैकर दूलो चलहु अगारे सभा[5] जानु गुरु[6] तुमह हकारे॥ सुनत सीघ्र ही होकर त्यारी बाजत बादत कार अगारी॥ कर कुल रीत बेदका अंद्र बैठ-रियो दूलहु तब सुंद्र॥ गणपति नवग्रह को पूजवाइ॥ अग्न करी अभिसेचन लियाये॥ इम कह[7] लगे करन सो काज। फेरे फेरन केर समाज॥ द्विज आज्ञासे कंन्या आनी वेदी बिखै वठावन ठानी॥ बैदक लौकिक कीनम रीत॥ लावादाई मुदत सभ चीत॥ सगरो काज संपूर्ण भियो उठ दूलहु निज डेरे गियो (उक्त सूर्य प्रकाश रास ९ अंस १८ कक्ता अंक १ से ४ और १५ से १७ तक) नोट— इसी प्रकार गुर बिलास पात साही ६ में बीबी बीरोंका विवाह हिन्दू रीतिसे लिखा है॥ प्रश्न—नवीन सिंह अकाली लोग तो गुरू ग्रन्थ साहिवजीको मानते हैं सो उसमें हिन्दू रीतिसे विवाह की आज्ञा कोई नहीं॥ उत्तर—श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जीमें हिंदू रीतिसे विवाह की आज्ञा है॥ यथा—

---

१ बुलानेवाला २ गुरू ६ का कुड़म ३ ब्याहदड़ ४ लग्न समय ५ बुलाना ६ बाजे ७ ब्राह्मण

(१) पंडित[१] पाधे[२] आण पती बियाह चाया बलिराम जीउ ॥ पत्ती वचाई[३] मन वजी वधाई[४] जब साजन सुणे घरि आए ॥ गुणी गयानी बहमतां पकाया फेरे तत्त दिवाए (श्री गुरू आद ग्रंथ साहिब राग सूही महाला ४ छंद शब्द १ तुक ४) नोट—उक्त शब्दमें आज्ञा है पंडित पाधे ज्योतिष द्वारा बिवाह की पत्रका लिखना ॥ हिन्दू रीतीसे फेरे देने चाहीये

(हरि पहलड़ी लाव पर विरतीं कर्म[५] द्रिड़ाया बलिराम जीउ ॥ बाणी ब्रह्मा बेद धर्म द्रिड़हु पाप तजाया बलिराम जीउ (आदि ग्रन्थ साहिब राग सूही महान्ला ४ छन्त शब्द २ तुक १) नोट-उक्त शब्दसे गुरू जीकी आज्ञा है लावा (बिवाह) में बाणी ब्रह्मा वेद आज्ञा (धर्म) समझ उस पर निश्चा करनेसे पापसे बचेगे ॥

(३) काजीयां बामणा की गलथ की अगद[६] पड़े सैतान वेलालों (आद ग्रन्थ साहिब राग तैलंग महाला १ शब्द ५ तुक १) नोट—श्रीगुरू नानक जी कहते हैं काजीयों के द्वारा निकाह ॥ ब्राह्मणों द्वारा विवाह (अगद) रेह जाएंगे हे लालो शैतानी विवाह होगे ॥ अनंद बगैरा ॥ जो आजकल चल पड़े हैं ॥

(४) बाबा[७] लग्न[८] गनाऊ हौभी वंजा[९] सौहरे ।) (आद ग्रन्थसाहिब राग सूही महाला १ छंत शब्द १ तुक ३) नोट—लग्न शब्द का अर्थ असे गुरु गिरार्थ कोश में किया है ॥ यथा—लग्न राशीओं का उदय ॥ यथा-"बाबा लग्न गणाइ हंभी

१ इक पंडित पाधे मिसर कहाई (आदिग्रन्थ साहिब) २ साहे चिठी ३ ज्योतिषी ४ संमती ५ निश्चिय ६ निकाह ७ पिता ८ मेख-वृष-मिथुन-कर्क—सिंह आदी ९ जामं

वजा साहुरे "पिता को पुत्री कैहतीहै हे पिता मेरा शुभ काह जोतसी से गणाइ सुभ कराउ ॥ जिस शुभ लग्न मों आनसखीओ वत मैभी साहुरे घर आपणे पतिपास जावां ॥ औजाकर मन बाञ्छत पदार्थों के लाभ से सुख को प्राप्त होवा (देखो श्री गुरु आदि ग्रंथ साहिब जी का "गुरु गिरार्थकोश "अत्तर त से ३ तक पृष्ठ ६२७ कालम २ पंक्ती ९ से ११ तक) अंतम प्रार्थना ॥ उक्त परपाणोंसे जन्म से वर्ण व्यवस्था सिद्ध होती है दसों गुरु हिन्दू खत्री (गुरु नानक वेदी, खत्री अंगद तेहणखत्री, रामदास सोढी खत्री, बाकी छैगुरु रामदासजी की संतान सोढी खत्री है ॥ इनका बेटी लेनदेन (विवाह संबंध) हिन्दू खत्री मरवाहे, खोसले, धुसे, कुमराव, रिखराउ, सूहड़ी, सिव्ले, चोणे, लंब, सेखड़ी, बडेरे आदि जातियों में गुरु साहिबान और उनके खानदानके २२ विवाह हुए जो विस्तार पूर्वक मेरी रचित नवीनसिंहशित्ना नागरी और जद्दी रूहतहे फूस्ते गुरमुखीमें देखो ॥ प्रश्न गुरु साहिब तो जन्मसे वर्ण विवस्था का खंडन करते हैं ॥ यथा गर्भवासमहि कुल नहि जाती ॥ ब्रह्मबिंदु ते सभ उतपाती ॥ १ ॥ कहुरे पंडित बामन कबके हुए ॥ बामन कहि कहि जन्ममतखोए १ रहाउ ॥ जो तू ब्राह्मणीजाइया ॥ तउ आन बाट काहे नही आइया ॥ २ ॥ तुम कत ब्राह्मण हमकत सूद ॥ हम कत लोहू तुम कत दूध ॥ ३ ॥ कहु कबीर ब्रह्म विचारै ॥ सो ब्राह्मण कहीअतुहै हमारै ॥ ४ ॥ (आदि ग्रंथसाहिब राग गौड़ी बाणी कबीर जी शब्द ७) उत्तर-कबीर जी जन्म से जाती (वर्ण व्यवस्था) मानते हैं ॥ यथा-

(१) जाति जुलाहा मतिका धीर ॥ सहिजसहिज

गुण रमै कबीर (आद ग्रन्थ सा० गौडी वाणी कबीर शब्द २६ तुक ३)

(२) तू बामन मै कासी का जुलाहा बूझहु मारे गिआना (आद ग्रन्थसा० राग आसा बाणी कबीर जी शब्द २६ तुक ३)

(३) तू ब्राह्मण में कासी का जुलाहा मुहि तुहि ब्राबरी कैसे कै बने (आदग्रंथ साहिब राग रामकली वाणी कबीरजी शब्द ५ तुक २)

(४) कबीर जहमुख बेद गायत्री निकसै सो कियो ब्राह्मण बिसर करे ॥ जाके पाए जगत सभलागे (आद ग्रंथ साहिब)

(५)कबीर ब्राह्मण गुरहै जगत का (उक्त पता श्लोक २३७ कबीरजी) उक्त शब्दमें अर्थ भ्रांती॥"गर्भबास महि कुल नही जाती "गर्भवास कर्मों से मिलता है कर्मों के फल से जाती होती है "जैह प्रसाद तेरी निकी जात(सुखमनी) और जो कुल नहीं जाती "तुक में नकार देहली दीपक न्यायें से अर्थ जातीका वनता है जैसे वृक्षों में,पशुओं में;पक्षीओं में मृतकामें, पथरों में इसी प्रकार पुरूषों में जाती पृथक २ है ॥ "ब्रह्म बिंदुनेसभ उतपाती 'ब्रह्म बिंद (बीर्य) से सभ की उतपती है सो ठीक है यदि एक जाती (समान) मानों तो माता भगनी स्त्री में क्यों भेद मानते हैं सर्व स्त्री एकसा हैं और राजा रंक में फरक नहीं होना चाहीये ॥ और लोहे स्वर्ण में फरक नहीं होना चाहीये सो है ॥ "कहुरे पंडित बामन कब के हुए ॥ बामन कहि कहि जन्ममत खोए" कहो पंडित ब्राह्मण कबके हुए हैं "चहु बर्णा को दे उपदेश नानक उस पंडित को संदा अदेस (सुखमनी) येह उपदेश का कर्म करो

उत्म जन्त मत खो।। "जो तू ब्राह्मण ब्राह्मणी जाइया तो आन बाट काहे नहीआया "जो तू ब्राह्मण ब्राह्मणी से शुभ कर्मोंके अनुसार जन्मा है तो मुक्त क्यों नहीं हुआ "तुम कत ब्राह्मण हम कत सूद हमकत लहू तुमकत दूध" तुम ब्राह्मण कैसे और हम सूद्र कैसे हमारेमें लहू है तुमारेमें दूध है एक समान लहू है ॥ सो समान दृष्टी माता भग्नी स्त्री में भी होनी चाहीये और मूत्र दुगध में भी होनी चाहीये और विष्टा अंनमें भी होनी चाही तब उक्त शब्द की तुक सार्थक होती है नहीं नवीनसिंहों का अज्ञान और वृथा बकवाद है ' कहु कबीर जो ब्रह्म बीचारै सो ब्राह्मण कहीयतहै हमारै ' ब्रह्म बीचार वाला ब्राह्मण होता है सो यथार्थ नहीं ब्रह्मविचार कर्म है जिसका फल आगे को होना है ततकाल फल मानना अज्ञान है ॥ इति उत्तर ॥ नोट–ऐसेही शब्दों की व्यवस्था समझो ॥ पक्की पुष्टी वर्ण-व्यवस्था गुरुओंके व्याह से समझो जो गुरू साहिबोंने अपने वर्ण में लड़की देन लेन विवाह संबन्ध कीया और पतिव्रत धर्म्म से भी जन्म से वर्णव्यवस्था सिद्ध होती है ॥ यथा–

गुरू घरमें हिन्दूओं की सदृश पतिव्रतधर्म्म

(१) केतीनार वर एक समाल गुरमुख मरण जीवन प्रभनाल (श्री गुरु आद ग्रंथ साहिब राग रामकली महाल्ला १ वाणी दखणी ओअंकार शब्द २१)

(२) मैं कामण मेरा कंत करतार ॥ जेहा करावी तेहाकरी सिंगार ॥ जा तिस भावै करै भोग मनतन साचे साहिब जोग (आद ग्रंथसाहिब राग भैरों महाला ३ शब्द ४ तुक १)

(३) जेपिर बहुघर हंडणा सतरखे नारे ॥ अमर चलाऐ चमदे चाकर विचारे (श्री भाई गुरदासजी की वार ३५ पौड़ी २०)

ब्रह्म विज्ञानन्द कृत थी

(४) खाविंदनू मैं जाणदी हां गुरूभी परमेसर भी ॥ तां गुरू जी बोले सिखणीयें तूं धंनहैं ॥ धंन तेरे पेके धंनतेरे साहुरे ॥ जो तुध इक वेरी सुणके सिदक भरतेदा रख्या ॥ जाह तेरी भावना पूरी होई ॥ एहराहु सिधा है (देखो सौसाखी की साखी ३४ श्री मुख बाक पात साही १०) नोट—इस पति व्रत धर्म्म पर गुरू-घरमें पूर्ण आचरण (अमल दरामद) जो गुरू अमर दास और उनकी पुत्री बीबी भांनी जीकी बारता ताप सूर्य प्रकाश से प्रगट है ॥ यथा—

(५) इक दिन भजन कर गुरु धीरे ॥ भानी आय दरस को करेइ ॥ पिख तनजा पर परम कृपाला ॥ श्री मुखते बोले तत काला ॥ ४ ॥ रामदस अब तन परहर हैं ॥ कहु पुत्री किया तब तू कर है ॥ छिन भंगुर सभ अहै शरीर ॥ बिन सत तुरतन कर ही धीर ॥४॥ भानी महा चतुर तब जानी ॥ होत न कबहूं कूर पित बानी ॥ द्रिढ निश्चै कर इसी परकारी ॥ करत सीघ्र नक नाथ उतारी ॥ ६ ॥ श्री गुरु पितके धरी अगारी ॥ हाथ जोर मुख बिनै उचारी ॥ प्रभजी अपर कार क्या कर हौं ॥ जे बिधबाके धर्म्म सुधर हौं ॥७॥ किधों चिता के उपर चढ़ हौं ॥ जर कर पतिके संग सिधर हौं ॥ जो तुम आ ग्या होइ स करहौं ॥ निश्चै मरियो सुरिदै बिचरियो ८ सुन श्री सतगुर वाक बखाने ॥ हे पुत्री सुन सुमति महाने ॥ तनको राख भजहु जगदीस ॥ अब मैं तुमैं कर हौं तुम बखसीस ॥ ९ ॥ राम दासकी अब बय- नाहीं ॥ पूरण अवध आज दिन माहीं ॥ तिन जीवन को आन उपाइ ॥ नहीं होत निश्चै तुम लियाइ ॥ १० ॥ अपनि आर बला अब मैं देवों ॥ हित प्रलोक गमन शुभ लेवों ॥ इम कह राम दास बुलवाइव ॥ ११ ॥ निकट

बैठाइ भले समझाइव ॥ हे सुत तेरी अवध बिताई ॥ मैं अब जान लीन अगवाई ॥ इक सत संमत आठ अरु चाली आरबला हमरे तन सारी ॥१२॥ अब खट बरख इकादस मास ओस अष्ट दस सेस रहास ॥ सो अपनी हम तुमको दीनस ॥ प्रेम भक्त में लीन प्रवीनस ॥१२॥ देखो सूर्य प्रकाश रास १ अंसू ६७ कविता अंक ४ से १३) नोट–सती होनेकी आज्ञा श्रीगुरु आदि ग्रन्थ साहिब में है ॥ यथा ॥ बिनुसत सती होइ कैसे नारि ॥ (आद ग्रन्थसा० राग गौड़ी कबीर जी शब्द ३३ तुक १) कंता नाल महेली आ सेती अगि जलाहि ॥ जेजाणहि पिर आपणा तांतन दुख सहाहि ॥ नानक कंतन जानणनीसे किउ अगि जलाहि ॥ भावै जीवउ कै मरउ दूर ही भजि जाहि (श्री गुरु आद ग्रन्थ साहिब राग सूही की वार महाला ३ पौड़ी ६ का श्लोक ३) नोट–पती व्रत धर्म्मसे वरध कर्म करने पर स्त्रीयों को नर्क जाना पड़ेगा ॥ यथा ॥ खसम मरै तौ नार न रोवै ॥ उस रखवारां औरे होवै ॥ रखवारे का होए बिनास ॥ आगे नर्क इहां भोग बिलास (आद ग्रन्थ सा० राग गौंड़ बाणी कबीरजी शब्द ७तुक१ महाला ५)

उपदेशसंख्या ७

गुरू साहिबान और गुरू संप्रदाय अपने आपको हिन्दू मानते हैं

(१) श्री गुरु नानक देवजी से अर्ब (मक्के) में पूछा आप मुसलमान हो या हिन्दू ॥ गुरु जी मुसलमानों को उत्तर देते हैं ॥ यथा ॥ हिन्दू कहां तां मारीये मुसलमान भी ना[1]-

[1] नहीं

ह ॥ पंज ततका पूतला नानक मेरा नाऊ ॥ (देखो जन्म साखी श्री भाई मनी सिंह कृतमें) नोट-गुरु नानक जी हिन्दू मनसे सुनकर नहीं हुए

(२) गुरु नानक जी को मक्के के मुसलमानों ने कहा हिन्दू दोजकी काफर है जो जलाए जाते है ॥ गुरु नानक जीने बेधड़क होकर कहा मुसलमान भी जलाए जाते हैं ॥ यथा ॥ मिटी मुसलमानकी पेड़ै पई कुमि[1] आर ॥ घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी[2] करे पुकार ॥ जलि जलि रोवै बपड़ी झड़ि झड़ि पवहि अंगिआर ॥ नानक जिन करतै कारण किया सो जाणै करतार ॥ (श्री गुरु आद ग्रन्थ साहिब राग आसाकी वार महाला १ पौड़ी ६ का श्लोक २)

(३) मक्के के मुसलमानोंने कहा हिन्दूओंका धर्म कर्म निकंमा है गुरु जीने अपने हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता बतलाई ॥ यथा-हिन्दू सालाही[3] सालाहन दर्शन रूप अपार ॥ तीर्थ नावहि अरचा[4] पूजा अगरवास[5] बहु कार (श्री गुरु आद ग्रंथ साहिब राग आसा की वार महाल्ला १ पौड़ी ६ का श्लोक १)

(४) श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी मुसलमानोंको भी हिन्दू सिद्ध करता है ॥ यथा-सुन्नत[6] किये तुर्क[7] जे होइगा॥औरत का क्या करीये॥ अर्ध शरीरी नारन छोड़ी तांते हिन्दू रहीये (श्री गुरु आद ग्रंथ साहिब राग आसा बाणी कबीर जी शब्द ८ तुक ३ महाला ५)

(५) श्री बाबेजी आखिया हौ हिन्दू हां (देखो जन्म साखी भाई बाले बाली की साखी ८०)

---

१ कुमार २ भसम होती हुई ३ तारीफ ४ पूजा ५ हवनादि धूप ६ मुसलमानी चिन्ह ७ मुसलमान

(६) तां इक हाजी पुछेया फकीर जी तू हिन्दू है कि मुसलमान हैं ॥ ता बावेजी केहा जी असी हिन्दू फकीर हां (उक्त जन्म साखी की साखी ३६)

(७) तां बादशाहनै सुण कर बड़ा क्रोध कर के आखिया अरे तुम हिन्दू फकीर को दरयाओ में डोवदे हुतां (उक्त जन्म साखी की साखी ११६) नोट–कादीयां वाले मर जईयोंको शर्म होनी चाहीये जो गुरू नानक जी को मुसलनान बताते हैं ॥

(८) श्री गुरू तेग बहादर जी अपने अपने आप को हिन्दू मानते हैं ॥ यथा–तिनते सुन श्री तेग बहाद्र ॥ धर्म निवाहण[1] बिखें बहाद्र ॥ उतर[2] भनियो धर्म हंम हिन्दू ॥ अति प्रय के किम करे निकंदू (सूर्ग प्रकाश)

(९) गुरू दसम जी हिन्दू हैं ॥ तुम हिन्दू के पीर[3] हो (देखो सौसाखीकी साखी ३६)

(१०) गिया हिन्द पीर कहताली वजाई (देखो सौसाखी साखी ५६)

(११) हिन्दू पीर भजहु कसर.स हो (सौसाखीकी साखी ६७)

(१२)श्रीगुरू दसमजीने वादशाह बहादरशाहके पूछनेपर हिंदू धर्मकी श्रेष्टता जाहरकी॥यथा-आसत नासत दो नर रचे विधनै सुरत समाल ॥ आसत ते हिन्दू भए नासत ते मुसल-मान (सौसाखीकी साखी ९४) नोट उक्त प्रमाण९-१०-११ से प्रगट है गुरू दसजीको लोग हिन्दू कहते हैं और वोह अपने आपको हिन्दू मानते हैं ॥ और हिन्दू धर्म्म पापी लोग छोड़ देगे ॥ यथा–चौ० संकर वर्ण प्रजा सभ होई॥ छत्री जगत

१ प्यारा २ दूर ३ गुरू

न देखीअै कोई ॥ एक एक अैसो मतिकै है ॥ जाते प्रास सूद्रता हुई है ॥ हिन्दू तुर्क मति दुहूं प्रहरि करि चलहै भिन भिन मत घर घर (देखो दसम गुरू ग्रंथ साहिब श्री मुख वाक पातसाही १० निहकलंकी अवतार कविता अंक १० और ११)

(१३) श्री गुरू दसमजी के पुत्र अपने आपको हिन्दू मानते हैं ॥ अपना हिन्दू धर्म छोड़ना पाप समझते हैं ॥यथा॥ नाती हम तौन के बखयाती जगजाने सभ ॥ धर्महेत दियो जिन दिल्ली सिर जाइहै ॥ और हम एक बात कहें तब पास सात तुरकरन बनात जाते धर्म न जाएहै॥ तुर्क भए मरे नाहीं॥ हिन्दू रहे मरजाहि काल सभहूं को खाइहै ॥ ताँते अब तुम बिचार करो चारदिन जीवन के हेत हम धर्म कियों गवाइ है (पंथ प्रकाश)

(१४) श्री गुरू १० जी के सिंह अपने आप को हिन्दू मानेते हैं (क) जगे सिंह बलवंत बीरसभ दुष्ट खपाए ॥ दीनमहंमदी उठगिया हिन्दक ठैहराए ॥ (सिखों में प्रमाणीक पुस्तक भाई गुरदासजी की वार ४१) (ख) हिन्दू शस्त्रांथी भैमान हैसन ॥ जुधमई बाणी अतेज्ञान उपदेश करकै इनाथी जुधकरवाया है (सिखों में प्रमाणीक पुस्तक श्री भाई मनीसिंह कृत भगत रत्ना वली साखी १३५) (घ) मेरा सिख मुसलमानी तीवी साथ भोग करेगा सो सिख नहीं ॥ हिन्दू धर्म वाला तुर्कनीते बचेगा (देखो सिखों में पर्म परमाणीक सौसाखी की साखी २६ श्री मुखवाक पातसाही १०) (ङ) जगे धर्म हिन्दू सगल दुंद भाजे (श्री मुखवाकपातसाही १० छक्के छंद ५ (च) रैहरासदे वेले

१ छोड़ कर २ पोत्रे ३ मुसलमान ४ रती कर्म ५ सायंकाल

सिख आया ॥ हजूर[1] मथा टेकके किहिया जी पातशाह मैं सिखहां ॥ लड़ाई विच लड़दा २ मैं डिग पिया अते बिहोसही होगिया ॥ तां मैनू तुर्क लै गए ॥ जाए के सराकीती तुध मैं की करा धर्म सिखीदा अते हिन्दू-दा जिवैं[2] मेरा रहे तिवैं रखियाकरो नहीं तामैं चिखाकरके सड़दाहां[3] (उक्त सौसाखी की साखी ३२ श्रीमुखवाक पातसाही १०)

(१५) गुरू और ग्रंथसाहिब जी हिन्दू और मुसलमान दो ही मत मानते हैं ॥ यथा ॥ कोई[4] बोले रामराम कोई[5] खुदाइ ॥ कोई सेवै गुसईयां कोई अलाइ ॥ १ ॥ कारण कर्ण करीम कृपा धार रहीम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोई नावै तीर्थी कोई हज जाइ ॥ कोई करै पूजा कोई सिरनवाइ ॥२॥ कोई पड़े बेद कोई कतेब ॥ कोई ओढै नील कोई सपेद ॥ ३ ॥ कोई कहे तुर्क कोई कहे हिंदू ॥ कोई बाछैभिस्त कोई सुरगिंदू ॥ ४ ॥ कहुनानक जिन हुकम पछाता ॥ प्रभ साहिब का भेदजाता ॥ ५ ॥ (आद ग्रन्थसाहिब राग रामकली महाला ५ शब्द ९) नोट-उक्त शब्द से प्रगट है संसार में दोही पंथ हैं हिन्दू या मुसलमान इनसे वरुध तीसरा पंथ खड़ा करना गुरूसाहिबान और ग्रंथसाहिब को संसारमें झूठा बनाना है ॥ भाई कांनसिंह नाभा निवासीको सरम आनी चाहीये जो "सिखहिन्दू नहीं,; पुस्तकें लिख फूट पाकर पाप के भागी बन रहा हैं यदि हिन्दू धर्म्म से नवीनसिंह (अकालीयों नै) जुदा होना है तो गुरू ग्रन्थसाहिब को छोड़दें या नया ग्रन्थसाहिब बनालें तब हिन्दू धर्म्मसे अलैहदा होसकेंगे ॥

१ गुरू १०दसजी २ चिता ३ भसम (अग्नीदाह) ४ हिन्दू ५ मुसलमान

उपदेश संख्या ८

गुरू साहिबान पुराण शास्त्र बेद मानने वाले हिन्दू हैं

(पुराण और गुरुमत धर्म्मग्रन्थ)

(१) पोथी प्रमेसर का थान[1] (आदि ग्रंथ साहिब राग सारंग महाला ५ शब्द ११३ तुक १)

(२) पोथी पुराण कमाईये (आद ग्रंथसाहिब राग श्री महाला १ शब्द ३३ तुक २)

(३) दसअठारा[2]मैं अपरंपरचीनै (उक्त पता राग श्री महाला १ शब्द २६ तुक ३)

(४) सपतदीप सपतसागरां ॥ नवखंड चार बेद दस अष्ट पुराणा[2]॥ हरि सभना विच वरतदा हरि सभना भाणा (उक्त पता श्री की वार महाला ३ पौड़ी ४)

(५) जुग जुग आपोआपणा धर्म है सोध देखो बेद पुराना (उक्त पता राग बिलावल महाला ३ शब्द ४ तु० ३

(६) हरि हरि कथा पड़ह पुराण जीऊ (उक्त पता राग रामकली बाणी सद पौड़ी ५)

(७) बेद पुराण सिमरती बूझै मूल ॥ सूखम[3] महि जाणै असथूल ॥ चहु बर्णा को दे उपदेश ॥ नानक उस पंडित को सदा अदेश[4] (उक्त पता राग गौड़ी महाला ५ बाणी सुखमनी अष्टपदी ९ तुक ४) नोट—उक्त परमाणों से प्रगट है गुरु साहिब पुराणोंको वेद शास्त्र के सदस धर्म्म ग्रन्थ मानते हैं ॥

---

१ स्थान २ अठारह पुराण ३ सूक्ष्म ४ नमस्कार

(बेद और गुरूमत धर्म्म ग्रन्थ)

(८) असंखग्रंथ[1] मुख बेद पाठ (आद ग्रंथ साहिब बाणी जपजी साहिब महाला १ पौड़ी १७)

(९) अहरण[2] मत बेद हथियार (उक्त पता जपजी पौड़ी ३९)

(१०) बेद पाठ मति पापा खाइ (उक्त पता राग सूही की वार महाला १ पौड़ी १७ का श्लोक १)

(११) चारे बेद होए सचयार ॥ पड़ैं गुणै नित-चार विचार (उक्त पता राग आसा की वार महाला १ पौड़ी १३ श्लोक १)

(१२) बेद वपारी ज्ञान[3] रास कर्मा पलैं होइ ॥ (उक्त पता राग सारंग की वार महाला १ पौड़ी १६)

(१३) बाणी ब्रह्मा बेद धर्म द्रिड़हु[4] पाप तजाया बलि राम जीउ (उक्त पता राग सूही महाला ४ छन्त शब्द २ तुक १

(१४) बेद शास्त्र को तर्कन[5] लागा ॥ तत जो गुन पैहचानै (उक्त पता राग आसा महाला ५ शब्द ४२ तुक २)

(१५) बेदशास्त्र जन ध्यावहु तरणको संसार (उक्त पता राग आसा म० ५ शब्द १३७ तुक २)

(१६) बेद शास्त्र जन पुकारैं सुनै नाही डोरा[6] ॥ (उक्त पता राग आसा म० ५ पड़ताल शब्द १ तुक २)

(१७) सामबेद रिग जुजर अथर्बण ब्रह्मे है माया त्रैगुण (उक्तपता राग मारू म० १ सोहिले शब्द १७ तुक ६)

(१८) चचौ चार वेद जिन साजे चारेखाड़ी चार

---

१ अणगिणत २भारी लोहा ३पुन्जी ४ निश्चय करा ५ हुजत ६कानों से बैहरा

जुग ॥ (उक्त पता राग आसा महाला १ पटीलीखी शब्द ६)

(१६) वेद कतेब कहुमत झूठे झूठा जोन विचारै ॥ (उक्त पता राग प्रभाती बाणी कबीर जी शब्द ४ तुक १ महाला ५)

(२०) वेद पुराण शास्त्र विचारं ॥ एकं कार नाम उर धारं ॥ कुल समूह सगल उधारं वड़ भागी नानक को तारं (आद ग्रंथ सा० गाथा म० ५ शब्द २०)

(२१) जिनै बेद पठियों सो बेदी कहाए ॥ तिनै धर्मके कर्म नीके चलाए (श्री गुरु दसम ग्रन्थ साहिब श्री मुख वाक पातसाही १० बचित्र नाटिक अध्याये ७ कबिता अंक १)

(२२) पड़े सामबेदं जुजर बेदकथं ॥ रिग बेद पठियं करे भाव हथं ॥ अथर्व बेद पठियं सुणे पाप न ठियं (उक्त पता बचित्र नाटिक अध्याये ७ कबिता अंक ३)

(२३) बेद ग्रन्थ गुर[1] हट[2] हैं ॥ जिस लग भवजल[3] पार उतारा (श्री भाई गुर दासजीकी बार १ पौड़ी १७)

(२४) लोका चारीलोक विच ॥ वेद वचारी कर्म करन्दा ॥ सावधान गुरज्ञान विच जीवन मुक्त जुगत वचरंदा (उक्त पता गुरदास बार १६ पौड़ी ३)

(२५) गुरकी आज्ञासही बेद धर्मकी रीत (देखो सिखों में धर्म प्रमाणीक सौ साखीकी साखी ७ श्रीमुख वाक-पातसाही १०)

(२६) बेदकी रीतिको त्याग करे नहीं (उक्त पता सौसाखीकी साखी ८)

(२७) वेद शास्त्र गुर वाकको धारे (उक्त पता

१ श्रेष्ठ २ दुकांन ३ संसार (मरन जन्म)

सौसाखीकी साखी ६१) नोट–इत्यादि अनेक परमाण हैं जिन से गुरु साहिब पुराण शास्त्र वेदके मानने वाले सनातन धर्म्मी हिन्दू सिद्ध होते हैं ॥ फिर वेद शास्त्र की निन्दा करनी और निंदा की पुस्तकें लिखनी नवीन सिंहों का अज्ञान और पाप है गुरु नानक और नौ गुरुओंके पिता पितामहि आदि वेद शास्त्र पुराण को धर्म्म ग्रन्थ मानते थे उनकी क्या सतगती नहीं हुई अवश्य हुई है जो आजकल वेद, शास्त्र, पुराण, को धर्म ग्रन्थ मानेगे उनकी अवश्य सद्गती होगी ॥

उपदेश संख्या ६

गौरक्षा श्री गुरुग्रन्थ साहिबादि गुरमत धर्म्म ग्रन्थ॥

(१) हक पराया[1] नानका उस सूअर उस गाय (श्री गुरू आद ग्रन्थसाहिब राग माझ की वार महाल्ला १ पौड़ी ७ का श्लोक २)

(२) गौ ब्राह्मण को करलावहु[2] गोबर तरनन जाई (श्री गुरु आद ग्रन्थ साहिब राग आसा की वार महाला १ पौड़ी १६ का श्लोक २)

(३) ब्राह्मण कैली[3] घात कंञका[4] अणा चारी[5] का धान[6] (श्री गुरु आद ग्रन्थसाहिब श्लोक वारांते वधीक महाला ३ श्लोक १७)

(४) काजी मूला बिनती फुर माए बखसी हिन्दू मैं तेरी गाय (आद ग्रन्थ साहिब राग भैरों बाणी नामदेव शब्द १० तुक २२)

(५) ठाकुर द्वारे ढाहिके तहठौर मसीत उसारा ॥

१ दूसरे की वस्तू २ दुख देना और टैकस लगाना ३ कपला गौ ४ कंन्या ५ भ्रष्टचारी ६ माल

मारन गौ गरीबनू धरती उपर पाप बिथारा पापेदा वर-तिया वरतारा (श्री भाई गुरदास जीकी वार १ पौड़ी ३०)

(६) परधन सूअर गांई जिऊं मकरू हिन्दू मुसल माणे (श्री भाई गुरदास जीकी वार ६ पौड़ी ८)

(७) बामणगांई वंसघात लायत वार असामी ॥ (श्री भाई गुरदास जीकी वार १८ पौड़ी २१)

(८) बामण गाई वंसघात अपराध करारे (श्री भाई गुरदास जीकी वार २४ पौड़ी १६)

(९) गाई माणिक[1] निगलिया पेट पाड़न मारे (श्री भाई गुरदास जीकी वार ३५ पौड़ी २०)

(१०) जीऊं मरयादा हिन्दू आं गौमास अखाजू[2] (श्री भाई गुरदासजीकी वार ३५ पौड़ी १२)

(११) गोवर गो मूत्र सूत्र[3] पर्म पवीत्र भए (श्री भाई गुर दास जीके कबित २०१)

(१३) यही देह आज्ञा तुर्क[4] को खपाऊं ॥ गौ घात का दुख जगतसे हटाऊं आसपूर्ण करो तुम हमारी मिटे कष्ट गौअन छुटे खेद भारी (दसम ग्रन्थ साहिब वावे अटल वाले में छक्के छंद पातसाही १०)

(१४) जो धर्म्म दा जुध करे ॥ जिथे कोऊ गौआंनू के अथितानूके ब्राह्मणानू के ब्राह्मणानू दुखावै ॥ तां ओथै जुधकरै वौहुते थोड़े न विचारे ॥ ते जो कुछ पास होवै सो दान करै दाना करकै शस्त्रां विच वरकत हुंदी है ॥ जस हुंदा है जस अंमृत समान है ॥ अपजस बिख समान है ॥ (सिखों में परमाणीक भाई मनीसिंह कृत भगत रत्नावली साखी ६१)

१ कीमतरत्न २ अख्य ३ यज्ञोपवीत ४ मुसलमान

(१५) तेग बहादर प्रकट होया है ॥ औसी तेगबहादरी दिखाऊंगा जो गौ ब्राह्मण दा कष्ट दूर करेगा (उक्त श्री भाई मनी सिंह कृत भगत रत्ना वली साखी १३०)

(१६) दशवें पातसाहजीदा औतार धर्म्म चरतावण वास्तेहोया है ॥ एनादे राज विच गौ दीते ब्राह्मण रिखां मुनी सरा दी सर्बदी रख्या होवैगी (उक्त श्री भाई मनी सिंह कृत भगत रत्ना वली साखी १३५) नोट–उक्त परमाणों से गौ रक्षा और महात्म स्पष्ट प्रगट है यहांतक श्री गुरू अरजनदेवजी पंजबी पातसाहीने चंदू दिवान की कन्याका नाता गुरू हरि गोविंद जीसे हटाने के कारण दीवान चंदू सुआई ने गुरु ५ पर गोका कच्चा चर्म देना चाहा ॥यथा॥ चौ० अपने मनमैं औसो चीनो और जतन येह बोलत नाहीं ॥ हिन्दू-सौंह[1] जु सोइ कराहीं ॥ दो० गौका चर्म उतारकै याको तन देहु छाइ ॥ तबै सगाई मान है धर्म हेत डर पाइ (गुर विलास पात साही ६ अध्याये ६ कविता अंक २०५ और २०६) नोट–गुरू अरजन जीनै रावीनदी लहौर समीप सनान के बहाने प्राण देदिये हिन्दू धर्म बरूद्ध गौका चर्म धारण नहीं किया ॥ गुरू जी यहां तक गौके मानने वाले थे ॥

(१७) मंत्री वज़ीर कलूर पति मिल तिन कियो उपाइ ॥ गाउ बनाइस चूनकी बांध अनंद पुर आइ ॥ (देखो गुर विलास पातसाही १० अध्याये ७ कविता अंक १९९) नोट श्रीगुरू १० जीको सिखोंनै कहा क्या गौ माननी है फिर येह आटे की ॥ गुरूजी नै उत्तर में आज्ञा प्रगट की ॥ यथा ॥ हमको सही माननी जोगा ॥ यामै साच सुधिक प्रयोगा ॥ १४॥ बैरी अधिक होय निजदुखी ॥ गऊ आदि

[1] शपथ

सहुं देवै सुखी ॥ जो तिहनह मानै घर छत्री ॥ और कौन मानै बिन अत्री ॥१५॥ सो जब धर्म धरै सुजाना॥ अवर कौन कह धर्म धराना ॥ तुव आनंदपुरकी कही ॥ दिख अब पलमै चलहै सही ॥ १६ ॥ अनंदपुर हमरो बड़घरा ॥ कहां भयो आए इह धरा ॥ यौसुन बैन मौन सिख रहा ॥ कृपासिंध अनंद जीअ गहा ॥१७॥ (देखो गुर बिलास पातसाही १० अध्याये ८ कविता अंक १४ से १७) नोट—उक्त प्रमाणसे प्रगट है कि गुरू १० जी अत्यन्त गौरक्षक है जो आटे की गौ की शपथ (सौगंद) मना लड़ाई में अनंद पुर छोड़ कर अपार दुख उठाया ॥ प्रश्न—आजकलके विद्वान भाईकानसिंह नाभानिवासी जैसे अकाली अपने रचे "हम हिंदू नहीं "पृष्ठ ५७ पंक्ती[१] १४ से १७ तक ॥ कूकिया दे दिमाग विच गाईयां[२] दा वग वाड़ के अजेहा खौरू पुआया विचा-रेयांदी मिंजकढ सिटी ॥ उत्तर—उक्त १७ परमाणों से प्रगट हैं गौ रत्ता श्री गुरू नानकजी ने की गुरू अमरदासजी ने की गुरू अरजनजी ने की गुरू तेग बहुदरजी ने की गुरू दसमजी ने की भाई गुरदासजी और भाइ मनीसिंहजी गौरक्षक गुरू साहिबों को बतलाते हैं क्या इन सब के दीमाग में खौरू पड़ा हुआ था जिन्होंने गौरत्ता लिये कष्ट उठाए और मिजें निकल-वाई भाईकानसिंहजी को बेशरमी के शोक सागर में डूबजाना चाहीये जो झूठ लिखकर पापी बनरहा है ॥ भला कबी होटलों में भोजन खाने वाले भाई कानसिंह जैसे गोघातके पाप से बच सकते हैं कदापि नहीं ॥ ऐसे पापीयों के साथी भी पापका फल भोगतेहुए महान दुख उठारहे हैं सो प्यारे मित्रो उक्त पापीयों का साथ छोडकर "गुरसिख मीन चलो गुर चाली 'ग्रन्थ

१ शपथ २ चौणा गौओंका समूह

साहिबजी की आज्ञानुसार गौ रक्षक बनों जिनके दुग्ध घीसे संसार की रक्षा हो पुन्य का फलमिले ॥

उपदेशसंख्या १०

❀ श्रीगुरु दसमजीका सच्चा जीवनचरित्र ❀

जो उनके हस्त लिखित दसमग्रन्थसाहिब और परमाणीक परमाणों से ॥

(१) श्री गुरु दसमजी के पूर्व जन्म की तपस्या ॥ यथा ॥ अब मैं अपनी कथा बखानों ॥ तपसाधत जिह बिधि मुहि आनों ॥ हेम कुंट पर्वत है जहां सप्त स्रिंग सोबत है तहां ॥ सप्त स्रिंग तिहनाम कहावा ॥ पंडराज[1] जह जोग कमावा ॥ तहहम अधक तपस्यासाधी ॥ महाकाल कालका[2] राधी ॥ (श्री गुरु दसमग्रंथसाहिब श्रीमुखवाक प.तसाही १० बचित्र नाटिक अध्याये ६ कवितांक १ और २) नोट–गुरु १० जी पूर्व जन्म में महाकाल और काली के सेवक (भक्त) थे देखो सिखों की पुस्तक "तीर्थसंग्रह "पृष्ठ ९७ और ९९ में मए नक्शे के लिखा है जो महाभारत में लिखे लोहपाल तालाब पर दो मन्दिर और दो मूर्तिआं बताईहैं ॥ जिनकी पूजन गुरु १० जी करते थे ॥

(२) गुरु दसमजी का[3] जन्म हिन्दू रीति तीर्थ यात्रा के प्रतापसे हुआ ॥ अथ कबि[4] जन्म कथनं ॥ चौ० मुर पित पूर्व कीयस पयाना ॥ भांतके तीर्थ नाना ॥ जबही जात त्रिबेणी[5] भए ॥ पुंनदान दिनकरत बतए ॥ तही प्रकाश हमारा भयो ॥ पटना सहर बिखै भव लियो (उक्तपता

१ महाकाल का मंद्र है २ कालका (देवी) का मन्दिर है ३ दशम ग्रन्थ साहिब में कवि गुरु १० है ४ त्यारी ५ प्रायगराज

बचित्र नाटिक अध्याये ७ कविता अंक १ और २) नोट दसम ग्रंथ साहिब के कवि गुरू दसमजी हैं कहीं उनका नाम राम-कवि है, कहींस्याम कवी है, कहीं कवीहै, देखो दसमग्रंथसाहिब के सुधाई की रिपोर्ट जो १ कतक सं० १९५८ बि० में खालसा दीवान अंमृतसरदी आज्ञानुसार भाई मनासिंह हकीम अंमृत-सर सकत्रनें छपवाई में ॥

(३) गुरूदसमजी का असली नाम गोबिन्ददास है ॥ (क) सगल दुआर को छाड़कै गहियो तुहारो दुआर ॥ बाहिगहे की लाज अस गोबिंददास तुहार (श्रीगुरू दसम ग्रंथसाहिब श्री मुखवाक पातसाही १० रामावतार के अंत में प्रार्थना कविता अंक ८६४) (ख) मोको दास तवन का जानो (उक्त पता बचित्र नाटक अध्याये ६ कविता अंक ३२) (ग) मै हुँ परम पुरुष को दासा (उक्त पता अ० ७ क० ३३) (घ) दास जान मुहि करी सहाय (उक्त पता अ० १४क० २) (ङ) तुम साहिब मैं दास तिहारा (रैंहदास की चौपाईमें कृष्णा अवतारका कविता अंक ४३६) (च) दास जानकर कृपा करहु मुहि उक्त पताक० ४३७ (छ) तुम साहिब मैं दास तिहारा (उक्त पता क० ४३८) (ज) दास जान दै हाथ उबारो (उक्त पता क० ४३८) (झ) दास जान मुहि लेहु उबारे (उक्त पता चिरित्र ४०४ क० ३७६) (ञ) ऐसो सु साहिब कहां पर बाह रही इहदास तिहारे (उक्त पता बचित्र नाटिक अध्याये १ क० (२३) (ट) इत्यादि और अनेक परमाण हैं विस्तार भय से नहीं लिखे ॥ नोट—आजकलके अकाली लोग कहते हैं कि अमृत संस्कार से गुरू १० जी का नाम सिंह हुआ सो मिथ्या है क्योंकि गुरू चेलों का चेला नहीं होसक्ता देखो विचार भूमिका में लिखचुका हूं ॥

(४) गुरू दसमजी हिन्दू धर्म रक्षा के लिये संसार में आए ॥ यथा ॥ हम इहकाज जगतमोआए ॥ धर्महेत गुरदेव पठाए ॥ जहां तहां तुम धर्म बिथारो ॥ दुष्ट दोखीपन पकर पछारो ॥ येह काज धरा हम जन्मं ॥ समझ लेहु साधू सभ मनमं ॥ धर्म चलावन संत उबारन ॥ दुष्टसभन को मूल उपारन (दसमग्रंथसाहिब श्री मुख बाक पातसाही १० बचित्र नाटिक अध्याये ६ कविता अंक ४२ और ४३) नोट-गुरू १० जी का धर्म हिन्दू है जिसके लिए "गुरदेवपठाए "उक्त पाठ है सो गुर देव (गुरू तेग बहादरजी हिन्दू धर्म्म रक्षा लिये दिल्ली गएथे ॥ यथा ॥ तिलक[1] जञू[2] राखा प्रभुताका ॥ कीनो बडो कलूमहिसा का ॥ साधनहेत इति जिनकरी ॥ सीस दीया परसी न उचरी ॥ धर्म हेतसाका जिन किया ॥ सीसदीया पर सिरर न दीया (दसमग्रन्थसाहिब बचित्रनाटक अ० ५ क० १३ और १४)

[3](५) गुरू दसमजी हिन्दू छत्री हैं ॥ (क) प्रथम छत्री के धांम दियो विधजन्म हमारो ॥ बहुर जगतके बीच कियो कुल अधक उजियारो ॥ चौहरं सभन मैं बैठ आप को पूज कहाऊं (उक्त पता दसमग्रन्थ० श्री मुखबाक पात साही १० चिरित्र[4] २१ कविता अंक ३२) (ख) छत्री को पूतहो बामन को नहीं (उक्तपता दसम ग्रन्थ० श्रीमुख बाक पातसाही १० कृष्ण अवतार के अंतमें प्रार्थना कविता अंक २४८८ नोट--उक्त परमाणों से प्रगट है गुरू १० जी अपने आपको जन्मसे छत्री मानते हैं ॥

(६) गुरू दसमजी श्री दुर्गा जीको परम इष्ट मानते हैं ॥

१ यज्ञापवीत २ तिलका ३ ग्रह ४ ब्राह्मण

(क) सर्बकाल है पिता अपारा ॥ देबीकाल कामातह्मारा (दसमग्रंथ साहिब श्रीमुखबाक पातसाही १० वचित्र नाटक अध्याये १४ कविता अंक ५) (ख) पैहले चंडी चरित्र बनायो नख सिख ते कर्म भाख सुनायो छोर कथा तब प्रथम सुनाई अब चाहत फिर करूं बड़ाई (उक्त पता बचित्र नाटिक ग्रंथ अध्याये १४ कविता अंक ११) नोट— गुरू १० जीने श्री दुर्गा जीकी उस्तुति के तीन पुस्तक दसम ग्रंथ में लिख (चंडी चरित्र १ चंडी चरित्र उक्ता बिलास, २ श्री भगवती जीकी वार, ३) उस्तुति तीन पुस्तक और कविता अंक ५५० द्वारा की है ॥ और दसम ग्रन्थ साहिब की हरएक पुस्तक रचनाके प्रथम आनी इष्ट श्री दुर्गा जी का मंगलाचर्ण गुरू १० जी करते हैं जैसा के श्री कृष्ण अवतार के प्रथम[1] किया ॥ यथा ॥ अथ देवी जू की उस्तुति कथनं ॥ (ग) स्वैया ॥ होय कृपातुमरी हमपै तुसभै सगन गुनही धरिहों ॥ जीआधार बिचार तजै बर बुध महां अगनं गुन को हरिहों ॥ बिन चंड कृपा तुमरी कबहूं मुखते नही अछरहों करहों ॥ तुमरो करनाम किधो तुलहा[2] जिस बाक समुद्र बिखै तरहों ॥ ५ ॥ (घ) दोहरा ॥ रेमन भजतूं सारदा अन गन गुन हैं जाहिं ॥ रचों ग्रंथ यह भागवत जोवै कृपा कराहि ॥ ६ ॥ (ङ) कबित ॥ संकट हरन सभ सिद्ध की करन चंड तारन तरन सरन लोचन बिसाल हैं ॥ आदि जाके आहिब है ॥ अंत कोन पारावारू सरन उबारन करन प्रति पाल है ॥ अस्वरसंघारन अनिक दुखजारन सुपतित उधारन छुडाए जम जाल है देवी वरलायक सु बुधहूंकी दायक सुदेह वर-

१ श्री देवी जीकी स्तुति मंगला चर्ण रूप है २ नौका

पायक बनावै ग्रन्थहाल है ॥ ७ ॥ (च) स्वैया ॥ अद्रं-सुता हूंकी जो तनया महिखासुरकी मरता फुन जोऊ ॥ इन्द्रको राजकी दबधा करता बध सुंभ निसुंभहि दोऊ॥ जो जपकै इह सेवकरै बरको सुलहै मन इछत सोऊ ॥ लोक विखै उहकी समतुल गरीब निवाज न दूसरकोऊ८ इती श्री देवीजीकी उस्तुति समापतं ॥ (दसम ग्रंथसाहिब श्री मुखवाक पातसाही १० कृष्ण अवतार कविता अंक ४ से ८ तक)

(७) श्री गुरू दसमजी श्री दुर्गाजीकोही अकाल पुरुष[1] मानते हैं ॥ यथा ॥ (छ) मधकीटभ राक्षसे बलीअ ॥ समैं आपनी काल तेउ दलीअं ॥ भए सुंभ नै सुभ श्रोणत बीजं ॥ तेऊ काल कीने पुरे जे पुरेजं (दसमग्रन्थसाहिब श्रीमुखवाक पातसाही १० बचित्रनाटिक ग्रन्थ अध्याये१ कविता अंक ६४ श्री काल जीकी उस्तुति) (ज) सुंभ[1] निसुंभसे कोट निसाचर जांहि छिने एक बिखैं हनडारैं ॥ धूमर-लोचन चंड औ मुंडहसे माहखसे पल बीच निवारे ॥ चामरसे रण चिछर से रक तिछर से झटदै झझकारे ॥ ऐसो सुसाहिब पाइ कहां पर वाह रही इह दास तिहारे (उक्त पता कविता अंक ६२) (झ) मुंडहुसे मधकीटभसे मुरसे अघसे जिन कोट दले हैं ॥ ओट करी कबहूं न जिनै रणचोटपरी पग द्वै न टले हैं ॥ सिंधबिखै जे न डूबे निसाचर पावक बाण वहे न जले हैं ॥ ते असितोर बिलोक अलोक सुलाजको छडिकै भाज चले है (उक्त पता क० ६४) (ञ) रावणसे महरावणसे घटकानहु

---

१ मधु कैटभके मारने वाली श्री दुर्गा जी है जिसको गुरू १० जी अकाल पुरुष मानते हैं

से पल बीच पछारे ॥ बारद नाद अकंपनसे जुग जंगजुरे जिनस्यिउ जमहारे ॥ कुंभ अकुंभ से जीत सभै जग सातहूं सिंध हथियार पखारे ॥ जेजे हते अकटे बिकटे सुकटे करिकाल क्रिपानकेमारे (उक्त पता क० ९५) नोट-गुरु १० उक्त अकाल जीकी उस्तुति करते हैं ॥ (ट) मूक उच्चरै शास्त्रखट पिंग गिरन चड़जाइ ॥ अंध लखै बधरो सुने जौ काल कृपा कराइ॥ उक्त पता बचित्रनाटिक अध्याये २ कविता अंक ९ अकाल जीकी उस्तुति) नोट--यही स्तुति श्री दुर्गा जीके चरित्रमें गुरू १० जी श्री दुर्गा जीकी स्तुति करते हैं ॥ यथा—मूक उचरै शास्त्रखट पिंग गिरन चड़ि जाइ ॥ अंधलखै बधरो सुनै जौ तुम करो सहाइ (दसम ग्रन्थ० श्री मुखवाक पातसाही १०, ४०४ चरित्रोंमें प्रथम चंडी चरित्र कबिता अंक ४२) और श्री गुरु १० जीको अकाल पुरुष के मानने का उपदेश श्री दुर्गा जी द्वारा अकाल उस्तुति दसमगुरू ग्रन्थसाहिब श्री मुखबाक पातसाही १० इस प्रकार अकाल पुरुषका है जिससे नवीन सिंह[1] (अकाली) मुनकर नहीं हो सक्ते ॥ यथा ॥ (ठ) दुरजन दल दंडन असुर बिहंडण दुष्ट निकंदण आदि ब्रिते ॥ चछरासर मारण पतित उधारण नर्क निवारण गूड़गते ॥ अछे अखंडे तेज प्रचंडे खंड उदंडे अलख मते,, जैजै होसी महखा सुरि मरदन रंमक प्रदन छत्र छिते ॥ २११ ॥ (ड) आसुरी

---

१ यह अकाल उस्तुति श्री मुखवाक पातसाही १० में २० त्रिभंगी छंद श्री दुर्गा जीको अकाल पुरुष समझ स्तुतिकी है विस्तार भय के कारण टिपणी और अर्थ नहीं लिखता जिस भाईने अर्थ देखने हों "प्रयाइ "दसम पातशाही के जो वज़ीर हिन्द प्रेस अमृतसर प्रथम वार छपेके पृष्ठ ५२ से ५६ तक २० उक्त त्रिभंगी छंदों का अर्थ श्री दुर्गा जी अकाल पुरुष मानी लिखा है

बिहंडण दुष्ट निकंदण पुष्ट उदंडण रूपअते ॥ चंडासुर चंडण मुंड बिहंडण धूम्र बिधुंसण महखमथे ॥ दानव प्रहारण नर्क निवारण अधम उधारण उर्ध अधे ॥ जैजै होसी महखासुर मरदन रंमक प्रदन आदि ब्रिते ॥२१२॥ (ढ) डावरू डवंकै बबर बवंकै भुजा फरंकै तेजधरं ॥ लंकड़ी आ फाधे आयुध बाधै सैन बिमरदन काल असुरं॥ अष्टायुध चमकै भूखण दमकै अति सित झमकै फूंक फणं ॥ जैजै होसी महखासुर मरदन रंमक परदन दैत जिणं॥२१३॥(ण) चंडासुरचंडण मुन्डबिमुंडण खंड अखंडण खून खिने ॥ दामनी दमंकण, धुजा फरंकण फणीअर फुंकण जोध जिते॥ सरधार बिवरखण दुष्ट प्रकरखण पुष्ट प्रहरखण दुष्टमथे ॥ जैजै होसी महखासुर मरदन भूम अकास तल उर्ध अधे ॥ २१४ ॥ (त) दामनी प्रहासन सुछबि निवासन श्रिष्ट प्रकाशन गूड़गते ॥ रक्तासुर आचन जुध प्रमाचन नूिंदै नराचन धर्म ब्रिते ॥ ओणंत अचिंती अनल बिवंती जोगजयंजी खड़्ग धरे ॥ जैजै होसी महखासुर मरदन पाप बिनासन धर्म करे ॥२१५॥ (थ) अघ ओघ निवासन दुष्ट प्रजारन श्रिष्ट उबारन सुधमते ॥ फणीअर फुंकार्ण बाघ बकार्ण शस्त्र प्रहारण सादमते ॥ सैहथी सन.हन अष्ट प्रबाहन बोल निबाहन ते अतुलं ॥ जैजै होसी महखासुर मरदन भूमि अकास पताल जलं॥२१६॥ (द) चाचर चमकारन चिछुर हारन धूम्रधुकारन द्रपमथे ॥ दाड़वी प्रदंते जोग जयंते मनज नथंते गूड़कथे ॥ कर्म प्रणासन चंद प्रकासन सूरज प्रतेजन अष्टभुजे॥ जैजै होसी महखासुर मरदन भरम बिनासन धर्मधुजे ॥२१७॥ (ध) घूंघरु धमंकण शस्त्र धमंकण फणी अर फुंकारण धर्मधुजे ॥ अष्टाट महासण श्रिष्ट

निवासन दुष्ट प्रणासन चक्रगते ॥ केसरी प्रवाहे सुध सनाहे अगम अथाहे एक व्रिते जैजै होसी महखासुर मरदन आदकुमार अगाध व्रिते ॥ २१८ ॥ (न) सुर नर मुन बंदन दुष्ट निकंदन भ्रिष्ट बिनाशन व्रितमथे ॥ कावरू कुमारे अधम उधारे नर्क निवारे आदकथे ॥ किंकणी प्रसोहण सुरनर मोहण सिंहा रोहण बितल तखे ॥ जैजै होसी सब ठौर निवासन वाइ पताल अकास अनले ॥ २१९ ॥ (प) संकटी निवारन अधम उधारन तेज प्रकखण तुंद तबे ॥ दुख दोख दहंती ज्वाल जयन्ती आदि अनादि अगाध अछे ॥ सुधता समरपण तर्क बितर्कण तपत प्रतापण जपत जिवे ॥ जै जै होसी सस्त्र शस्त्र प्रकरखण आदि अनील अगाध अभे ॥ २२० ॥ (फ) चंचला चखंगी अलक भुजङ्गी तुन्द तुरङ्गण तिक्षसरे ॥ करकसा कुठारे नर्क निवारे अधम उधारे तूरभुजे ॥ दामनी दमंके केहर लंके आदि अंतके क्रूरकथे ॥ जै जै होसी रक्तासुर खंडण सुंभ चक्रदण सुंभमथे ॥ २२१ ॥ (ब) बारज बिलोचन सोच बिमोचन कौच कसे ॥ दामनी प्रहासे सुकसरनासे सुब्रिन सुबासे दुष्टग्रासे ॥ चंचला अअंगी बेद प्रसंगी तेज तुरंगी खंड सरं ॥ जैजै होसी महखासुर मरदन आद अनाद अगाध उरधं ॥ २२२ ॥ (भ) घंटका विराजै रुण झुण बाजै भ्रमभै भाजै सुनत सुरं ॥ कोकल सुन लाजै किल बिख भाजै सुख उपराजै मध उरं ॥ दुरजन दल दझै मनतन रिझै सभै न भिजै रोह रणं जैजै होसी महखासुर मरदन चंड चक्रदन आद-गुरं ॥ २२३ ॥ (म) चाचरी प्रजोधन दुष्ट बिरोधन रोस अरोधन क्रूरब्रिते ॥ धुंमराक्ष बिधुंसन प्रलै प्रजं-

सन जग बिधुंसन सुधमते ॥ जालता जयंती सत्र मथंती दुष्ट प्रदाहन गाड़मते ॥ जैजै होसी महखासुर मरदन आदि जुगादि अगाध गते ॥ २२४ ॥ (य) खत्री आण खतंगी अभै अभंगी आदि अनंगी अगाध गते ॥ बिड़लाछ बिहंडण चछरा ढंडण तेज प्रचंडण आदि ब्रते ॥ सुरनर प्रतिपारन पतित उधारण दुष्ट निवारण दोखहरे ॥ जैजै होसी महखासुर मरदन बिसु बिधुंसन श्रिष्ट करे ॥ २२५ ॥ (र) दामनी प्रकासे उनतन नासे जोत प्रकासे अतुल बले ॥ दानवी प्रक्र-खण सर बर वरखण दुष्ट प्रधरखण ब्रितल तले ॥ अष्टायुध बाहण बोल निवाहण सन्त पनाहण गूड़गते ॥ जैजै होसी महखासुर मरदन आदि अनादि अगाधि ब्रिते ॥ २२६ ॥ (ल) दुखदोख प्रभछण सेवक रछण संत प्रतछण सुधसरे ॥ सारंग सनाहे दुष्ट प्रदाहे अर-दल गाहे दोखहरे ॥ गंजन गुमाने अतुल प्रवाने संत जमाने आदि अन्ते ॥ जैजै होसी महखासुर मरदन साध प्रदछन दुष्टहते ॥ २२७ ॥ (व) कारण करीली गर्ब गहीली जोत जतीली तुंदमते ॥ अष्टायुध चमकण शस्त्र झमकण दामन दमकण आदिव्रते ॥ ढुकढुकी दमंके ॥ बाघबबंकै भुजा फरंकै सुधगते ॥ जैजै होसी महखा सुरमरदन आदि जुगादि अनादि मते ॥ २२८ ॥ (स) चछरासुर मारन नर्क निवारण पतित उधारण एकभटे ॥ पापान बिहंडण दुष्ट प्रचंडण खंड अखंडण कालकटे ॥ चंद्रानन चारै नर्क निवारै पतित उधारै मुंड मथे ॥ जैजै होसी मह-खासुर मरदन धूम्र बिधुंसन आदिकथे ॥ २२९ ॥ (ष) रक्तासुर मरदन चंडचकरदन दानव अरदन बिड़ालबधे सरधार बिबरखण दुरजन दरखण अतुल अमरखण धर्म

धुजे॥धूम्राक्ष बिधुंसन श्रोणत चुंसन सुंभ निपात निसुंभ मथे ।जैजै होसी महखासुर मरदन आदि अनील अगाध कथे ॥ २३० ॥ (श्रीगुरू दसम ग्रंथ साहिब श्रीमुख वाक अकाल उस्तुति कविता अंक २११ से २३० तक त्रीभंगी छंद नोट—सं० १९५८ वि० कतक १ दसमग्रंथ साहिबकी सुधाई की रिपोट छपी जिसके साथ सुधाई की सूची भी वाटी यई सो उक्त सूची सुधाई पृष्ट ५ पंक्ती ७ से १७ तक उक्त छंद श्रीमुख वाक अकाल जीका गुरू १० जीको उपदेश मानते हुए शुद्धी दिखलाई है॥ जिसपर कोई पतित खालसा उक्त छंदोंको वनावटी नहीं कह सकता ॥ जो श्रीदुर्गाजीके मानने (पूजन) का स्पष्ट उपदेश है और गुरू १० जी अकाल पुरुष श्रीदुर्गाजी को मानते हैं और उनही के नमित हवन पूजनादि करते हैं ॥ यथा (श) तां देवी बोली चौथे जुगका पैहला पैहरा होवेगा ॥ जबरुद्र संकर नामा होय उतरेगा ॥ विष्णं भाणजा होइ उतरेगा ॥ तां मैंभी तुमारी बुलाई तुमारे बीच शब्द प्रकाश कर आवागी एक मेरा वस्तत्र प्रविरत आंख अंजन कुटंबका मोह नही करना ॥ ऐसे कहिके परेमकर[3] लगी चाटने ॥ खुसी होई एक चुंड़ी[1] एक परादा[2] एककरद दाई (देखो सौसाखीकी साखी १२ श्रीमुखवाक पातसाही १०) (ह) नैनहु पुत्री सेवहि गैसी डेरा फिर कर गिर पर चड़े॥ गुहा उभै छोटी सी वड़े ॥ पुख गुरू नंदा तिथअंत॥ होई अराधन धरा नमितं॥पांच पैहरका होंम[4] अरंभा ॥ सभको सौपदिया गुरधंदा ॥ बारां पहिर अरंभाएक ॥ तांमैं देवी मूर्ति एक ॥ लगै रैन[5] दिन अंत्र भूला ॥ देवकाम सब अंगन भूला ॥ उणउण मुणमुण

१ कड़ा २ वाले बांधने का डोरा ३ जिसको कृपान कहते हैं ४ हवन ५ बीजमंत्र

गुणगुण रुणरुण ॥ सोलां अंक जाप कीयो पुण झुण ॥ यामएक दिन घड़ीयां चार ॥ जगमग परबत झमके पहार ॥ किया दामन किया सूरज इंद ॥ दमकियो गगन मूरति भइसंगा ॥ मीचनैन उठ हूआ ठाडा ॥ निरखी एक बार मुखराडा तुम ही तुम ही बचन प्रकाशा ॥ (देखो सौसाखी की साखी १७ श्रीमुखवाक पातशाही १०) (च) तां सिखां भाई मनीसिंघजीपास प्रश्न कीता ॥ जो साहिब दसवीपातसाही खालसा वरताया ॥ ते देवी प्रगट होई है ॥ देवी दी उपासना कीती है सो साखी कृपा करके सुणांईये॥इक समे साहिब दसवी पातसाही ने कांसी ते पंडित बुलाया ॥ सानूदेवी की उपासना के मंत्रकहो ॥ जिस करकै देवी प्रतख होवै ॥ तां ओसनै केहा जी गरीब निवाज जेतां बरस रात्ती तुसी नेमकरो तेलख[1] देवीदां पाठ कराओ ता देवी प्रतख[2] होवेंगी ॥ तां साहिब नै नैणा देवीके टिलेडते बैठके होंमदा[3] अरंभ कीता चेत्रदे नौरात्रियांदी अष्टमीके दिन ॥ जब बरस का दिन पूरा होया तां मंत्र पड़ दियां ही देवी प्रगट होई ॥ तां करद साहिब दे हथ दित्तीं ॥ तां साहिब करद लेकै ध्यान धरकै नेत्रमूंद लीये ॥ देवी अलोप होई (देखो सिखों में पर्म परमाणीक श्री भाई मनी सिंह जी कृत भगत रत्नावली साखी १३१) (अ) आगरा सैहर गुरु १० जी बहादुरशाहसे सं० १७३४ बैसाखमें मिले तिसकी बेनती मान गुरुजी छै महीने रहे जब बहादुरशाह अपनी हकूमत बैठाने हेत दखण ओर चला ॥ तब गुरुजी दी[4] अरज करी आप भी चलें गुरुजीने केहा हमनुराते

१ लक्ष दुर्गा पाठ २ प्रत्यक्ष ३ हवन ४ श्री दुर्गा पूजन

पूजके दसहरे से पीछे चलेंगे (देखो श्री गुरू तीर्थ संगूह पंडित तारासिंह ज्ञानी पटेयाला निवासी कृत पृष्ट १६२ पंक्ती १ से ७) (ञ) नवराते पूज नवमी को गुरूजी अकेले बैठे देख पेसकवज[1] पैडेखां[2] के पोते गुलेखां नै मारी ॥ पेटमें घाव खुलगिया । (उक्त पुस्तक तीर्थ संगूह पृष्ट १६६ पंक्ती ४ और ६ और १०) (३०) इत्यादि अनेक और परमाण हैं विस्तार भयसे नहीं लिखे ॥ नोट— विशेष उक्त प्रकर्ण देखना हो तो मेरी रचत श्रीगुरू घरमें दुर्गा पूजन देखो ॥ और दसमग्रंथ साहिब में २१ चरित्र गुरू१०जी का है उसकी तुक १० और ३४ देखो गुरू १० जी श्रीदुर्गाजी के पूर्ण भक्त है जो चरित्र परमाण संख्या १२ में संपूर्ण है ॥

(७) श्री गुरू दसमजी मृतक श्राद्ध हिन्दू रीतिसे मानते हुए श्राद्ध करनेकी आज्ञा देते हैं ॥ (क) नमों प्रेत अप्रेत देवे सुधमैं (श्री गुरू दसम ग्रन्थ साहिब श्री मुखवाक पातसाही १० जापसाहिब कबिता अंक ५५)नोट–उक्त परमाणसे प्रगट है मृतक और पितरोंको नमसकारकरे जो मृतक श्राद्धमें मुख्य कर्म है॥ (ख) किये देव अदेव श्राद्ध पित्तं (दसम ग्रन्थ साहिब श्री मुख पातसाही १० अकाल स्तुति कबिता अंक १४८) नोट– श्री गुरू १० जी को बाहि गुरू अकाल पुरुष की आज्ञा है कि पितरों के श्राद्ध जरूर करें ॥ (ग) पितरन पख पहुचा आई ॥ पितरन की थित तिनहूं सुनपाई ॥ त्रिया सो कहा श्राद्ध नहीं कीजै ॥ तिन हम कही अबी करलीजै ॥ सकल श्राद्धको साज बनायो ॥ भोजन समिय दीजनको आयो ॥ पति हम कही काज त्रीया कीजै ॥ इनको दछना कछु नहीं दीजै ॥ त्रीया भाखा मैं ढील न

१ छोटी तलवार २ मुसलमान पठान था

करहूं टका टका बिराजतदेहूं (दसम ग्रंथ साहिब श्री मुखवाक पातसाही १० चरित्र ४०) नोट—उक्त श्री मुखसे श्राद्ध विधि सहित करनेकी आज्ञा प्रगट है और श्राद्ध का अंग सूतक पातक की आज्ञा देते हैं ॥ यथा ॥ बोल वाक गुरू जी पातसाही १०॥[1]ब्राह्मण दस दिन सूतकी साता दुगणीमान ॥ खत्री बारा ॥ बैसइक पांच ॥ सूद्र तीस पैहचान ॥ गऊ दस, बारा महीका दुधदेव नहीं भोग ॥ श्राद्ध कराए जग नही खावत भवका रोग ॥ सूतक जीते पातकी ॥ पातक कटै न सूत अगन कटै दोनो दुखी बिप्रअग्रमैं कूत ॥ सूतक पातक गए बिन दान देइ दिजलेइ ॥ बानरअही दाता नर्क ॥ मानुख देहन लेइ (देखो सौसाखीकी साखी ७२ श्रीमुखवाक पात साही १०)

(८) श्री गुरू १० जी ब्राह्मणोंको दान देते थे और सिखों का दान ब्राह्मणोंके देनेकी आज्ञा करते हैं ॥ (क) द्विजन दीजीअहु दान ॥ द्रुजनको द्रिष्ट दिखईअहु (श्री गुरू दसमग्रन्थसाहिब श्री मुखवाक पातसाही १० चरित्र २१ तुक ५८) (ख) मुर पित पूर्व कियस पयाना ॥ भांत भांतके तीर्थ नाना जब ही जात त्रिवेणी भए पुंन दान दिन करत बतए (श्री गुरू दसम ग्रंथ साहिब श्री मुखवाक पात साही १० बचित्र नाटक अध्याये ७ कबिता अंक १ और२) (ग) पोहकर तीर्थ सतगुरगए ॥ बाबा घाट सिध जहां न्हए ॥ तहां दान चेतन द्विज दिया (देखो सौसाखी की साखी ५७) श्री मुखवाक पातसाही १०) (घ) आया

१ शुध्येद्विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः । वैश्यः पंचदशाहेन शूद्रो मासेन शुद्धयति॥ (मनु अ० ५ श्लो० ८३) अर्थ ॥ ब्राह्मण दश दिनमें क्षत्री १२ दिनमें वैश्य १५ दिनमें शूद्र एकमासमें शुद्ध होते हैं ॥ इसी प्रकार गुरू १० जी मानते

भोरभा दिन दिज[1]केसव ॥ हाथ जोर बोले सभ से सव ॥
देव किरपा[2] तुम प्रसाद॥दीओ मंत्र कुल गुर मुहिआद ॥
सवालाख देऊंगा धन ॥ एह कह मेलेयो अंगनधन
(देखो सौसाखीकी साखी १७ श्री मुखवाक पातसाही १०)
(ङ) ता ब्राह्मण नू खुसी करकै भाई नंदलाल जी मना-
इकै हजूर लै आए ॥ सभभानू भोजन खवायकै रुप्पा
रुप्या दखणा देकै विदा कीते ॥ तेकासीदे ब्राह्मणनू लख
रुपया भेट देकै कासी पहुंचाया (देखो सिखोंकी प्रमाणीक
पुस्तक श्री भाई मनीसिंहजीकृत भगतरत्नावली साखी१३१)
नोट-उक्त परमाणों से प्रगट है गुरू १० जी अपार दाता
ब्राह्मणोंके दानदेनेवालेथे दान तीर्थों पर होता है इससे तीर्थों
के महात्म माननेवाले स्पष्ट प्रगट हैं ॥ विशेष देखना हो तो इसी
पुस्तक में उपदेश संख्या ३ और मेरी रचित नवीन सिंहशिक्षा
और जहीरुद तहे फ़रस्ते देखो ॥

(६) भक्ति श्री गुरू १० जी सनातन हिन्दू रीति
अनुसार श्रीमद्भागवत की भक्ति से कल्याण मानते हैं और
सिखोंको उपदेश करगए हैं यथा ॥ (क) आद अनाद
अगाध कथा ध्रूसे प्रहलाद अजामल तारे ॥ नाम उचार
तरी गनका सोई नाम अधार विचार हमारे । (श्री गुरु
दसमग्रंथ साहिब श्रीमुखवाक पातसाही १० स्वैये जागती जोत
में स्वैया १०) (ख) जब जब होत अरीष्ट अपारा ॥
तबतब देह धरत अवतारा ॥ इनमें श्रेष्ठ सुदस अवतारा
जिनमें रमिया राम हमारा (दसमग्रंथ साहिब श्रीमुखवाक
पातसाही १० चौबी अवतार कबिता अंक २ से ४) (ग)
कहूं गीनके गवईया कहूं वेनके बजईया ॥ कहूं नृतके

[1] ब्राह्मण [2] कृपा

नचईया ॥ कहूं धेनके चरईया ॥ कहूं लाखन लवईया॥ कहूं सुंद्र कुमार हो (दसमग्रंथ साहिब श्रीमुखवाक पातसाही १० अकाल उस्तुति कबिता अंक १८) (घ) स्वैया धेनके चरया कहौं बेनके बजया कहौं गोकल बसईया कहौं ब्रिजके रहईया हैं ॥ माखन भखईया कहौं गोरस लुटईया कहौं चीरन चुरईया कहौं गुआरन रहया हैं ॥ अनंद दिवया कहौं सारंग धरया कहौं पूतना मरया कहों तालके कतईया हैं ॥ नागके नथईया कहों ब्याधके वघईया कहौं भीखमतनईया के कनईयाजू रहईया है दसमग्रंथ साहिब श्रीमुख बाक पातसाही १० असफोटिक कबित २६) (ङ) कबित ॥ स्वेतता बिभूत अरु मेखली निमेख संदी अञ्जन दी सेलीदा सुभाउ शुभ भाखणा ॥ भगवा सुभेस साडे नैणादी ललाई सईयो धारड़ेदा ध्यान एहो कंद मूल चाखणा ॥ रोदनदा मजन पुत्री पत्री गीत गीता देखणेदी भिछा दुख धूआं आगे राखणा ॥ वधोएना गोपीयांदिआं[1] अखीयांदा जोग सारा नंदके कुमारनूं जरूर जाए आखणा ॥ (उक्त पता कबित ४२)

(१०) श्रीगुरु १० जी वेद शास्त्रादिको धर्मग्रंथ मानते हैं और सिखों को मानने का हुकम देते हैं ॥ यथा ॥ (क) पड़े सांम वेदं ॥ जुजर बेदकथं ॥ रिग बेद पठियं करे भावहथं ॥ अथर्ब बेद पठियं सुणे पाप नठियं ॥ (दसम ग्रंथ साहिब श्रीमुख वाक पातसाही १० बचित्र नाटिक ग्रंथ अध्याये ७ कबिता अंक ३) (ख) गुरकी आज्ञा सही वेद धर्मकी रीत (सौ साखी की साखी की साखी ७ श्रीमुख

[1] कृष्ण गोपीयों का सम्बंध

वाक पातसाही १०) (ग) वेदकी रीत को त्याग करे नहीं (उक्त पता सौसाखी ८) (घ) बेद शास्त्र गुर वाक को धारे (उक्त पता सौसाखीकी साखी ६१)

(११) श्री गुरू १० जी भारतवर्षमें अंग्रेजोंके राज लिये सनातन धर्मीयोंकी सदृश प्रार्थना करते हैं॥ यथा बिदेह साकी आस बज़ रंगे फरंग कि वकते बकार अस्त रु.ज़ रोज़ जंग ॥ (श्री गुरू दसम ग्रंथ साहिब जफरनामा हकायत ११ तुक १७६) अर्थ ॥ हे सतगुरो फरंगीआ (अंग्रेज़दा) प्रेम दिखावो इससमें लोडहै फरंगी आदा राज होजावे मलेछ औरंगे दा राज दूर होजावे (देखो सटीक जफरनामा श्रीमुखवाक पातसाही १० कृत मुनशी मंगलसिंह जी हेड परसीअन टीचर खालसा कालेज श्री अमृतसर जी जो गुरमत प्रेस अमृतसर कतक सं० ४४० नानक साही में छपे का पृष्ट २०१) (नोट) आजकल के नवीनसिंह अकालीओं पर शोक है जो बरतानियां गवरमिंट से बरूद्ध हो रहे हैं ॥

(१२) श्रीगुरू १० जी सनातन हिन्दू धर्मी हैं जो उन का खास चरित्र ७१ दसम ग्रन्थ साहिब से प्रगट है ॥ यथा ॥ तीर[1] सतुद्रवके हुतो पुर अनन्द इक गाऊ ॥ नेत्र तुंग के ढिगबस्त[2] कहलूरके ठाऊ ॥ ३ ॥ तहां सिखओसाखा[3] बहुत आवत मोद बढ़ाइ ॥ मन बांछत सुख मांग बर जात ग्रहन सुख पाइ ॥ ४ ॥ एक त्रीया[4] धनवन्तकी तौऊ नगर मैं आंन ॥ हेर राय पिंडत भई बिधी ब्रिहों के बान ॥ ५ ॥ मगन दासतांको हुतो सो तिन लियो बुलाइ ॥ कछुक दर्ब ताको दियो ऐसो कहियो बनाइ ६ नगर राय तुमरो बसत ताहि मिलावहु मोहि ॥ ताहि

१ पास २ बिलासपुर ३ गुरू १० जीके शिष्य ४ गुरू १० जो

मिलै दैहों तुझें अमित दर्वलैं मोहि ॥ ७ ॥ मगन लोभ धनके लगे आनरावके पास ॥ पर पायन कर जोर कर यह बिधकी अरदास ॥ ८ ॥ सिख्यो चाहित जो मंत्र तुम ॥ सो आयो मुरहाथ कहै तमैं सो कीजीये जो कुछ[1] तुमारे साथ ॥ ९ ॥ भुजंग छंद ॥ चल्यो धार अतीत[2] को भेस राई मना पन बिखै श्री भगवती मनाई ॥ चल्यो सोत ताके फिरियो नहीं फेरे धस्यो जायकै वा त्रिया कै सुडेरे ॥ १० ॥ चौ० लख त्रीय। तहि सुबेख बनायो फूल पान अर कैफ मगायो आगे टरता को नित लीना ॥ चितको सोक दूर कर दीना ॥ ११ ॥ दो० वस्त्र पैंहर बहुमोलके अथित भेसको डार ॥ तवन सेज सोभतकरी उतमभेस सुधार ॥ १२ ॥ तब तासों त्रिया यों कही भोग करहु मुहिसाथ ॥ पसु पनार दुख दै घनो मैं त्रेचित बहाल ॥ १३ ॥ राय चित चिंता करी बैठ तांही ठौर ॥ मंत्र लेन आयौ हुतो भई औरकी और ॥ १४ ॥ अड़िल ॥ भए पूजतो कहां गुमान ना कीजीयैं ॥ धनी भए तो दुख न निरधन दीजीये ॥ भूप भए तो कहां ऐंठ नहीं ठानीये ॥ होधन जोबन दिनचार पौहुना जानीये ॥ १५ ॥ छंद ॥ धर्म करे शुभ जन्म धर्मते रूपह पईये ॥ धर्मकरे धन धांम धर्म ते राज सुहईये ॥ कहियो तुहारो मान धर्म कैसे कर छोरौ ॥ महां नर्क के बीच देह अपनी को बोरौ ॥ १६ ॥ किहो तुमारो मान भोग तोसो नहीं कर हों ॥ कुल कलंक के हेत अधक मन भीतर डरहौं ॥ छोर ब्याहुतानार केल तोसो न कमाऊं ॥ धर्म[3] राजकी सभा ठौर कैसे कर

१ फकीर (साधू) २ गुरु १० जी श्री दुर्गाजीके पूर्ण प्रेमी भक्त थे ३ पौराणिक सिद्धान्त

पाऊं ॥ १७ ॥ दो० कामात्र है जो भीया आवत नरक पास ॥ महां नर्क सो डारीये देतहजान निरास ॥१८॥ पाए परतमोरेसदा पूजकैहतहैं मोहि तासो रीझ रमियो चहित लाज न आवत तोहि ॥ १९ ॥ कृष्ण पूज जगके भए कीनी रास बनाइ ॥ भोगराधका सो करे परे नर्क नही जाइ ॥ २० ॥ पंगततलै ब्रह्मकर[1] कीनी नरकी देह ॥ किया आपही तिन बिखैं स्त्री पुरुष सनेह ॥ २१ ॥ चौ० ताते आन रमों मुहि संगा व्यापत मुरतन अधक अनंगा ॥ आज मिले तुमरे बिन मरों ॥ बिरहांनल के भीतर जरहों ॥ २२ ॥ दो० अंगते भयो अनंग तऊ देत मोहि दुख आई ॥ महां रूद्र जू कोप कर ता नहि दयो जराई ॥ २३ ॥ छंद ।: धरहु धीरज मन बालम दिन तुमरो कस करिहौं ॥ महारुद्र को ध्यान धरो मन बीच सुडर हौं ॥ हमनह तुमरेसंग भोग रुचिमान करैंगे ॥ त्याग धर्मकी नार तोहि कबहूं न धरैंगे ॥ २४ ॥ कहेयो तिहारो मान भोग तोसों क्यों करीयैं ॥ घोर नर्क के बीच जाइ परवेते डरीयैं ॥ त्ब आलिंगन कर धर्म अरी मोहि न गहहैं ॥ हो अति अपजसकी कथा जगत मोको नित कहिहै ॥ २५ ॥ चलैं निंदकी कथा बक्त्र कस तन दिखहों ॥ धर्मराज की सभा ज्वाब कैसे कर दैहों॥छाड यारा ना बाल ख्याल मोरे नही परीये॥ कही सो हमसो कही बहुर कहियो न करीयो ॥ २६ ॥ रूपकुअर[2] यों कही भोग मोसो पिया करीये पर्ण नर्कके बीच अथिक चितमहि न डरीयै ॥ निंद तिहारी लोग कहां करकै मुखकरहैं ॥ त्रास तिहारो सो

१ श्री कृष्ण जो पूर्ण ब्रह्म है २ स्त्रीका नाम है

अधक चितभीतर डरहौं ॥ २७ ॥ तौकरहैं कोई निंद कछु जब भेद लहैगे ॥ जौ लख है कोऊ बात त्रासते मौन रहेगे ॥ आज हमारे साथ मित्र रुचि सो रतिक-रीयै ॥ होनातर छाडो टांग तरे अब होइ नकरीअँ ।२८। टांगतरे सोजाई केलके जाहन आवै ॥ गैठन फूस करहैं रैन सगरी न बजावै ॥ विधी धर्मके मैन भोग तुहि-साथ करतहौं ॥ जग अपजसके हेत अधक चित बिच डर हौं ॥ २९ ॥ कोट जतन तुम करो भजे बिन ते। हेन छोरो ॥ मीत तिहारं हेत फांसी करषत लैंहौं ॥ हो धर्म राज की सभा ज्वाब ठाढी ह्वै दैह्नो ॥ ३० ॥ आज पिया तुमसंग सेज रुचमान सुहैहौं ॥ मन भावत को भोग रुच चित माहि कमैहौं ॥ आज सुरतसभरैन भोग सुंद्र तब करहौं ॥ शिव बैरी को द्रप सफल मिल तुमै परह-रहूं ॥३१॥ प्रथम छत्री के धांम दियो विधजन्म हमारो ॥ बहुर जगत के बीच कीयो कुल अधक उजेयारो ॥ बहुर समनमै आपको पूजकहाऊं ॥ रमों तुमारे साथ नीच-कुल जन्महि पाऊं ॥ ३२ ॥ कहां जन्म की बात जन्मसभ करे तिहारे ॥ रमो न ह४सो आज असघट भाग हमारे॥ बिरह तिहारे लाल गैठ पावक मो बरीअै ॥ हो पीय हला-हल आज मिले तुमरे बिन मरीअै ॥ ३३ ॥ दो० राय डरेयो जबदै मुझे श्री भगवती की आंन ॥ सत्ती आज्ञा सो रमों करहौं नर्क पयान ॥ ३४ ॥ त्रियोवाच ॥ चित के शोक निवर्तीकर रमों हमारे संग ॥ मिलै तिहारै बिन अधक व्यापत मोहि अनंग ॥ ३५ ॥ नर्क परनते मैं डरू

१ जन्म से वर्ण व्यवस्थामानते हैं २ गुरु १० जी श्री दुर्गा जीके अनन्य भक्त हैं ३ पौराणिकव्यान

करु न तुमसे संग ॥ तो तन मैं तनकै सहु व्यापत अधक अनंग ॥ ३६ ॥ छंद ॥ तरन करियो बिधतोहि तरनही देह हमारो ॥ लखै तुमै तन आज मदन बस भियो हमारे ॥ मनको भर्म निवार भोग मोरे संगकरीयै ॥ नर्क[1] परनते नैक आपन चित बीच न डरीऐ ॥३७॥ दो० पूज-जानकर जो तरन मुरकै करत पयान ॥ तवन तरन गुरु तवन की लागत सुता समान ॥ ३८ ॥छंद॥ कहां तरुन सों प्रीत नेहुनही ओर निहारी ॥ एक पुरुष को छाड और सुंद्र नरकरहैं ॥ अधक तरन रुच मान तरुन जासों हित करहीं ॥ हो तुरत सूत्रको धांम नमन आगे कर धरही॥३९ कहां करों कैसे बचो हिरदै न उपजात सात॥तोहे मारकैसे जीओ बचन नेहुके[2] नात४० चौ० राय चित इह भांत वि-चारो॥इहां सिख कोई नहीं हमारो ॥ यहभजे हमराधर्म जाई ।माजचले ओयादेतगहःई॥४१॥ताते याकी उस्तुति-करो ॥ चरत नर बाहर निकरो ॥ बिन रतिकरें तरन जीयैमरै ॥ कवन सिख मोहि आन उबारे ॥४२॥ छंद ॥ धंन तरन स्वरूप धंन पितमात तिहारो ॥ धंन तिहारो देस धंन प्रति पालन हारो ॥ धंन कुअर तु अब वकत्र अधिक जामै छबि छाजे ॥ हो जलज सूर अरु चंद्र दर्प कंदर्प लख लाजत ॥ ४३ ॥ सुभ सुहाग तनभरे चार चचल चख सोहिहि ॥ लख मृग जछ भुजंग असुर नर-मुनि मनमोहिहि ॥ शिव सनकादिक थकत रैहत लख-नत्र तिहारे ॥ हो अति अचरज की बात चुभत नहि हिरदै हमारे ॥४४॥ स्वैया ॥ पीठरी अंक मयंक ललाकी काहूसो भेदन भाखत जी को ॥ केल कमात विहात सदा

१ गुरू १० जीहै २ गुरू १० जी हैं

निसगौन कलोल लागत फीको ॥ जागत लाज बड़ी तनमैं ॥ डरलागत है सजनी समहीको ॥ ताते विचारत हों चितमैं इकजागनते सखी सोवन नीको ॥ ४५॥ दो० बहुर त्रीया रायसों यों बच कह्यिो सुनाई ॥ आजभोग तोसों करु कै मरहों बिखखाई ॥ ४६ ॥ बिखस आवर-गैन तवविधनाधरे बनाइ ॥ लाज कषच मोको दियो चुभ-त न ताते आय ॥ ४७॥ बने ठने आवत घने हेरत करत ग्यान ॥ भोग करनको कछुनहीं डहकू धेरसमान ॥४८॥ धंन वेर हमते जगत निरख पथरतेलेत ॥ वर बस खुआवत फल पक्कर जांन बहुर घरदेत ॥ ४६ ॥ अट-पटाइ बातैं करत मिल्यो चाहत पियसंग ॥ भौन बाल-बाला बधी[१] विरह विकल भयोअंग ॥ ५० ॥ छंद ॥ सुध जबते हमधरी बचन गुर देयो हमारे पूत ये है प्रण तोहि प्रान जब लग घटथारे ॥ निजनारी के साथ नेहु-तुम नित बड़े हो ॥ परनारीकी सेज भूल सुपनेहूं न जैहों ॥ ५१॥ परनारीके भजे सहस बासव भग पाए ॥ परनारीके भजे चांद कलंक लगाए॥परनारीके हेत कटक कवरन को घायो ॥ ५२ ॥ परनारी सिऊंनेहु छुरी पैनी-कर जानहु ॥ परनारी केभजे कालव्याप्यो तनमानहु ॥ अधकहरीकी जान भोग परत्रीया जुकरही ॥ हो अंत सुआनकी मृत हाथलेडी के मरही ५३ बाल हमारे पास देसदेसन[२] त्रिया आवह ॥ मनबाछत वरमांग जांन गुरसीस झुकावहि ॥ सिखपुत्र त्रिया सुता जान अपने चित धरीअै ॥ हो कबहूं सुंद्र तुहि साथ गवन कैसे कर करीगै ॥ ५४ ॥ चौ० बचन सुनत क घत

[१] इस वचन को अनेक सिख गुरूजीका वचन मानते हैं [२] गुरू १० जी स्पष्ट हैं

त्रियाभई ॥ जर वर आठ टूक ह्वगई ॥ अब ही चोर चोर कर उठहूं ॥ तुहिको पकर मारही सुटहों ॥ ५५ ॥ हस खेलो सुखसों रमों कहां करतहों रोख ॥ नैन रहे निहुरायकै हेरत लगत न दोख ॥५६॥ याते हमारे रतन हीं सुनसखी हमरे बैन ॥ लखे लगन लग जाइ जिन बड़े बिरहीआ नैन ॥५७॥ छपै छंद ॥ ब्रिजन दीजीअहु-दान द्रजनको द्रिष्ट दखई अहु ॥ सुखी राखी अहु साथ सत्र सिर खड़ग बजाईअहु ॥ लोक लाजको छाड़ कछु कारज नहि करहुं ॥ परनारीकी सेज पांम सुपनेहु न धरहुं ॥ गुरू जबते मुहि कहियो॥यहै प्रण लियो सुधारे॥ हो परधन पाहन तुल त्रिया परमात हमारे ॥५८॥ दो॰ सुनत रावको बचन श्रवन त्रिया मन अधक रिसाई ॥ चोर चोरकहि उठी सिख नदीयो जगाई ॥ ५९ ॥ सुन-चोरको वच श्रवन अधक डरेयो नर नाहि ॥ पनी पामरी तजभजीयो सुध न रही मनमाहि ॥ ६० ॥ (दसमग्रन्थ-साहिब श्रीमुखबाक पातसाही १० चरित्र २१गुरू १० जीका)

नोट-यह उक्तचरित्र गुरू१०जीका अनेक नवीन सिंह (अकाली) लोग अपने लेखमें मानते है जिससे प्रगट है गुरूजी पौराणिक हिन्दू है और जैसे श्री रामचन्द्र जीने सुरूपनखाको शिक्षा दी वैसेही गुरू १० जीने अनूपकौर को दी और श्री दुर्गा जीको पर्म इष्ट मानना श्री कृष्णजीको पूर्ण ब्रह्म जानना धर्म राजके इन्साफ नरकसे भय जन्मसे छत्री ब्राह्मणोंको दान से कल्याण इत्यादि उक्त चरित्र २१ से सिद्ध होते हैं ॥ प्रश्न श्रीगुरू दस-मजीतो हिन्दू धर्म्म से सर्वथा विरुद्ध हैं जो हिन्दू धर्म्मके मुख्य श्रीगणेशजी और श्रीकृष्णजी विष्णुजी आदिक देवी देवतों का खंडन करते हैं ॥ यथा ॥ मै न गनेश प्रथम मनाऊं ॥

किसन विष्ण कबहुं[1] न ध्याऊं॥ कांनसुने पहचानन तिन सों ॥ लिवलागी मोरी पग इनसों ॥ उत्तर–उक्त परमाण दसमग्रन्थ श्री कृष्ण लीला रामपंचाधीयाई स्तुती कठन होनेके कारण श्री गुरु १० जी अपनी इष्ट श्री भगवतीकी स्तुति मंगलाचर्ण रूप करते हैं हिन्दू धर्म्म के देवी देवताओंकी निंदा समझनी मूर्खता और अज्ञान है ॥ जो सारा प्रकर्ण दसमग्रंथ साहिब से ऐसे है ॥ यथा॥ (अथ देवीजीकी उस्ततलकथनं) भुजंग प्रयात छंद॥ तुही अस्तत्रणी ससत्रणी[2] आपरूपा॥ तुही अंबका जंभहंनी अनूपा ॥ तुही अंबका सीतला तोतला हैं ॥ प्रिथवी भूम अकास तैही कीया है ॥४२०॥ तुही मुंड मरदी कपरदी भवानी ॥ तुही कालका ज्वालपा राजधानी ॥ महांजोग माया तुही ईश्वरी है ॥ तुही तेज अकास थंभोमही है ॥ ४२१ ॥ तुही रिष्टणी पुष्टणी जोग माया ॥ तुही मोहसो चौदाहूं लोकछाया ॥ तुही सुंभ नै सुंभहंती भवानी॥तुही चौदा लोककी जोत जानी ४२२ तुही रिष्टणी पुष्टणी शस्त्रणी है ॥ तुही कष्टणी हरतणी अस्त्रणी है ॥ तुही जोग माया तुही वाक बानी ॥ तुही अंबका जंभहा राज धानी४२३महा जोगमाया महाराजधानी ॥ भवी भावनी भूत भवियं भवानी ॥ चरी अचरणी खेचणी भूपणी है ॥ महाबाहणी आपणी रूपणी है ॥ ४२४ ॥ महां भैरवी भूतनेसुर भवानी ॥ भवी भावनी भवियं काली क्रिपाणी ॥ जय अजय हिंगला पिंगला है ॥ सिवा सीतला मंगला तोतला है ॥ ४२५ ॥ तुही अच्छरा पच्छरा बुध ब्रिधया ॥ तुही भैरवी भूपणी

[1] नकार देहली दीपक है [2] श्री दुर्गाजी की उस्तुति है जिसको अकाली अकाल उस्तुति बताते हैं

सुध सिध सिधया ॥ महा बाहणी अस्तत्री शस्त्रधारी ॥ तुही तीर तर वार काती कटारी ॥ ४२६ ॥ तुहीगाजसी सांतकी तामसी है तुही बालका बृधणी औ जुवा हैं ॥ तुही दानवी देवणी जछणीहैं ॥ तुहे किंनृणी मछणी कछणीहै ॥ ४२७ ॥ तुही देवते सेसणी दान वेसा ॥ सरह त्रिछणी है तुही अस्तत्र भेसा ॥ तुही राज राजेश्वरी जोग माया ॥ महा मोह सो चौदा लोक छाया ॥४२८॥ तुही ब्रह्मी वैष्णवी श्री भवानी ॥ तुही बासवी ईश्वरी करत कियानी ॥ तुही अंबका दुष्टहा मुंड माली ॥ तुही कष्ट हन्ती कृपालै कृपाली ॥ ४२९ ॥ तुही ब्रह्मणी है हिराणाछ मारियो ॥ हरना कसं सिंघणी है पछारियो ॥ तुही बामनी है तीनलोस मापे ॥ तुही देव दानव |कीये जछथापे ॥ ४३० ॥ तुही रामहैकै दसोग्रीव खंडियो ॥ तुही हैके कंस केसी विहंडियो ॥ तुहीज्वालपाहै बिडालाछघायो ॥ तुही सुंभ नैसुंभ दानो खपायो ॥ ४३१ ॥ दास जानकर दासपर कीजै क्रिपा अपार ॥ आप हाथदै राखमुहि मनबच क्रम बेचार ॥ ४३२ ॥ चौपई ॥ मैंन गनेसह प्रिथम मनाऊं॥ किसन बिसन कबहूं न धीआऊं ॥ कानसुने पहिचान न तिनसों॥ लिवलागी मोरी पग इन सों ॥ ४३३ ॥ महांकाल रखवार हमारो ॥ महा लोह मैं किंकर थारो ॥ अपनाजान करो रखवार ॥ बाहिगहे की लाज बिचार ॥४३४॥ अपनाजान मुझे प्रितपरीऔ ॥ चुन चुन सत्र हमारै मरीयै ॥ देगतेग जगमैं दोऊ चलै ॥ राख आप मुहि औरन दलै ॥४३५॥ तुम मम करहू सदा प्रतपारा ॥ तुम साहिब मैं दास तिहारा ॥ आन आपना

[1] गुरु दसमजी श्री दुर्गाजी के दास हैं

मुझे निवाज ॥ आपकरो हमरे सभकाज ॥ ४३६ ॥ तुम हो[1] सभराजनकेराजा ॥ आपे आप गरीब निवाजा ॥ दास जान कर क्रिपा करहु मुहि ॥ हार परा मैं आन दुआरतोहि ॥ ४३७ ॥ अपना जान[1] करो प्रतिपारा ॥ तुम साहिब मैं किंकर थारा ॥ दास जानदै हाथ उबारो ॥ हमरे सब बैरीअब संघारो ॥४३८॥ प्रथम धरो भगवत को ध्याना ॥ बहुरकरो कबता बिधनाना ॥ कृष्ण जथा-मत चरित्र उचारो ॥ चूकहोय कब लेहु सुधारो ॥४३६॥ ॥ इती श्री देवी उसतत समापत ॥ (दसम गुरु ग्रन्थ साहिब श्री मुखवाकपातसाही १० श्री कृष्ण चरित्र कविता अंक ४२० से ४३६ तक नोट——उक्त परमाण से प्रगट है गुरू १० जी हिन्दूओंकी तरह सर्व देवताओंको दुर्गारूप मानते हैं खंडन समझना अज्ञान और मूर्खता और बेईमानी है प्रश्न— श्री गुरू १० जी स्वयं परमेश्वरहैं "दसमें पातसाह सभथाई होई सहाय "सर्व सिख कैहते और मानते है फिर गुरू १० जी को देवी देवता मानने की क्या जरूरतहै ॥ उत्तर—श्री गुरू १० जी का असली नाम गोविंददास है देखो उक्त संख्या ३ में श्री गुरू १० जी अपने आप को श्रीदुर्गारूप परमेश्वर का दास मानतेहैं जो[2] उनको परमेश्वर मानेगा वाहो नरकमें जाएगा॥यथा॥ जे हमको परमेसर उचिरहै ॥ तेसभ नर्क कुंडमहि पर है ॥ माकोदास तवन का जानो ॥ (दसमग्रन्थसाहिब श्री मुखवाक पातसाही १० बचित्रनाटक ग्रंथ अध्याये ६ कविता अंक ३२) नोट-बाज अज्ञानी पापी लोग हमकोका अर्थ सर्व संसार पर लगाते हैं ॥ सो महान मिथ्यार्थ नरक का साधन पाप का प्रचार करते हैं ॥ क्योंकि श्री गुरू १० जी श्री मुख से

१ गुरु दसमजी श्री दुर्गाजी के दास हैं २ मुझको

उक्त पुस्तक में ही हमको अपने प्रति कथन करते हैं ॥ यथा ॥ "हम इहकाज जगतमो आए ॥ धर्महेत गुरदेव पठाए (दसमग्रन्थ साहिब श्री मुख वाक पातसाही १० बचित्र नाटक अध्याये ६ कविता अंक ४२) नोट—उक्त हमको संसार अर्थ होही नहीं सकता एकको सवालाख झूठही बोलना धर्म होतो जुदी बातहै प्रश्न—नवीनसिंह (अकाली लोग) दसम ग्रंथ-साहिब को नहीं मानते क्योंकि कवीगोंका बणाया हुआ है ॥ उत्तर—दसम गुरू ग्रन्थसाहिब अथसे इति प्रन्यत गुरु दसजी कृत है कवीयों की कल्पना करनी मिथ्या और पाप है ॥ क्यों कि कवियों कृत ग्रन्थ दरया सतलज और सरसे नदी में वहाए गए और गुरमत के बिद्वान समग्र दसम ग्रन्थ साहिब[1]को गुरू १० कृत मानते हैं ॥ यथा ॥ (१) देखो खालसादीवान अंमृतसरदी आज्ञानुसार दसमग्रन्थ साहिबदे सुधाईदी रिपोट जो १ कतक सं० १९५४ बि० को भाई मनासिंह हकीम सकत्र गुरमत ग्रंथ परचारक सभा अंमृतसर ने अँगलो उरदू गुरमुखी प्रेस में छपवाकर मुफत बांटी में समग्र दसमग्रंथसाहिब गुरू १० जी कृत सिद्ध किया है ३२ ज्ञानीयों की सम्मती द्वारा ॥

(२) देखो नवीनसिंह (अकाली) ओं के अग्रणी भाई कानसिंह नाभा निवासी कृत गुरमत सुधाकर ॥ यथा ॥ दसम ग्रंथसाहिब की बीड़ बांधनेमें सिंहों के अनेक मतहोगए ॥ और येह झगड़ा देरतक दमदमें साहिबमें चलतारहा ॥ सं० १९०६ में भाई महताबसिंह जी अंमृतसर जी की बेअदबी का हाल सुन कर मस्से रंघड को मारने के इरादे से बीकानेर से दमदमें साहिब के रास्ते आए ॥ इस मुआमले में जब उनसे रायली गई तो उन्होंने कहा कि अगरमैं अमृतसरजी में शहीद होगिया तब

[1] गुरद्वारा प्रबन्धक कमेटी के सद्रिस माननिय है

दसम गुरूजी की एक बीड़ न रखनी जोकर मैं गस्सेको मारकर इस जगहि वाहि न आग्या तब बीड कायम रहे ॥ सर्व खालसा नै उनको इसबातको मानलिया ॥ और महताबसिंहजी अर दास करवाकर अंमृतसरजी को गए और गस्से को मारकर दमदमें साहिब में आए इसतरह दूसरी ग्रंथसाहिब की बीड़ कायमरही । जिसको अब दसमी पातसाही का ग्रन्थसाहिब कैहते हैं (गुरमत सुधाकर भाईकांन सिंह कृत वजीर हिन्द प्रेस अंमृतसर सं १९६७ वि० में छपे की पृष्ट १४२ पंक्ती ८ से २२ तक) नोट-उक्त परमाण से प्रगट है दसम ग्रन्थसाहिब करामात से कायम रहा जिसको आजकल के नवीनसिंह बनावटी और रदी कैहतेहैं शोक यह है कि दसमग्रंथ साहिब की वाणी जाप अकाल उस्तुति बचित्र नाटक कृष्ण अवतारमें "मैं नह गनेसह प्रथम मनाऊ "रहरासमें चौपई ४०४ त्रिया चरित्र की और अरदासादि अनेक वाणीयां धर्म्मजान पडते हैं सो इनको भी छोड़देना चाहीये

(३) हुकमंनामा गुरद्वारा अबचला[1] नगर जो सरदूलसिंहज्ञानी अंमृतसर निवासी नें ३ चेत्र सं० १९६२ वि० में बाटे का हुकम नम्बर ४ "दसम ग्रंथसाहिब को जो गुरू १० कृत न माने कवि उक्त कहनेवाले गुरू ते बेमुख पंथते खारज कीते जाणगे (हुकमनामा गुरद्वारा अबचल नगर)

(४) देखो 'गुरु गिरा प्रकाशिक ग्रन्थ "साहिब सिंहज्ञानीकृत सं० ४३९ नानक साही १ माघ छपे में साबित कीया है दसमग्रन्थसाहिब गुरू १० कृत है और आदि और दसमग्रंथ

---

१ सिखों की पात्र के मुख्य चार धांम जिनको सिख चार तखत (पटना १ अनन्दपुर २ अमृतसर ३ अवचलानगर) मुख्य स्थान मानते हैं उनमें से है ॥

साहिब में एकसार बाणीहै ॥ जो दसम की गुरबाणी नही मानते बोह आदि को भी नहीं मानते ।

(५) देखो पुस्तक "खालसा रैहत प्रकाश "भाई निधान सिंहजी रचित सं० ४३६ नानक साही गुरमत प्रेस अमृतसर छपेमें सिद्ध कियाहै ॥ दसम पातसाहीदे ग्रन्थ साहिबनू गुरू ना मंनणा येह कैहने वाले दसमपातसाही के सिख नहीं भेस बदलेहुए ईसाई समझने चाहीये ॥ गुरू मारी सर हिन्द के नाजम के बाबर कसूर वार समझने चाहीये ॥ क्योंकि उसने गुर के बेटे जीउदे जी दिवार में चुनाए थे ॥ इन्होंने दसम गुरू का नाम नेस्तनाबूद करना चाहा है ॥

(६) ग्रंथसाहिब दसमी पातसाही का मनीसिंघ अरदीपसिंघकी बीड़ वाला गुरूको है यातेसभी प्रमानहै (देखो ग्रन्थ श्री गुरुमत निरणयसागर "श्रीमान पंडिततारा सिंहजी रयास्त पटेयाला निवासी कृत जो अँगलो संस्कृतप्रेस लहौर सं० १६५५ बि० में छपे का पृष्ट ६०३ पंग्री १० और ११)

(७) जो आदबाणी होईहै सो भगत मईहै।ते साहिब दसवें पातसाहजी जोबाणी कीती है सो जुधमई है।कै स्त्री आंदे चरित्रहैन॥तेसे हिन्दू शस्त्राथी भैमान हैसन जुध मई बाणीयां ते ज्ञान उपदेश करकै एनाथी जुध करवाया है ॥ ते चरित्र इसवास्ते लिखे हैन॥ जो स्त्रीयांदे भोगां-विच मननहीं बंधणा ॥ जुधमई बाणी ते असतोत्र देवी दे पड़नगे इसते शस्त्रां विच सहायता होवेगी (देखो सिखों में परम परमाणीक मनीसिंह कृत भक्त रत्ना बली साखी १३५) नोट—उक्त परमाणीक परमाणों से प्रगट है कि दसम ग्रन्थ साहिब गुरू दसम कृत है

१ असल सम लिखा है

उपदेश संख्या ११

❀ श्री गुरू नानक मतमें गुरू उदासीन साधू हैं ❀

(प्रकर्ण १)

श्री गुरू नानक देवजीके गुरू संतरेण उदासी साधू हैं ॥

(क) संतरेण[1] मम नाम है भेखदासी जान ॥ उदासीन निरबाण हम बनमें रहें महान (देखो गुरु नानक विजिय पुस्तक सफा ४१० और ४११) (ख) उदासीनखट दर्श विखै सनातन किया पुराण ॥ संतरेण प्रतख गुरू भेख पुरातन मान ॥ गुरू गए बपारको सब दर्शन तह कीन ॥ सेवा नानकनै करी सतगुर सरना लीन (देखो पुस्तक उदासीन मात्रा सफा १५४) (ग) संतरेण मुनि तिन अधकारी ॥ गुरु नानक तिनके निरंकारी (देखो पुस्तक उदासीन मात्रामें मात्रा उदासीन तुक २१) (घ) नानक जी श्री गुरू संतरेणजी उदासीके सिश हुए जिन के आगे सरबस्व २०) का भोजन (सीधा) रख नमस्कारकी जो असली गुरू धार्ण की रीती सचेसौदे के नामसे प्रकटहै (देखो श्री वाले बाली जन्मसाखीकी साखी ३१). (ङ) दान पावहु संतासंग नानक[2] रेणु दासारा (श्री गुरू आद ग्रन्थ साहिब राग मारू महाला ५ शब्द २२ तुक ४) (च) नानक इक अराधे[2] संतन रेणार (आद ग्रन्थ साहिब राग रामकलीकी बार महाला ५ पौड़ी १० का श्लोक २) (छ)

१ नानकजीके गुरू २ गुरू ५ जी गुरू नानकजी बावत कहते हैं और गुरू नानक के रूप है

भाई रे संत जनाकी रेणु ॥ संतसभा गुर पाईऐ ॥ मुक्त पदार्थ धेणु (श्री गुरु आद ग्रन्थ साहिब राग श्री महाल्ला १ शब्द १२ तुक १) (ज) निव निव पाइ लगउ गुर अपने आत्मरामनिहारिया (श्री गुरु आद ग्रन्थ साहिब राग आसा महाल्ला १ शब्द १६ तुक १) (झ) गुरु नानकजी कैहदेहैंन॥ तेमैंनू जदोंदी संताने सोझी दिती है। तामैंआपनू इसदा साखी जाणदाहां ॥ जेहड़ा माता पिता नूं मिलकर मैंनू देह अभिमान होगियासी उस वलो *बुराइ गयाहां ॥ ते गुरादा उपदेश मैंने द्रिढ़ किताहै (देखो श्री भाई गनी सिंहकृत भगतरत्नावली साखी ६) नोट–श्री रामचंद्रजीके देहधारी गुरु वसिष्ठजी श्रीकृष्णजी के गुरु संदीपनी जी थे ॥ गुरु नानकजीके गुरु देहधारी नवीन सिंह अकाली लोग नहीं मानते तो गुरु ग्रन्थसाहिबमें लिखा है "निगुरे का नाऊ बुरा "और गुरु तब ही होता है जबपैहले चेला होजाए ॥ इसकारण गुरु नानक जी श्री गुरु संतरेण जीके शिष्य थे निराकार के सिरशदेह धारी नहीं हो सक्ता जैसे बंध्याके पुत्र आकाशमें फूल शशे के सींग आदि ॥

(प्रकर्ण २)

श्री गुरु नानकजी साधू (फकीर थे)

(क सिर पर[1]नह[2] तुकतए जुगल॥गज खफनी[3] गर वर चीर सज्यान भगवो[4] सजे ॥ धरेयो सुबेख शरीर (नानक प्रकाश पुर्वार्ध अध्याये ३२) (ख) धरी खफनी[2] जगदीस ॥ सजै[1] आठका गजदो पुनसीस॥सुभै तनपै भगवो[4] संज्यान (नानक सूर्योदय जन्मसाखी गणेशा सिंह वेदी रचित) (ग)

१ छादा साफा २ लंगोट दो ३ बिला सिये कुमीज ४ फकीरोंवाले भगवे वस्त्र * मुड़गिया हूं

असी फकीर अतीतअहे (श्रीगुरु नानक देवजीकी जन्मसाखी वालेवालीकी साखी३२) (घ)वेबे१नकी जीनै आखिया॥भाई जी असी सरमिंदे हुदेहां॥ जोतूं भाबीनूं दिलासा नहीं दिदा॥तूंतां साधहोगिया (उक्त बाले वाली जन्मसाखीकी साखी१८) (ङ,पातसाह दौलतखांन नै केहा नानक आलम फकीरहै (उक्त जन्म साखी की साखी २ १९) (च) मर-दाने मिरासीने देखिया नानक तपा होगिया (उक्त जन्मसाखी की साखी २१) (छ) मरदाना भेजिया नानक बेदी फकीरनै (उक्त जन्मसाखी की साखी २२) (तां इक हाजी पुछेआ फकीरजी तूं हिन्दू है कि मुसलमानहैं॥ तां बाबाजी केहा जी असी हिन्दू फकीर हां (उक्त जन्म साखी की साखी२६) (झ) उदासीन मम भेखहै॥ ३ तम मन दितै लीन(देखो ग्रंथ लछमीविलास ८७४) (ञ) गुरबचनी बाहर-घर एको नानक भया उदासी (श्री गुरु आद ग्रन्थसाहिब राग मारू महाला १शब्द ११ तुक ५) (ट) गुरमुख खोजत भए उदासी (श्रीगुरु आद ग्रन्थ साहिब राग रामकली बाणी सिध गोष्ट महाला ४ १ शब्द १८) (ठ) बाबे भेखबणाया उदासी की रीत चलाई (श्री भाई गुरदास जी की वार १ पौड़ी २४) (ड) गुरु नानकजी जहां होगए॥ करी फकीरी देस नवए (देखो सौसाखी की साखी ८३ श्री मुख बाक पातसाही १०) (ढ) बाबा आया करतारपुर भेख उदासी सगल उतारा॥ पैहर संसारी कपड़े मंजी बैठ किया अवतारा॥ उलटी गंग बहाई उन गुर अंगद सिरउपर धारा (श्री भाई गुरदासजी की वार १ पौड़ी ३४) नोट-उक्त परमाणों से प्रगटहै श्री गुरु नानकजी उदासी साधू

१ भौजाई २ फकीर ३ गुरुकी आज्ञासे ४ मर्यादा

थे सचे सौदे से लेकर मृत्यु[1] तक जो एक साधूओं वाली चादर (गाती) अंततकरही जो हिन्दू मुसलमानोंने आधी २ बांटकर जलाई और कबर बनाई ॥ श्री गुरू नानकजीका साधूबाना सेली टोपी आदि गुरू अंगदजी ने धारणकी ॥ गुरू नानकजी वृद्ध होने के कारण साधूओंका कर्म उपदेशादि बैठ कर करते रहे ॥ उक्त साधू बाना पांचवेंगुरू अरजनजी तक धारण रहा फिर गुरु ६ हरिगोविंदजी ने उदासी साधू बाना सेली टोपी आदिक संभालकर रखादी जो गुरू हरिगोबिंदजीको गुरयाई[2] मिलन प्रसंग से प्रगट है ॥ यथा ॥ चौ० रीत गुरु नानक जी आही ॥ मसंद[3] लियाए सुख के ताँई ॥ दोहरा ॥ गुरमंत्र पोथी जोउ सेली[4] टोपीसाथ ॥ माला मंजी पांचए धर्त निवायो माथ॥ चौ० हरिगुबिंद दिख मन मुसकाए॥ बुढ़े जी को बैन अलाए ॥ राहमसंद क्या राख्यो आगर ॥ बुढ[5] कह सुनिये सुखसागर ॥ तुमते बात न कोई छपाई। गुरू नानक एहरीत[2] चलाई ॥ इन गुरयाई को धारे ॥ बहुर गुरू होइ जग निसतारैं ॥ दो० हरि गुबिंदजी तब कहा सुन वुढाजी बैन काल पुरुष बच किया:करे भवघट जिसको अैन ॥ चौ० बदला पित सेली पयै ॥ तौ हम सेली सीस धरीये ॥ शस्त्र धार जो बदला पावै शस्त्र धारन हमको बन आवै ॥ प्रभु आज्ञा तुम धारन कीजे ॥ इनको इकठेही कही धरीजै[6] ॥ दो० श्री गुरू श्रीमुख अस बच भाखे ॥ तोसे खाने एहु देहु राखे ॥ चार अवतार और हम धरने ॥ कौतक अनक जगतमें करने ॥ सेली लायक सेली धरै ॥

१ मृत्यु २ मर्यादा ३ गुरुके कर्म चारी ४ उदासियोंके मुख्यवाला ५ गुरू नानक जीका चेला ६ खजाने

लायक शस्त्र शस्त्र करदई (देखो गुरबिलास पात साही ६ अध्याये ८ कबिता अंक १० से १६ तक) उक्त परमाणीक परमाणीक परमाण से प्रगट है गुरू ६ जी ने अगले ४ गुरुओं के लिये उदासी बाण सेली टोपी आदिक तोसेखाने[1] में अमोलक रत्न समझकर धरवादी ॥ सो दसों गुरु एकरूप हैं ॥ यथा ॥ श्री नानक अंगद करमाना ॥ अंगद अमरदास पैहचाना ॥ अमरदास रामदास कहायो ॥ साधनलखा मूड़ नहीं पायो ॥ भिंन भिंन सबहूं करजाना एकरूप किनहूं पैहचाना जिनजाना तिनही सिधपाई बिनसमझे सिध हाथ न आई ॥ इत्यादि (देखो दसमग्रंथसाहिब बचित्र नाटिक अध्याये ५ कबिताअंक ६ और १०) नोट श्रीगुरू दसम जी खुद फकीर साधू थे ॥ जो बक्तके हुकाम औरंगजेब पातसाह कैहता हुआ नसीहत करता है ॥ यथा जैसे हीर पीर फकीर पातसाही घर विखै हैन ॥ तैसे तुम भी रहो ॥"
(देखो सौसाखीकी साखी २८ श्रीमुखवाक पातसाही १०) उदासी भेषके धारणेंका हुकम अकाल पुरुषजीने अकाल उसतुति द्वारा गुरूदसमजी को दिया ॥ यथा ॥ (क) कहूं जोग भेस उदास (दसमग्रंथसाहिब अकाल उसतुति कबिता अंक ४२) (ख) कहूं फिरत रूप उदास (उक्त पता कबिता अंक ४६) (ग) कई भ्रमत देसदेसन उदास (उक्त पता कबिता अंक १३८)

(प्रकरण ३)

दसों गुरु उदासी साधुओं के शिष्य साधु हैं तो ही उनकी संतान साधू बाबे कहलाती है

१ खजाने २ फिरका

(१) श्री गुरु नानक जीकी संतान श्री लक्ष्मीचंद जीसे बेदी बावे और श्री चंद जीसे उदासी साधू बाबा गुर दिता चार धुणे और बख्सीसा आदि जिसकी पुष्टी श्री गुरू श्रीचंद जीकी वाणीसे होती है (क) श्री चंद कहे कंधारी नाथा ॥ सतगुरनानक किये सनाथा[1] (देखो मात्रा श्री चंद जीकी) (ख) ओअं शब्द गुरू नानक दीना (देखो मात्रा श्रीचंदजीकी

(२) श्री गुरु अंगद जीकी संतान तेहण बावे ॥

(३) श्री गुरु अमरदासजीकी संतान भले बावे ॥

(४) श्री श्री गुरु रामदासजी की संतान सोढी साहिब जादे जो उक्त बावेयोंकी सद्रिस पूजा दान भेटा लेते हैं नोट श्री गुरु नानक जीके छ सिख थे १ भाईबाला २ बाबा बुढा ३ अजीतानंद ४ अंगदजी ५ श्रीचद ६ लक्ष्मी चंद ॥ जिनमें सर्वसिख मनमूख करके आखरी सिख परलोक से आकर श्री चांद और लखमी चांद जीको गुरू नियत कर गए ॥ जो श्री चंदजी और उनकी उदासी संप्रदाय चारों दिशओं में फिरकर उपदेशकरें और लखमी चांद जीके बेदी बावे एक जगह बैठकर उपदेशकरें जो सबसे पैहला पुराचीन परमाणीक सिख इतिहाससे प्रगट है ॥ यथा ॥ अंतसमें बेटियां केहा ॥ सानू मंनेगा कौन ॥ तां श्री गुरू बाबेजी केहा सुणों बेटा जो गुरु हुंदेहैंन ॥ अथवा जो पीर हुंदे-हैन ॥ उनादी कमाई दासदका ॥ जां उनादे तेजकरके उनादे कूकर[2] पूजीदेहैन ॥ ते तुसीतां खास मेरे पुत्रहो ॥ बेटा एस बातदी तुसी रंचक प्रमान चिंता न करो ॥ जो कोई एस संसारते सनू मंन्नेगा ॥ बेटा ओही तुहानू मंन्नेगा ॥ (देखो सिखोंका पैहला ईतीहास श्री भाई बाले

१ कृतार्थ २ कुत्ते

वाली जन्म साखी की साखी १८३) नोट—उक्त परमाण से प्रगट है गुरू नानकजी अपना स्वरूप श्रीचंदजीको और लखमी चंद जी को नियत[1] करगए[2] हैं ॥ जिसकी पुष्टी गुरू दसम जी करते हैं ॥ 'बावेके बावरके दोऊ ॥ आपकरे प्रमेसर सोऊ" (दसम ग्रन्थ साहिब श्री मुखवाक पातसाही १० बचित्र नाटिक अध्याये १३ कबिता अंक ६) यह आखिरी गुरू जीका आखिरी फैसला है जिस से मुनकिर होना सिंहोंको महान पाप है ॥ इत्यादि कारणों सेही सर्ब गुरू साहिब श्री गुरू श्री चंद जीको गुरू मानते हैं ॥ यथा ॥

(१) श्री गुरू श्री चंद जीको गुरू नानक जी मिले गुरयाई दी गुरू नानक जीकी आज्ञा है "जो सानू मंनेगा सो तुहानू मंनेगा " (श्री भाई बालेवाली जन्मसाखी की साखी-१८३)

(२) श्री गुरू श्रीचंद जीको गुरु अंगद जी मिले गुरू श्रीचंद[3] जीकी पुस्तक लुकाली श्री गुरू श्री चंद जीने कुष्ठी होने का श्राप दीया सो वोह कुष्ठी रहे ॥ यथा ॥ (क) देखो खालसा त्वारीख हिस्सा १ नंबर १ पृष्ठ ५७१ पंक्ती १४ से १६ तक ॥ (ख) नानक सूर्योदय जन्म साखी उत्रार्ध अध्याये ५५ कविता अंक ३८ ॥ (ग) सूर्य प्रकाश रास १ अंसू १६ ॥

(३) श्री गुरू श्रीचंद जीसे गुरू अमर दास जीका मिलाप नहीं हुआ पर गुरू जान स्तुति करते रहे तब ही उनके शिष्य गुरू रामदासजी गुरू श्री चदजीको गुरू मानते थे ॥

(४) श्री गुरू श्री चंद जीसे गुरू रामदासजीमिले जो प्रसंग सिखोंके इतिहास सूर्य प्रकाशमें दर्ज है ॥ दो० एकदिना श्री चंदजी मनमहि करत विचार ॥ रामदास अबगुरू भियो हमसों कैस पिआर ॥ चौ० ऐसो मनमहि करत

१ गुरुनानक जीकी सतान २ बाबर बादसाहकी संतान ३ छपाली

विचारी॥ चले गुदड़ीये[1] कर अस वारी॥सुनके राम दास गुरपूरे ॥ तुर्ण चले प्रेम भर पूरे ॥ हाथ जोड़ कर करी प्रणामूं ॥ आनेघरमहि विनय बखानू ॥ एकसु यह पंजसत[2] रुप्या दीनभेट बहु सेव कमईया ॥ एक जाम[3] दिन जबेरहागो ॥ आए रबाबी कीरतन गाग्रो ॥ उचस्थान श्रीचंद गैठाए ॥ आप निमरकर तरे टिकाए ॥ श्री चंद बोले ततकालू ॥ करत परेखण[4] पर्मदयालू ॥ इतनादाड़ा[5] कैस बधायो ॥ सुणके सतगुरभे निरमायो ॥ दो० चर्ण गहि[6]कर प्रेमसों ॥ पोछह बारंबार इसी हेत बधावतभे सुनीये सतगुर यार (देखो सिखोंका प्रमाणीक इतीहास सूर्य प्रकाश रास २ अंसु १४ में) नोट–उक्त भेटा ५००) गुरू रामदास जीकी सदृश पीछेसे सर्व गुरु सालाने देते रहे ॥ श्रीगुरुअरजन जीने एक साल ना देने पर दुगनी दी ॥

(५) श्री गुरू श्री चंदजी से गुर अरजन जी मिले ॥ दुगनी भेटादी ॥ गिन देत पजसै सारे ॥ अबकै येही रिदै विचारै ॥ लख दुखनी भई अक्रोरा इत्यादि (सूर्य प्रकाश रास ४ अंसू २८) नोट–श्री गुरू श्रीचंद जी के दर्शनोंको बारठ (सिंध) में गुरू अरजन जी सं १६६० बि० आषाड़ शुदी १५ को गए ॥ सुखमनीसाहिबकी अधूरी रचना दिखलाई ॥ श्री गुरू श्रीचंद जीने पूछा सचे गुरू उदासी साधू[8] और संतोंकी महिमा भी लिखी है श्री गुरु अरजनजीने प्रार्थना पूर्वक कहा सुखमनी अष्टपदी ७ और १३ में की है।।यथा।। (साधूमहिमा)[10] साधकै[11] संग मुख उजलहोत॥ साधसंग मल

१ अलमस्त जीका नाम है २ पांचसौ ३ दिनरात्री ४ परीक्षा लिये ५ बड़ी दाड़ी ६ पकड़ कर ७ इकट्ठी ८ जितेन्द्रीय ९ ग्रहस्थी १० साधूओं महिमा ११ जितेन्द्रीय सी सा

सगली खोत ॥ साधकै संग मिटै अभी मानु ॥ साधकै संग प्रगटै सुग्यान ॥ साधकै संग बूझै प्रभनेरा ॥ साध संग सभहोत नबेरा॥ साधकै संगपा एनाम रत्न॥ साध की महिमा बरनै कउन प्रानी ॥ नानक साध की सोभा प्रभमाहीं समानी॥ १ ॥ साधकै संग अगोचर मिलै ॥ साधकै संग सदा प्रफूलै ॥ साधकै संगि आवह वसि- पंचा ॥ साधसंग अमृत रस भुंचा ॥ साधसंग होए सभकी रेन ॥ साधकै संगि मनोहर बैन ॥ साधकै संग न कतहूं धावै ॥ साध संग असथित मनु पावै ॥ साध के संग मायाते भिन ॥ साधसंग नानक प्रभ सु प्रशंन ।२। साधसंग दुसमन सभमीत ॥ साधकै संग महापुनीत॥ साधसंग किस सीऊं नहीं बैर ॥ साधकै संग न बींगा पैर ॥ साधकै संग नाहीं को मंदा ॥ साधसंग जानै प्रमा- नंदा ॥ साधकै संग नाही हउताप ॥ साधकै संग तजै सभआप ॥ आपेजानै साध बडाई ॥ नानक साध प्रभु बनि आई ॥ ३ ॥ साधकै संग न कबहूं धावै ॥ साधकै संग सदा सुखपावै ॥ साधसंग बस्तअगोचर लहै ॥ साधकै संग अजरु सहै ॥ साधकै संग बसै थान ऊचै ॥ साधकै संग माहिल पहंचै ॥ साधकै संग द्रिडै सभ धर्म ॥ साधकै संग केवले पारब्रह्म ॥ साधकै संग पाए नाम निधान ॥ नानक साधकै कुरबान ॥४॥ साध कै संग सभकुल उधारै ॥ साधकै संग साजन मीत कुटंब निसतारै। साधूकै संग सो धन पावै । जिसधन ते सभको बरसावै ॥ साधसंग धर्मराय करे सेवा ॥ साध के संग सोभा सुरदेवा ॥ साधकै संग पाप पलायन ॥ साधसंग अमृत गुनगायन ॥ साधकै संग सर्बथानगंम॥

नानक साधकै संगसफल जन्म ।५। साधकै संग नहीं कछु घाल॥ दरशन भेटत होत निहाल॥ साधकै संग कलूखत हरै॥ साधकै संग नर्क परहरै साधकै संग इहां उहां सुहेला साधसंग बिछुरत हरिमेला॥ जो इच्छै सोई फल पावै॥ साधकै संग न बिरथा जावै ॥ पारब्रह्म साधरिस बसै ॥ नानक उधरैं साध सुन रसै ६ साधकै संग सुनऊ हरि नाऊ। साधसंग हरिगुन गाऊ। साधकै संग न मनते बिसरै। साधसंग सरपर निस तरै ॥ साधकै संग लगै प्रभुमीठा॥ साधूकै संग घटि घटि डीठा ॥ साधसंग भए आग्या-कारी ॥ साधसंग गति भई हमारी ॥ साधकै संग मिटै सभिरोग॥ नानक साध भेटे संजोग । ७ । साध की महिमा बेद[1] न जानहि ॥ जेता सुनहि तेता बखानह ॥ साध की उपमा त्रिहुगुणतेदूर ॥ साध की उपमा रही भरपूर ॥ साध सोभा का नहीं अंत॥ साध की सोभा सदा बेअंत ॥ साध की सोभा उचते उची ॥ साध की सोभा मूचते मूची ॥ साध की सोभा साध बनिआई॥ नानक साध प्रभु भेद न भाई ॥ ८ ॥ (श्री गुरु आद ग्रंथ-साहिब राग गौड़ी[3] म० ५ बाणी सुखमनी अष्टपदी ७) (संत-[2] महिमा) संतकै दूखन आरजौघटै संतकै दूखन जमतेन हीं छूटै ॥ संतकै दूखन सुख सभ जाइ ॥ संतकै दूखन नर्क महिपाइ ॥ संतकै दूखन मतिहोइ मलीन ॥ संतकै दूखन सोभाते हीन॥ संतकै हतेको रखै न कोइ ॥ संत कै दूखन थान भ्रष्टहोइ ॥ संतकृपाल कृपाजे करै॥ नानक संत संग निंदक भी तरै ।१। सन्तनकै दूखनते मुखभवै॥

---

१ बेद न जाने नकार देहली दीपक है जो बेद उस्तुति में है देखो उपदेश संख्या ८ २ संत महिमा है ३ ग्रहस्थी (घर बारी) उदासी

सन्तनकै दूखन काग जितलगै॥ सन्तनकै दूखन सर्प जोन पाइ॥ सन्तकै दूखन त्रिगद जोन किरमाइ सन्तकै दूखन त्रिष्णा महि जलै॥ सन्तकै दूखन सभको छलै॥ सन्तकै दूखन तेजसभजाइ ॥ सन्तकै दूखन नीच नीचाइ ॥ सन्तदोखी का थाउकोनाहि ॥ नानक सन्तभावैता ओ इभी गत पाहि ॥ २ ॥ सन्तका निंदक महा अततार्ई[1] ॥ सन्त का निंदकु खिन टिकनु न पाई ॥ सन्त का निंदकु महाहत्यारा ॥ सन्त का निंदकु प्रमेसुरमारा ॥ सन्त का निंदकु राज तेहीन ॥ सन्तका निंदक दुखीआ अरु दीन॥ सन्त के निंदकु को सर्बरोग ॥ सन्त के निंदक को सदा ब्योग ॥ सन्त की निंदा दोखमहि दोख ॥ नानक सन्त भावैता उसकाभी होइ मोख ।३। सन्त का दोखी सदा अपवित ॥ सन्त का दोखी किसै का नमित ॥ सन्त के दोखी को डानु लागै ॥ सन्त के दोखी को सभ त्यागै ॥ सन्त का दोखी महा अहंकारी ॥ सन्त का दोखी सदा विकारी ॥ सन्त का दोखी जन्मै मरै ॥ सन्त की दूखना सुखते टरै ॥ सन्त के दोखी को नहीं ठाऊ॥ नानक सन्त भावैत लए मिलाइ ॥४॥ सन्त का दोखी अधबीचते टूटै ॥ सन्तका दोखी कितै काज न पहूँचै ॥ सन्त के दोखी को उदियान भ्रमाईयै ॥ सन्त का दोखी उझड़पाइये ॥ सन्त का दोखी अंतरते थोथा ॥ जिऊ सांस विना मृतक की लोथा ॥ सन्त के दोखी की जड़ कछूनाहि ॥ आपन बीज आपन ही खाहि ॥ सन्त के दोखी को अवरुनराखनहार॥

१ अग्नि लगाने वाला–जैहर देनेवाला–परस्त्री निकालन वाला–माता पिता का कष्टपौहुंचानवाला–गुरुघाती गर्भ गिरवानवाला–ऐसे पापीको आततई गीतामें भी कहा है ॥

नानक सन्त भावैता लए उवार ॥५॥ सन्त का दोखी इऊं बिललाइ ॥ जिऊ जल विहून मछली तड़फड़ाइ ॥ सन्त का दोखी भूखा नहीं राजै ॥ जिउ पावक इधन नही ध्रापै ॥ सन्तका दोखी छुटै अकेला ॥ जिऊ बूआड़ तिल खेतमहि दुहेला ॥ सन्त का दोखी धर्मते रैहत ॥ सन्त का दोखी सद मिथिया कैहत ॥ किरत निंदकु का धुरही पइया ॥ नानक जो तिसभावै सोइ थिया ॥ ६ ॥ सन्त का दोखी बिगड़ रूप हो जाइ ॥ सन्त के दोखी को दरगह मिले सजाइ ॥ सन्त का दोखी सदा सहकाइऐ ॥ सन्तका दोखी न मरै न जाइऐ ॥ सन्तके दोखीकी पूजै न आस॥ सन्तका दोखी उठ चलै निरास सन्तकै दोखन त्रिष्टै कोइ ॥ जैसा भावै तैसा कोइ-होइ ॥ पया किरतन मेटैकोई ॥ नानक जानै सचा सोई७ सभघट तिसके ओहकरणे हार ॥ सदा सदा तिसको नमसकार ॥ प्रभ की उसतुति करहु दिन रात ॥ तिसह ध्यावहु सास ग्रास ॥ सभ कुछ वरतै तिसका किया ॥ जैसा करै तैसे को थीआ अपना खेल आप कर नैहार दूसर कौन कहै विचार । जिसनू कृपा करै तिसनूआपन नाम देइ ॥ बड़ भागी नानक जन सोइ ॥ ८ ॥ (श्री गुरू आद ग्रन्थ साहिब राग गौड़ी महाला ५ बाणी सुखमनी अष्ट-पदी १३)

(६) श्री गुरु श्री चंद जीसे गुरू हरिगोविंद जी मिले और अपना बड़ा पुत्र गुरदिता भेटा किया ॥ यथा ॥ चौ० श्री अंमृतसरको तवछोर[1] ॥ गमने प्रभुगिरनकी ओर ॥ देसमनोहर परबतकाछे ॥ तिसै निहारत सनगर

१ पैरों से पैमायशकी

बाळे॥ सुनित प्रथम ही तिसै दिसही ॥ श्री नानक[१] नंदन रहि तिस ही श्री चंद निज बैस[२] बुलंद॥ जोर विरत[३]को लेतअनंद॥ श्री हरगोबिंदचहत निहारै॥ गमने तिसदेस बिहारै॥ बहुर जहां श्री नानक नंद[१]॥ पहुचे तहि श्री हरिगोबिंद॥ उतर तुरंग[४]ते लें सुतचारी[५]॥ श्री चंद दर्से तपधारी॥ चरन कमल पर बंदनकीन॥ पुनकरजोर सम्मुख असीन॥ पर्भ बृध जोगे सर हेरा॥ श्री बाबे सुन किह तिस बेरा॥ कहु पुरखा केतकहैं नंद[१]॥ तब बोले श्री हरि गोबिंद॥ पाचोंते इकभा प्रलोकइ॥ चतुर आपकादर्श बिलोकइ॥ कह श्री चंद एकहमदैहो॥ अपर आपके संग रखैहो॥ सुन कर श्री गुरु हरिगोबिंद बड़सुत अरपियो[७] तब श्री चंद॥ शस्त्र बस्त्र पहराय नवीन॥ ढिग बैठाइके बंदन कीन श्री नानक सुतभयो प्रशंन॥ धरहु नमरता जाते धंन॥सभ कुबलीजै पूर्ब तुमै टोपी रही हुती इहसमै॥सो भी लई तुमजुत,बड़ी आई,तुमरी कृत तुमै बनिआई इम कह टोपी सिर तेलीन॥ गुर दितेके सिर धरदीन॥ अपर पुनर गुरके लख चिता॥ भयो सो बाबेको[८] गुरदिता॥ इही बसेशन सबजग लहै॥ श्री बाबा गुरदिता कहहै॥ निधि सिधि तपबलते भरी टोपी गुरदिते सिरधरी॥ (सूर्य प्रकाश रास ७ अंसू ६ में) नोट–श्री गुरू हरिगोबिंद जी सालदरसाल श्री गुरु श्री चंद जीके दर्शनोंको जाया करते थे देखो सूर्य प्रकाश रास ५ अंसू २७ और रास ६ अंसू ५५ में दर्ज है बिस्तार भयसे नहीं लिखा॥

१ पुत्र २ उमर ३ अभ्यास ४ घोड़ा ५ चार पुत्र ६ मृत्यु ७ पुत्र भेटा करदीया ८ श्री चन्द जीका चेला

(७) श्री गुरू श्री चंद जीके शिष्य बावेगुरदिते जीका पुत्र हरिरायजी सातमां गुरू हुआ जो श्री गुरु श्री चंदजी के शिष्य गुरू दिता जी को वड़ा और गुरु मानता था

(८) श्री गुरू श्री चंद जीके शिष्य बावे गुरदितेजीका पोत्रा आटवां गुरू हरिक्रष्ण हुआ जो श्री गुरू श्री चंद जीके शिष्य गुरदिता जीको वड़ा और गुरू मानता था ॥

(९) श्रीगुरू श्री चंद जीके शिष्य बावे गुरदिते जीका छोटा भाई तेग बहादरजी नौवां गुरू हुआ जो श्री गुरु श्री चंद जीके शिष्य गुरदिता जीको वड़ा और गुरु मानता था ॥

(१०) श्री गुरु श्री चंद जीके शिष्य बावेगुरदिते जीका भतीजा गोबिंददास दसमां गुरू हुआ जो श्री गुरूश्रीचंद जीके शिष्य गुर दिता जीको वड़ा और गुरू मानता था ॥ नोट-यह दसम गुरू उदासी साधू फकीर थे तोही श्री महंत कृपालदास जीने जुधमें अपार मदतकी ॥ जैसे राजे राजों की मदत करते हैं । अमीर अमीरोंकी और अैहलकार अैहलकारोंकी इसीप्रकार फकीर फकीरों की मदत कृपालदासनेकी ॥ यथा ॥

(१) कृपाल कोपियो[1] कुतको[2] संभारी ॥ हठीखांन हयातके सीसझारी ॥ मनो माखनं मटकी कांनफोरं ॥ (श्री गुरु दसमग्रंथसाहिब श्री मुखवाक पातसाही १० बचित्र नाटिक अध्याये ८ कबिता अंक ६ और ७)

(२) तहांमातलेयं कृपाल क्रुधं ॥ छकियो छोभ छत्री करेयो जुध सुधं (उक्त पता बचित्र नाटिक अध्याये ८ कबिता अंक ९)

(३) कुपियो कृपाल ॥ नचेमराल ॥ बजे बजंत ॥ करूर अनंत (उक्त पता बचित्र नाटिक अध्याये ९ कबिता अंक ८)

---

१ क्रोध हुआ २ सोटा

(४) कृपाल कोपियं ॥ हठी पापरोपियं ॥ सरोघं चलाहे बड़े बीर घाहे (उक्त पता वचित्र नाटिक अध्याये ६ क० ११)

(५) कृपाल क्रूधं[1] कियो जुध सुधं ॥ महाबीर गजे महासार बजे (उक्त पता अ० ६ क० १३)

(६) तब कृपाल चितमों एहगनी ॥ ऐस घात फिर हाथ न ऐहैं ॥ सबहूं फेरसमों छलजैहैं (उक्तपता अध्याये १० क० १४)

(७) जब गियो गुपाल कुपियो कृपाल (उक्त पता अध्याये १० क० १६)

(८) कुपियो कृपालं ॥ सज्जमरालं ॥ बाह बिसालं धरढालं (उक्त पता अ० १० क० २५)

(६) कृपाल गोपाल जुझे (उक्त पता अ० १० क० ३०)

नोट—नवीन सिंह अकाली लोग ओईमानीसे कहा करते हैं महंत कृपालदास ने भंगकी तरंग में भंगरगड़नेका कुतका (सोटा) हठीखांन और हयातखांनके सिरमें मार कर भाग गिया ॥ उक्त परमाणोंसे प्रगट है श्री महंत कृपालदासजीने महान जुध (युद्ध) कर दसमगुरू की विजय कराई नहीं सिखीका नामों निशान न रहता जो सूर्यप्रकाशादि इतिहास ग्रन्थोंमें विस्तार पूर्वक लिखा है ॥ महंत कृपाल दास चार धूणेओंमेंसे अलमस्त जीका चौथी पुश्तमें पोता लेला था ॥

(प्रकर्ण ४)

गुरु नानक संप्रदाय में उदासी साधू चार धूणे छै बख-सीसां, उप बखसीसां, अवान्तर बखसीसां, यथा—

(१) दोहा ॥ बालूहसना, फूलपुन, गोयंद, अलमस्त,

1 भारीशस्त्र

मुख उदासी एह भए वहुरो साध समस्त ॥ तिनते विद- नियो पंथउदासी ॥ लाखों भए करहि तपरासी ॥ श्री नानक को अस युग नंदन ॥ कविसंतोख सिंह ठानत वंदन (सूर्यप्रकास) नोट—यह चारधूणे (चारों दिशा के लिये) इस प्रकार हैं। गुरू नानक जीके शिष्य श्रीचंद ॥ श्रीचंदजीके शिस बाबा गुरदिता ॥ बाबा गुर दिताजीके चार शिष्य बालू- हसना १ फूल २ गोयंद ३ अलमस्त ४

(छै बखसीसा)

(१) भगत भगवान संन्यासी करामातदेख उदासी भए ३६० गदीयोंके हुआ चेला श्री चंद जीका ॥

(२) जीतमलीये उदासी गुरू मीथीचंद सोढीके चेले हुए

(३) सुथरेसाही उदासी गुरू हरिगोविंदजीके पालक ॥ चेलेगुरूहरिरायजीके हुए ॥

(४) मिहांसाहबीये उदासी चेले नंदलाल सोहनाजीके हुए

(५) बखतमलीये उदासी चेले गुरू हरिरायजीके हुए ॥

(६) संगत साहबीये उदासी (सच्चीदाड़ी) चेले गुरू हरीरायजीके हुए ॥

(उप बखसीसां)

(१) धीरमलीये उदासी चेले बाबागुरदिता जीके हुए॥

(२) माणक चंदीये (मेहरचंदीये) उदासी चेले बाबा धर्म चंदजीके हुए ॥

(३) हिंदालीये (निरंजनीये) उदासी चेले गुरू अम- रदासजीके हुए ॥

(४) दीवानीये उदासी चेले सोढी गुरू मेहरबानजीके हुए

(५) घनीयासाहीये उदासी चेले गुरूतेगबहादरजीके हुए

(६) रामदासीये उदासी चेले बाबा बुढा जीके हुए ॥

(७) सेवादासीये उदासी चेले गुरू तेगबहादरजीके हुए॥

(८) जङ्गासीये उदासी चेले गुरू हरिक्रिष्ण जीके हुए ॥

(९) थानदासीये उदासी चेले बाबा दयारामजीके हुए॥

(अवान्तर बखसीसां)

(१) रामरईये उदासी चेले गुरू रामराय जीके हुए ॥
(२) गंगूसाहीये उदासी चेले गुरू अमरदासजीके हुए ॥
(३) सत करताराये उदासी चेले गुरूअरजनजीके हुए॥
(४) भाई बहलोके उदासी चेले गुरू अरजनजीके हुए ॥
(५) दखनी राईये उदासी चेले निरंजनरायजीके हुए॥
(६) बीरमदासीये उदासीचेले किसी उदासी साधूके हुए
(७) मोहरदासीये उदासीचेले किसी उदासी साधूके हुए
(८) भाई मूलीये उदासी चेले गुरू दसमके हुए ॥
(९) गुलाबदासीये उदासी चेले बाबा ब्रह्मदासजीके हुए
(१०) हीरादासीये उदासीचले बाबासरनदासजीके हुए॥
(११) गैहरभंगीरीये उदासी चेले श्रीस्वामी विष्णुदास जीके हुए ॥ नोट-यह ३० प्रकारके उदासी साधू संसार में प्रसिद्ध हैं ॥ जिन जीवतु गुरो की महिमासे गुरू ग्रन्थ साहिब भरपूर है ॥ यथा ॥ "जीवत छाड जाहि दीवाने[1] मुएथांते को बिरसाने" प्रश्न-उदासीयोंका अड़ंगा श्रीचंद जीसे चला सो श्री चंद जीने पिता (गुरू नानक) जी का बचन नहीं माना इसकारण गुरू नहीं हुआ तो और उदासीयोंकी क्या गिणती है ॥यथा॥ पुत्री कौलन पालियो कर पीरहु कंन मरिटिऐ ॥ दिलखोटिआकी फिरनिचंन[2] भार उधारन छटिऐ (आद गुरु ग्रंथ साहिब राग रामकली.वार सतावल बंड डूंम आखीमें) उत्तर-उक्त शब्द भ्रांतीसे अज्ञान प्रकट होता है उक्त शब्दकी उथानका (शब्द बनण कारण) से नवृत होजाता है ॥ उथान को ॥यथा॥ (क) सता बलवंड डूम गुरू अरजन देवजीसे नराज होगए ॥ तब डूंम की पुत्रीने समझाया पिरों (गुरूओं) से बिरोध नहीं चाहीये॥ गुरू जीकी बात तुमने

१ पागल २ बांधके

नहीं मानी तबकुष्ठीहुए ॥ जिसकी पुष्टी श्री भाई गुरदास जी भी करते हैं "पुत्री कौलन पालिया मनखोटिआ कीन सिआरा "(गुरदास वार १ पौड़ी ३४ तुक ४) (ख) अपनी पुत्रीका वचन भी न पालिया किजो वह असांकूं आखरही ॥ गुरु जी पासों माफी मंगलवो असी मोढा ही मरोड़नेरहे॥असी दिलखोटे वाले गुरांतों आकी फिरते रहे ॥ हंकारभारदी छट भरदे वंनके चुकदे रहे (देखो टीका भारा कृत विसणसिंह ज्ञानी) (ग) डूंम अपनी बात कहे है ॥ असी पुत्री के विवाह लिये गुरु जीका वचन न मंनिया ॥ गरीबी गुजराना कीता साथो गुरांनै कंन मुरटीअँ॥पासा करपीरहूं अंग पीड़ा करते भए॥खोटे वंनभार छटअँ हंकार रूपी छटदा ओचापन चुकियाजो देखो श्रीगुरू आदि ग्रन्थसाहिबजीके "मथाइ ":जो मथिमबार वजीर हिन्दप्रेस अमृतसरमें छपेकी पृष्ट ११२० पंक्ती ७से १०तक (घ) उक्त शब्द में पुत्री पाठ है उसका पुत्र अर्थ करना और समझना मुर्खता है क्योंकि पुत्र और पुत्रीका अकार और अर्थ भिन भिन होता है

(अंतिम प्रार्थना)

प्यारे मित्रो ! उक्त ३० प्रकार (दर असल में श्री गुरू नानक देवजीके रूप) उदासी साधूओंकी अकाली लोग निंदा करते हैं और उनके सथान छीनते हैं बोह महान पापकर नरकके भागी बनते हैं क्योंकि श्री गुरू ग्रन्थसाहिबजीमें साधू संतों की महिमा और सेवाका महान फल लिखा है॥निंदाका पाप यथा—

(१) साधका निंदक सोध साध विचरीया ॥ कहु रविदास पापी नर्क सिधरिया (आद ग्रन्थ साहिब)

(२) निंदक का घर अगनह माही जलत रहे मिटनै कबीनाही (आद ग्रन्थ साहिब)

"हस्ताक्षर"

गुरू विद्या रत्न पदवी प्राप्त पं० सुखलाल उपदेशक श्री भारत धर्म महामण्डल ॥ वर्तमान उपदेशक श्रीसनातन धर्म्म प्रति निधी सभा पंजाब लायलपुर रोपड़ जिला अम्बाला निवासी (पंजब)

पुस्तक रचियता और लेखकका परिचय

पंडित सुखलाल उपदेशक रोपड़ जिला अम्बाला (पंजाबी निवासी जो ३० वर्षसे श्री सनातन धर्म्म की सेवा उपदेश और शास्त्रार्थ द्वरा कररहे हैं जिसकी पुष्टी के परमाण पत्र (सारटी फिकेट) श्री सनातधर्म्मकी बड़ी बड़ी सभाओं से मंत्रीयों द्वारा अंत्रिरंग सभाओं में पास होकर मिले हैं ॥ यथा—

(क) (१) श्रीसनातन धर्म्मसभा रोपड़ मंत्री प० लक्षमणदास जोयसी सन १८९७ यक्कम सितंबर ॥

(२) श्री भारत धर्म्म महामंण्डल दिल्ली मंत्री पं० दीनदयाल शर्म्मा झजर सन १९०० ई १४ अगस्त ॥

(३) श्री भारतधर्ममहामंडल बनारस प्रधानाध्यक्ष महाराज शिवनारायण पुरी संम्वत १९६४ माघ शुक्ल ९

(४) श्री सनातन धर्मसभा (क्लब) अंमृतसर गोस्वामी पं० हरसुखराय जी सं १९५९ वि० चैत्र ११

(५) श्री सनातन धर्म्म सभा रावल पिंडी मंत्री भक्तराम उपल बी.ए. बकीलजी सन १९०५ ई० ७ मई

(६) श्री सनातन धर्म्म सभा हुशयारपुर मंत्री पं० गुरदास राम हकीम सं० १९६८ फगण २२

(७) श्री सनातन धर्म्म प्रतिनिधी सभा लाहौर मंत्री पं०अन्दविहारी पुष्करणाजी सन १९१० ई० १९२१ रिपोट प्रति निधी में

(८) श्री सनातन धर्म्म प्रतिनिधी सभा पिशावर सूबा सरहद मंत्री लाला ज्वालासहाय ककड़ रईस जी २०-७-१९२४ ई०

(९) श्री सनातनधर्म्म प्रति निधी सभा पंजाब लायलपुर प्रधान कर्म चारी (कलरक) लाला किरपाराम जी १६ जनवरी सन १९२६ ई० नोट-इत्यादि अनेक स्थानों

के मंत्रीयों की सेवा में उपदेशक पद पर और आज्ञानुसार पंजाब भरमें उपदेश और शास्त्रार्थसे सेवाकी है जिनके एक सहस्र के करीब प्रमाण पत्र उनके पास मौजूद हैं जिनमेंसे मुख्य ६ का उक्त नाम लिखा है विशेष नवीन सिंह शिक्षा में छपे हुए देखो ॥ (ख) तीन रजित पदक (चांदी के तगमें) १ श्री भारत धर्म्म महामण्डल बनारस २ श्री सनातन धर्म्म सभा रावल पिंडी ३ श्री सनातन धर्म्म सभा हुश्यारपुर से मिले हैं श्रेष्ठ और योग्य काम करने पर ॥ (ग) लगभग २०० शास्त्रार्थ ३० वर्ष में नवीन सिंह (अकाली) और समाजीयों से कीए हैं स्थान और उपदेश श्रोताओंकी संख्या बतानी कठन है (घ) तेईस पुस्तक नवीन सिंह (अकालीयों) के सुधार लिये लिखे है १३ छपचुके बाकी छपेंगे जो १३ पुस्तक छप चुके हैं उनका उत्तर नवीन सिंह आज तक नहीं दे सके ॥

"इति पुस्तक रचियता और लेखकका परिचय"

संतराम शर्म्मा पुत्र सुखलाल उपदेशक
मुकांम रोपड़ जि० अम्बाला ॥

नवीनसिंह (अकालीओं) से

❀ शास्त्रार्थ के नियम ❀

(१) नवीन सिंह और अकाली भाई धर्म्म ग्रन्थ किन २ ग्रन्थों को मानतें हैं विस्तार पूर्वक सर्वत्र का नाम पृथक् २ लिखना होगा और जिन ग्रंथों को परमाणीक मानो उन ग्रन्थोंको समग्र मानना होगा और उन ग्रन्थों के किसी परमाण और प्रसंग को अपरमाणीक नहीं कना होगा ॥

(२) नवीन सिंह और अकाली भाई जिन २ ग्रंथों को धर्म ग्रन्थ मानेगे उन ही ग्रन्थोंसे अपना मत और

व्यावहार (धार्मिक और व्यवहारिक चाल चलन) सिद्ध करना होगा अमृत संस्कारादि विधि और हुकम सहित

(३) नवीन सिंह और अकाली भाईयों के माने हुए धर्म्मग्रंथ जिन२ और मतके धर्म ग्रंथोंको परमाणीक मानलेंगे ॥ उन ग्रंथों को भी धर्म्म ग्रन्थ मानना होगा ॥

(४) नवीन सिंह और अकाली भाईयोंसे फिसाद का भय है सरकार तक देखो मामला गुरूका बाग और जैतो ॥ इस कारण शास्त्रार्थ में फिसाद की जमें वारी नवीन सिंह अकाली भाईयोंको लेखद्वारा देनी होगी ॥

(५) नवीन सिंह और अकाली भाईयोंसे शास्त्रार्थ में जो उनका धर्म ग्रन्थ परॅपर विरोध (हलफदरोगी) मे आजाएगा उसको झूठा ग्रन्थ लिख कर लेख देना होगा ॥ नोट—नवीन सिंह और अकाली भाई गुरू रक्षक सनातन हिन्दू धर्म के जिस विषय पर शास्त्रार्थ करना चाहें उक्त नियमानुसार करलें ॥ हम सनातन हिन्दू धर्म के हर एक सिद्धान्त गुरमत धर्मग्रन्थोंसे सिद्ध करनेके लिये हरवक्त तय्यार हैं और जिस सनातनधर्म्मीने नवीनसिंह (अकालीयों)से शास्त्रार्थ करना होतो उक्त ५ नियमानुसार करें तो कदापि नहीं हार सकेंगे

हस्ताक्षर सुखलाल उपदेशक

गुरू विद्या रत्न पदवी प्राप्त,

रोपड़ जि० अम्बाला निवासी ॥

—०—

❀ विज्ञापन ❀

❀ पुस्तक विक्रय लिये ❀

पं० मुक्तलाल उपदेशक रोगड़ निवासी की रचत पुस्तक, छपी हुई धर्म्म रक्षा लिए तय्यार हैं जो धर्म्म प्रेमी देखना चाहे मंगवा कर देखे जिससे नवीन सिंह प्रकाशीयोंका अज्ञान नष्ट होगा ॥

(१) दसों गुरु और ग्रन्थ साहिब का सच्चा उपदेश भाषा अर्थात नवीन सिंह शिक्षा उत्रार्ध जो उक्त उपदेशक के आयू की आखिरी पुस्तक है ॥ जीसमें ५२५ परमाण ग्रन्थ साहिबादि के हैं ।।।)

(२) तत्वखालसा खालसाकी पोल भाषा जिसमें "प्रीथम भगौती सिमर के गुरू नानक लई धियाय" नवीन सिंहों की भ्रान्ती निवारण भली प्रकार है ॥ ≈)

(३) सिक्खों की बाजमुल अर्ज भाषा जिसमें गुरू १० जीकी रैहत (मर्यादा) का हुक्म हिन्दू रीती से है -)

(४) जहीरुह तहेफ्फेसते अर्थात नवीन सिंह शिक्षा गुर-मुखीके सहस ॥ वचन सिंह बी ए वकील की रचित पुस्तक "जेहा मुंह तही चपड़े" का मुंह तोड़ उत्तर गुरमुखी देखने लायक है ।।≈)

(५) अनंद खंडन विवाह मंडन यथा नाम तथा गुण गुरमुखी जिसमें सिखोंका अनंद पापदायक सिद्ध किया है ।≈)

(६) अनंद निर्णय-जिसमें अनंदबाणी और लावांका परमाणीक अर्थ लिखा है गुरमुखी जिससे अनंद का अज्ञान दूर होगा ।)

(७) श्री गुरू घरमें दुर्गा पूजन नंबर २-जिसका नवीन सिंह उत्तर देनेकी प्रतिज्ञा करके भी उत्तर नहीं देसके गुरमुखी देखने लायक =)

(८) श्री गुरू दसम ग्रन्थ साहिब संपूर्ण उर्दू अक्षरों में जो बीस रुपयेमें भी मिलना कठिन है सिरफ लागत मात्र २)

(९) नवीन सिंह शिक्षा नागरी तिबारे छपेगी

(१०) श्रीगुरु घरमें दान विधी नागरी दुबारे छपेगी

(११) नवीनसिंह सिख्या गुरमुखी दुबारे छपेगी

(१२) खालसा कुरीति निवारण दुबारे छपेगी

(१३) श्री गुरू घरमें दुर्गा पूजन नंबर १- दुबारे छपेगी

नोट-उक्त नवीन सिंहों के अज्ञान नवारण लिये दस पुस्तक लिखे और तय्यार हैं छपने पर विज्ञापन दूंगा ॥

(पुस्तक मिलनेका पता)

संतराम, सुखलाल उपदेशक

मुकाम रोपड़ जिला अंबाला (पंजाब)
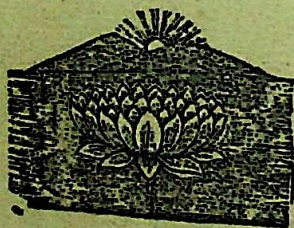
Printed by Pt. Ramchandr Sharma at the Sanatan Dharm Press Moradabad

Lokuren · 891 · 455.

O4CL. OM. Parkash.

پیارے کا کامیاب چلا ہے دن و رات میرے دیرانے میں —

دن کا درد میرا غم جلتا ہے —

اس کا بڑی محبت تم نہ ہو